विक्रम संवत् 2081 ▪ माघ/ फाल्गुन मास (12) ▪ 02 फरवरी 2025 ▪ मूल्य : 23 रु.

चरैवेति

मोदीजी ने डॉ. अंबेडकर की प्रतिष्ठा को ऊंचा किया

आर.एन.आई. पंजीयन क्र.017261/69, डाक पंजीयन क्र. म.प्र./भोपाल/297/2024-26, पृष्ठ संख्या-44, प्रकाशन दिनांक प्रत्येक माह की 10 तारीख, पोस्टिंग प्रत्येक माह की 15 एवं 20 तारीख

▪ प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी ने शहीद दिवस के अवसर पर महात्मा गांधी की समाधि पर पुष्पांजलि अर्पित की।

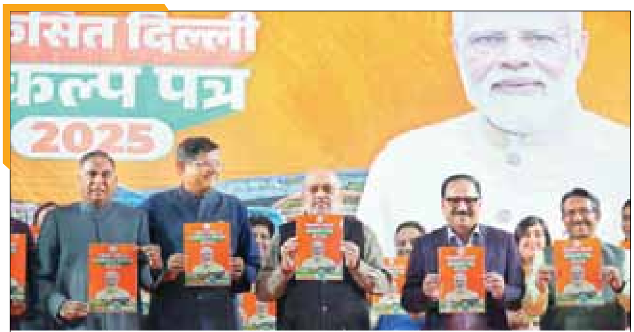

▪ केंद्रीय गृह एवं सहकारिता मंत्री श्री अमित शाह जी ने दिल्ली विधानसभा चुनाव के लिए भाजपा का संकल्प पत्र भाग-III जारी किया।

▪ प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी लोहड़ी समारोह में शामिल हुए।

▪ प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी ने नेताजी सुभाष चंद्र बोस की जयंती के अवसर पर उन्हें पुष्पांजलि अर्पित की।

▪ प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी ने जम्मू और कश्मीर में सोनमर्ग में सोनमर्ग सुरंग का दौरा किया।

▪ प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी ने 76वें गणतंत्र दिवस के अवसर पर राष्ट्रीय युद्ध स्मारक पर शहीदों को श्रद्धांजलि अर्पित की।

▪ भाजपा अध्यक्ष श्री जे.पी. नड्डा जी ने सिंगापुर गणराज्य के राष्ट्रपति जी से मुलाकात की।

▪ प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी ने साहिबाबाद आरआरटीएस स्टेशन से न्यू अशोक नगर आरआरटीएस स्टेशन तक नमो भारत ट्रेन की सवारी की।

अनुक्रमणिका

» **संपादकीय - संजय गोविन्द खोचे** 04

▪ संविधान सर्वोपरि

» **कवर स्टोरी** 05

▪ मोदीजी ने डॉ. अंबेडकर की प्रतिष्ठा को ऊंचा किया - जे. पी. नड्डा

05

23

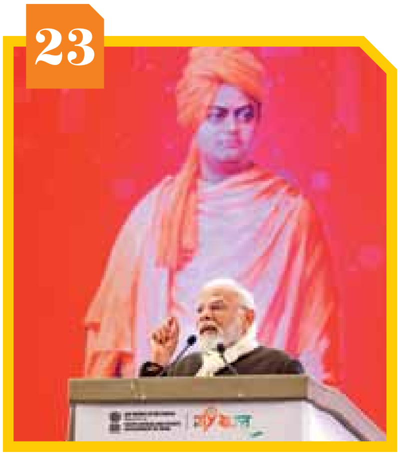

▪ **संविधान गौरव अभियान** 08
» हमारी संस्कृति समरसता की मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव

▪ **इन्वेस्ट इन मध्यप्रदेश** 09
» मोदी जी के नेतृत्व में भारत वैश्विक आर्थिक शक्ति के रूप...

▪ **पराक्रम दिवस** 11
» एक लक्ष्य, एक ध्येय, विकसित भारत- नरेन्द्र मोदी

▪ **इंटरैक्टिव सेशन-पुणे** 12
» मध्यप्रदेश संभावनाओं का प्रदेश मुख्यमंत्री डॉ. यादव

▪ **स्वामित्व योजना** 13
» स्वामित्व योजना से गांवों में संपत्ति का स्वामित्व सुनिश्चित-नरेन्द्र मोदी
» सम्पत्ति कार्ड से आर्थिक और सामाजिक सशक्तिकरण - मुख्यमंत्री

▪ **संस्कृति** 16
» भारत जीवंत धरती और संस्कृति है- नरेन्द्र मोदी

▪ **रीजनल इंडस्ट्री कॉन्क्लेव** 18
» भारत को फिर बनाएंगे सोने की चिड़िया : मुख्यमंत्री

▪ **कविता : अटल बिहारी वाजपेयी** 20
» बबली की दिवाली

▪ **महेश्वर बैठक** 21
» देवी अहिल्या नारी सशक्तिकरण मिशन स्वीकृत
» भारतीय जनता पार्टी के प्रदेश अध्यक्ष व सांसद श्री विष्णुदत्त शर्मा...

▪ **यंग लीडर्स डायलॉग** 23
» भारत की युवा शक्ति के सामर्थ्य से होगा 'विकसित भारत'...

▪ **युवा शक्ति मिशन** 26
» युवाओं को स्वावलंबी और आत्मनिर्भर बनाना है - डॉ. मोहन यादव

▪ **आलेख** 27
» स्वामी विवेकानंद युवा शक्ति मिशन: संवाद, सामर्थ्य और...

▪ **आलेख** 29
» भारत के उत्थान की प्रेरणा है राष्ट्र मंदिर

▪ **मन की बात** 31
» हमें ऐसा भारत बनाना है, जिस पर हमारे संविधान निर्माताओं...

▪ **पुण्यतिथि** 35
» ऋग्वेद से निकला है हिन्दू शब्द

▪ **आलेख** 36
» इतिहास में अमर है 1600 वीरांगनाओं का जौहर

▪ **जयंती** 38
» सप्तसिन्धु से हिन्दू पूज्य मा. स. गोलवलकर

▪ **पुण्यतिथि** 39
» वासुदेव बलवंत फड़के जिनके नाम से अंग्रेज काँपते थे

▪ **विचार प्रवाह** 40
» राष्ट्र जीवन की समस्याएँ

• मुख्य व्रत-त्यौहार

1. तिल कुंद चतुर्थी 2. विनायकी चतुर्थी व्रत 3. बसंत पंचमी, माँ सरस्वती प्राकट्. 4. शीतलाषष्ठी,अचला/ रथ सप्तमी 5. भीष्माष्टमी 6. महानंदा नवमी, गुप्त नवरात्र समाप्त 7. रोहिणी व्रत 8. जया/ अजा, भीष्म एकादशी 9. तिल द्वादशी, भीष्म द्वादशी 10. प्रदोष व्रत 12. स्ना. दा. व्रत, माघी पूर्णिमा 13. षोडषकारण व्रत पूर्ण 16. गणेश चतुर्थी व्रत 20. सीताष्टमी 24. विजया एकादशी व्रत 25. प्रदोष व्रत 26. महाशिवरात्रि व्रत 28. स्ना. दा. अमावस

• मुख्य जयंती-दिवस

3. माँ परमेश्वरी जयंती, कवि सूर्यकांत निराला जयंती 4. भ. देवनारायण, महर्षि नवल जयंती, विश्व कैंसर दिवस 11. पं. दीनदयाल उपाध्याय पुण्यतिथि, शहीद तिलका मांझी जयंती 12. राजिम मेला 14. कवि निराला जयंती 15. कवि. सुभद्राकुमारी चौहान पु. ति. 16. म. नवल, संत महादेव जयंती 19. गुरू गोलवलकर जयंती, संत भाकरे महाराज जयंती 22. गुरू हरराय, प्रभु नित्यानंद जयंती 23. वीर तेजाजी जयंती 26. लोधेश्वर दिवस, वीर सावरकर पुण्यतिथि

वर्ष-56, अंक : 12, भोपाल, फरवरी 2025

हमारे प्रेरणास्रोत

पं. दीनदयाल उपाध्याय

ध्येय बोध

हमने धर्म के आधार पर लोक पालन और राज्य की व्यवस्था का विधान किया। केवल सत्ता भोग के लिए राज स्थापना अपने जीवन का लक्ष्य नहीं। धर्म के लिए राज्य की आवश्यकता हुई इसलिए धर्म से प्रेरणा जरूरी है। राजा धर्म रक्षण के लिए उत्तरदायी है।

- पं. दीनदयाल उपाध्याय

•

सचिव, मुद्रक, प्रकाशक एवं सम्पादक

संजय गोविंद खोचे*

•

सहायक सम्पादक

पं. सलिल मालवीय

•

व्यवस्थापक

योगेन्द्रनाथ बरतरिया

मोबा. नं. 09425303801

•

पं. दीनदयाल विचार प्रकाशन म.प्र. के लिये मुद्रक एवं प्रकाशक संजय गोविंद खोचे द्वारा पं. दीनदयाल परिसर, ई-2, अरेरा कालोनी, भोपाल-462016 से प्रकाशित

एवं एम. पी. प्रिंटर्स, बी-220, फेस-II, गौतमबुद्ध नगर, नोएडा - 201 305 से मुद्रित.

•

संपादकीय पता
पं. दीनदयाल परिसर,
ई-2, अरेरा कालोनी, भोपाल- 462016
e-mail:charevetibpl@gmail.com
web site:www.charaiveti.org

मूल्य- तेईस रुपये

*समाचार चयन के लिए पी.आर.बी.एक्ट के तहत जिम्मेदार

संविधान सर्वोपरि

बीजेपी संगठन ने प्रदेश भर में चल रहे संगठनात्मक चुनाव में सभी जिलों के संगठन चुनाव को पूर्ण कर लिया है। पराक्रम की पराकाष्ठा करने वाले प्रदेश अध्यक्ष जी के नेतृत्व में समन्वय का आदर्श प्रस्तुत किया है। आज संगठन, नेतृत्व के द्वारा दिए गए कार्यक्रमों को जन-जन तक पहुंचाने में कामयाब रहा है।

डॉ. अंबेडकर जी का संविधान 26 जनवरी 1950 से लागू हुआ। 75 वर्षों की इस यात्रा में अभी तक 60 वर्षों तक कांग्रेस ने देश पर राज किया। संविधान निर्माताओं ने कभी सोचा भी ना होगा, कि इस देश में सरकार चलाने वाले, जिनका दायित्व संविधान की रक्षा करना होता है, वह इस देश में दो निशान, दो प्रधान व दो विधान लागू करके संविधान की आत्मा को ही मारकर रख देंगे। भारत की संसद द्वारा पारित 126 कानून जम्मू- कश्मीर की धरती को छू भी नहीं पाएंगे, चाहे महिला अपराधों की रोकथाम के कानून हों, चाहे पास्को एक्ट हो, वाल्मीकि समाज के लोग जम्मू- कश्मीर में सफाई कर्मचारी तो बन सकते थे, पर बाकी अधिकारों से वंचित रखे गए थे। इंदिरा गांधी ने 50 बार चुनी हुई राज्य सरकारों को हटाकर राष्ट्रपति शासन लगाया था। डॉ. मनमोहन सिंह भी राष्ट्रपति शासन लगाने में कैसे पीछे रह जाते, 8-9 बार उन्होंने भी चुनी हुई राज्य सरकारों को भंग करने में देर नहीं की। राजीव गांधी को भी राष्ट्रपति शासन लगाने से कोई परहेज नहीं था। पर भाजपा सरकार के कार्यकाल में केवल एक बार ही राष्ट्रपति शासन लगाया गया। वह भी जम्मू- कश्मीर में। राष्ट्रपति शासन पुनः शीघ्र चुनाव करवाने के वादे के साथ किया गया था, जिसे पूरा कर लिया गया। नेहरू जब धारा 370 को जम्मू - कश्मीर में लागू करने जा रहे थे, तो तत्कालीन कानून मंत्री डॉ. बी. आर. अंबेडकर जी ने इसका विरोध किया था और कहा था मेरे कानून मंत्री रहते यह लागू नहीं हो सकता। डॉक्टर अंबेडकर ने धारा 370 को देश के साथ धोखा माना था। नेहरू ने फिर भी 370 को आगे बढ़ाया व 35 ए इसमें और जोड़ दिया। डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी जी का 370 को लेकर तीव्र विरोध था, जिसके परिणाम स्वरुप उनकी गिरफ्तारी व संदेहास्पद स्थिति में उनकी मृत्यु की जांच की मांग भी नेहरू ने स्वीकार नहीं करी थी। संविधान के प्रति यह रवैया देश ने देखा है, यह संविधान के साथ खेल था। पर सुबह होती है, तो रात्रि का घोर अंधेरा अपने आप हटने लगता है, संविधान का सम्मान भाजपा के लिए केवल एक मुद्दा नहीं है, भाजपा की कथनी व करनी में संविधान के लिए सम्मान न केवल दिखाई देता है बल्कि अनुभव भी होता है। भाजपा ने कांग्रेस के पापों से देश को मुक्त करवाने का संकल्प ले रखा है। आज संविधान निर्माताओं की भावनाओं के अनुरूप जम्मू कश्मीर से धारा 370 हट गई है, 35 ए से मुक्ति हो गयी है। देश का संविधान पूरे देश में एक समान एक साथ लागू है। कश्मीर की कोई बहन बेटी अगर देश के किसी भी हिस्से में शादी करती है, तो भी उसके प्रॉपर्टी राइट सुरक्षित रहते हैं, विधानसभा में आरक्षण अन्य विधानसभाओं के समान लागू है, गर्व की बात है कि भारत को ऐसा प्रधानमंत्री मिला है जिसके नेतृत्व में 70 साल की जमी धूल को हटाकर जम्मू कश्मीर के मुख्यमंत्री ने आजादी के बाद संविधान लागू होने के 75 वर्षों के बाद संविधान की शपथ ली है।

आपातकाल देश के लिए नहीं, देश में कोई आपात स्थिति नहीं आई थी, हाई कोर्ट का आदेश इंदिरा गांधी के चुनाव को अवैध घोषित कर रहा था। 6 साल इंदिरा गांधी को चुनाव लड़ने से रोक रहा था। इंदिरा गांधी को संविधान के अनुसार पद से इस्तीफा देना था। आपात स्थिति इंदिरा गांधी के लिए निर्मित हुई थी। पर इंदिरा गांधी ने अपने ऊपर आई आपदा को 135000 से अधिक लोगों को जेल में ठूंस कर देश में आपातकाल थोप कर संविधान की हत्या कर अपने शासन को बचाया। वास्तव में कांग्रेस ने अपने शासन को बचाए रखने के एजेंडा को लागू रखा। संविधान केवल देखने दिखाने की वस्तु बन गया था। 2014 से भाजपा सरकार आने के बाद देश के हालात में परिवर्तन शुरू हुए। संविधान निर्माताओं को सम्मान मिला। संविधान निर्माताओं की भावनाओं को सम्मान मिला। पूरा देश एक सूत्र में पिरोया गया। सरदार पटेल के देश के एकीकरण को आकार दिया गया। देश की स्वतंत्रता को मूर्त रूप दिया गया। गुलामी की बेड़ियों, प्रतीक चिन्हों से देश को मुक्ति मिलना प्रारंभ हुई, देश में स्वाभिमान, आत्म सम्मान का भाव आया, विश्व में भारतीय होने के गर्व का अनुभव हुआ। पहली बार देश ने फिर वापस स्वर्ण युग की तरफ लौटना शुरू किया। 1.5 ट्रिलियन डॉलर की अर्थव्यवस्था से 10 वर्षों में भारत 4 ट्रिलियन डॉलर की अर्थव्यवस्था बना। 5 ट्रिलियन डॉलर की अर्थव्यवस्था के संकल्प के साथ देश दौड़ने लगा। आजादी के 100 वर्षों का उत्सव विकसित राष्ट्र के रूप में मनाने का संकल्प लिया गया। भारत में आत्मनिर्भरता हासिल करना प्रारंभ कर दिया है। विश्व में भारत ने अपना खोया सम्मान पुनः हासिल करना शुरू कर दिया है। यही है संविधान की मूल भावना।

मध्य प्रदेश में ऊर्जावान मुख्यमंत्री के नेतृत्व में मध्य प्रदेश में संविधान को सर्वोपरि व संविधान निर्माताओं की भावना के अनुरूप, प्रधानमंत्री जी की सरकार की भावना के अनुरूप- सबका साथ, सबका विकास, सबका विश्वास, सबका प्रयास लक्ष्य को हासिल करने के लिए बिना विश्राम के लगातार प्रयास जारी हैं। एक तरफ केन बेतवा लिंक परियोजना से किसानों को खेती के लिए पानी, सूखे बुंदेलखंड में हरियाली, पीने का पानी, औद्योगिक विकास के लिए पानी, उपलब्ध करवा कर जनता के लिए, जनता की सरकार का निर्णय हुआ है, सूखा बुंदेलखंड अब हरा भरा बुंदेलखंड होगा।

प्रदेश को सभी दिशाओं में प्रगति के रास्ते पर ले जाने के लिए लगातार सार्थक प्रयास हो रहे हैं। इंफ्रास्ट्रक्चर में अभूतपूर्व निवेश, प्रदेश के युवाओं के रोजगार की व्यवस्था, प्रदेश के आर्थिक विकास व पांच ट्रिलियन डॉलर की अर्थव्यवस्था में मध्य प्रदेश की जोरदार उपस्थिति दर्ज करवाने के लिए, पूरे प्रदेश का समुचित विकास करने के लिए, निवेशकों को मध्य प्रदेश में आमंत्रित करने का सघन प्रयास चल रहा है। निवेश को आकर्षित करने के लिए प्रशासकीय बाधाओं को हटाया गया है। उम्मीद है, विश्व के लिए सामान मध्य प्रदेश से बनकर जाएगा। मध्य प्रदेश रोजगार देने वाला प्रदेश बनेगा।

बीजेपी संगठन ने प्रदेश भर में चल रहे संगठनात्मक चुनाव में सभी जिलों के संगठन चुनाव को पूर्ण कर लिया है। पराक्रम की पराकाष्ठा करने वाले प्रदेश अध्यक्ष जी के नेतृत्व में समन्वय का आदर्श प्रस्तुत किया है। आज संगठन, नेतृत्व के द्वारा दिए गए कार्यक्रमों को जन-जन तक पहुंचाने में कामयाब रहा है। सत्ता व संगठन की यही सक्रियता प्रदेश के स्वर्णिम भविष्य का आधार बनेंगे। ▪

(संजय गोविन्द खोचे)
सम्पादक

मोदीजी ने डॉ. अंबेडकर की प्रतिष्ठा को ऊंचा किया - जे. पी. नड्डा

जब फारुख अब्दुल्लाह के पिता शेख अब्दुल्लाह, जवाहरलाल नेहरू के साथ मिलकर धारा 370 रच रहे थे तब तत्कालीन कानून मंत्री डॉ. भीमराव अंबेडकर ने कहा था कि यह लोग चाहते हैं कि भारत माता इन्हें भोजन दे, इनके लिए सड़कें बनाएं और यह भारत सरकार के समकक्ष खड़े हो जाएं, इसे मैं देश द्रोह मानता हूं।

उन्होंने कहा कि यह देश के साथ धोखा होगा और मेरे कानून मंत्री रहते हुए धारा 370 लागू नहीं होगी।

- संविधान गौरव अभियान की शुरुआत के वक्त हमें अपने इतिहास पर गर्व करना चाहिए और उन लोगों के प्रति सतर्क रहना चाहिए जिनके 'खाने के दांत और, दिखाने के और' हैं। ये लोग संविधान की किताब तो हाथ में रखते हैं, लेकिन कभी उसे पढ़ते नहीं।
- आज कांग्रेस नेता 'फाइट अगेंस्ट द इंडियन स्टेट' की बात करते हैं। यही कांग्रेस की सोच है। ये देश के खिलाफ लड़ाई की बात करते हैं, ये देश के खिलाफ साजिश रचने वालों के समर्थन में खड़े होते हैं।
- राहुल गाँधी को न भारत के इतिहास की जानकारी है, न ही उनमें देश की सांस्कृतिक समझ है। इनके स्पीच राइटर कुछ भी लिख देते हैं और ये कहीं का कहीं पढ़ देते हैं।
- वोट बैंक, तुष्टिकरण, परिवारवाद और सत्ता स्वार्थ में कांग्रेस ने न केवल संविधान और लोकतंत्र का गला घोंटा बल्कि लोकतांत्रिक और संवैधानिक संस्थाओं को भी बार-बार अपमानित किया तथा देश को बदनाम किया।
- कांग्रेसी ससंद की मर्यादा की चिंता का ढोंग करते हैं लेकिन इनकी पार्टी ने संसद को बिना बताए धारा 370 के साथ 35A को जोड़ दिया था। ये आदरणीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी हैं जिन्होंने धारा 370 और 35A को खत्म कर जम्मू-कश्मीर में विकास की नई शुरुआत की।
- अपनी सत्ता बचाने के लिए कांग्रेस ने देश पर आपातकाल थोपा। लोकतंत्र, संविधान और मीडिया का गला घोंटा। संविधान में बार-बार संशोधन कर संविधान को कमजोर किया। कांग्रेस की सरकार ने अदालत के आदेश के बावजूद तुष्टिकरण की राजनीति के कारण तीन तलाक को खत्म नहीं किया।
- इंदिरा गांधी ने 50 राज्यों में राष्ट्रपति शासन लागू कर संघीय ढाँचे को तहस-नहस किया। मनमोहन सिंह जी और राजीव गांधी जी के कार्यकाल में भी कई बार राष्ट्रपति शासन लगाया गया।
- कांग्रेस ने बाबा साहब का हर कदम पर अपमान किया, अपनी सरकार में उन्हें भारत रत्न भी नहीं दिया। हमारे

प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी ने बाबा साहब के सम्मान में 14 अप्रैल को राष्ट्रीय समरसता दिवस घोषित किया। संविधान दिवस मनाने की परंपरा शुरू की।

- **हमारी सरकार ने बाबा साहब से जुड़े पंचतीर्थों का विकास किया। संविधान की भावना के अनुरूप एससी, एसटी, ओबीसी, महिलाओं और गरीबों को सशक्त किया।**

गुजरात वह पवित्र भूमि है जिसने भारत के सांस्कृतिक, राजनैतिक, धार्मिक और आध्यात्मिक आंदोलन में अपना योगदान दिया है। स्वामी दयानंद सरस्वती, सोमनाथ बनाने वाले 'किंग ऑफ सौराष्ट्र', भारत की आजादी में प्रमुख भूमिका में रहे महात्मा गांधी और लौह पुरुष सरदार वल्लभ भाई पटेल और आज दुनिया के सबसे लोकप्रिय नेता आदरणीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जैसे नेतृत्व देकर गुजरात ने भारत के 'स्व' को जगाए रखने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। 26 नवंबर 1949 को संविधान सभा ने भारत के संविधान को स्वीकृति दिया और संविधान 26 जनवरी 1950 से लागू हुआ। लोकतंत्र के इन 75 वर्षों के इतिहास में कई उतार और चढ़ाव आए।

75 वर्षों में से 65 वर्ष कांग्रेस ने इस देश पर राज किया और संविधान के रखवालों के रूप में खड़े हुए। जब 1949 में संविधान को स्वीकृति दी जा रही थी तब संविधान रचयिता डॉ. भीम राव अंबेडकर जी ने कहा था कि संविधान कितना भी बेहतर हो, लेकिन यदि उसको लागू करने वाले लोग बुरे हैं तो संविधान नाकामयाब हो जाएगा। उन्होंने कहा कि संविधान कितना भी बुरा हो लेकिन यदि उसे लागू करने वाले अच्छे लोग हों तो वो कामयाब हो जाएगा। देश की आजादी के बाद लौह पुरुष सरदार वल्लभ भाई पटेल ने 2 वर्षों के भीतर 562 रियासतों को भारतीय संघ के अंतर्गत लाकर खड़ा कर दिया था, लेकिन जम्मू कश्मीर को लेकर जवाहर लाल नेहरू ने कहा था कि उसे उन पर छोड़ दिया जाए।

जम्मू और कश्मीर में ऐसी परिस्थितियां बनी कि वहां धारा 370 को लागू कर दिया गया। जब फारुख अब्दुल्लाह के पिता शेख अब्दुल्लाह, जवाहरलाल नेहरू के साथ मिलकर धारा 370 रच रहे थे तब तत्कालीन कानून मंत्री डॉ. भीमराव अंबेडकर ने कहा था कि यह लोग चाहते हैं कि भारत माता इन्हें भोजन दे, इनके लिए सड़कें बनाएं और यह भारत सरकार के समकक्ष खड़े हो जाएं, इसे मैं देश द्रोह मानता हूं। उन्होंने कहा कि यह देश के साथ धोखा होगा और मेरे कानून मंत्री रहते हुए धारा 370 लागू नहीं होगी। जवाहर लाल नेहरू ने उस कार्य को आगे बढ़ाया और धारा 370 के साथ 35-ए को भी जोड़ दिया जो यह कहती थी कि जम्मू-कश्मीर का नागरिक तो भारत का नागरिक होगा लेकिन भारत का नागरिक जम्मू और कश्मीर का नागरिक नहीं होगा। अलग प्रधान, अलग निशान और अलग संविधान यह आर्टिकल 35-ए की ही देन था।

कांग्रेसी ससंद की मर्यादा की चिंता का ढोंग करते हैं लेकिन इनकी पार्टी ने संसद को बिना बताए राष्ट्रपति से हस्ताक्षर करा के धारा 370 के साथ 35-ए को जोड़ दिया था। जन संघ के संस्थापक डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी जी ने कहा था कि एक देश में दो निशान, दो प्रधान और दो विधान नहीं चलेंगे। इसके लिए उन्हें गिरफ्तार किया गया और श्रीनगर जेल में संदेहास्पद स्थिति में उनकी मृत्यु हुई। उन्होंने इस देश की एकता के लिए अपना बलिदान दिया। श्यामा प्रसाद मुखर्जी की माता जी ने जब उनकी मृत्यु को लेकर जांच की मांग की तो जवाहर लाल नेहरू ने वो जांच नहीं होने दी। जम्मू और कश्मीर को धारा 370 से यह मिला कि 2019 से पूर्व राज्य में एसटी सीट नहीं थी, गुज्जर, बकरवाल और आदिवासी भाइयों के लिए लोकसभा और विधानसभा में कोई सीट नहीं थी।

भारत की संसद ने जिन 126 कानूनों को पास किया था, वो जम्मू और कश्मीर की धरती पर लागू नहीं होते थे। महिलाओं के साथ होने वाले अपराधों के खिलाफ जो कानून थे वो जम्मू और कश्मीर में लागू नहीं थे। पॉस्को एक्ट जम्मू और कश्मीर में नहीं लागू था। जम्मू की बेटी अगर किसी अन्य राज्य के व्यक्ति से शादी कर ले तो वो प्रॉपर्टी के राइट्स से वंचित हो जाती थी। वाल्मीकि समाज के वो लोग जो पंजाब से जम्मू और कश्मीर गए उनके बच्चे केवल सफाई कर्मचारी की नौकरी कर सकते थे। जब देश की जनता ने आदरणीय श्री नरेन्द्र मोदी जी को वोट देकर प्रधानमंत्री बनाया तो 6 अगस्त 2019 को मोदी जी की इच्छाशक्ति ने धारा 370 को जड़ से समाप्त कर दिया। आज वाल्मीकि समाज के लोग जम्मू और कश्मीर के नागरिक हैं। आडवाणी जी उप-प्रधानमंत्री रहे, आई. के. गुजराल प्रधानमंत्री बने, डॉक्टर मनमोहन सिंह 10 वर्ष प्रधानमंत्री रहे और यह सब वेस्ट पाकिस्तान से आए थे लेकिन जो लोग वेस्ट पाकिस्तान से आकर जम्मू और कश्मीर बस गए वो वहां प्रधान तक नहीं बन पाए, जम्मू कश्मीर की विधानसभा में विधायक तक नहीं बन सके।

12 जून 1975 को इलाहाबाद हाईकोर्ट ने इंदिरा गांधी के खिलाफ फैसला सुनाया और उनके चुनाव को निरस्त कर दिया। कोर्ट ने कहा कि वह अगले छह साल तक चुनाव नहीं लड़ सकतीं, क्योंकि उन्होंने आचार संहिता का उल्लंघन किया था। उस समय देश को कोई खतरा नहीं था और न ही किसी व्यक्ति पर कोई संकट था, लेकिन इंदिरा गांधी की कुर्सी जरूर खतरे में थी। अपनी सत्ता बचाने के लिए आंतरिक अशांति का माहौल बताकर 25 जून 1975 को देश में आपातकाल लगा दिया था। आपातकाल में मौलिक अधिकारों को निलंबित

कर दिया गया, अटल बिहारी वाजपेयी, लाल कृष्ण आडवाणी, मोरारजी देसाई जैसे देश के वरिष्ठ नेताओं को जेल में डाल दिया गया। आपातकाल के दौरान एमआईएसए (आंतरिक सुरक्षा कानून) और डीआईआर (भारत रक्षा नियम) के तहत 1,35,000 से अधिक लोगों को गिरफ्तार करके जेल में डाल दिया गया। यह गर्व की बात है कि सबसे ज्यादा लोग, जो आपातकाल के खिलाफ लड़ाई में जेल गए वो भाजपा की विचारधारा से जुड़े थे। उन्होंने पूरी ताकत के साथ स्वतंत्रता और आपातकाल के विरोध में संघर्ष किया। इंडियन एक्सप्रेस और द स्टेट्समैन जैसे प्रमुख अखबारों के संपादकीय को सेंसर कर दिया गया और पूरे देश में सेंसरशिप लागू कर दी गई। हजारों परिवार उजाड़ दिए गए, कई परिवारों के मुखिया को जेल भेज दिए गया, लोगों ने दो साल तक जेल में यातना सही।

कई परिवारों में पति-पत्नी दोनों को कैद कर लिया गया, जिससे उनके बच्चे अकेले रह गए। इंदिरा गांधी ने केवल अपनी कुर्सी बचाने के लिए ऐसी निर्दयता की। इंदिरा गांधी ने एक ऐसा कानून लागू किया, जिसके तहत पहली बार भारत के राष्ट्रपति, उपराष्ट्रपति और लोकसभा अध्यक्ष को न्यायिक समीक्षा से छूट दे दी गई। इसका मतलब था कि उनके खिलाफ कोई कानूनी कार्रवाई नहीं हो सकती। अपनी सत्ता बचाने के लिए इन कानूनों को पहले से लागू मानकर यानी पिछली तारीख से अमल में लाया गया।

इंदिरा गांधी ने 39वें और 42वें संविधान संशोधन अधिनियम पेश किए। 42वें संशोधन में सारी शक्तियां कार्यपालिका के हाथ में केंद्रित कर दी गईं और न्यायपालिका की भूमिका कम कर दी गई। इसका मतलब यह था कि संसद द्वारा बनाए गए कानून न्यायिक समीक्षा से बाहर हो जाएंगे, जो मूल संविधान को बदलने जैसा था, एक प्रकार से एक लघु संविधान था। इंदिरा गांधी में घमंड और अड़ियल रवैया आ गया था, उन्होंने यह तक कह दिया था कि कोई भी संवैधानिक मामला उनके सामने नहीं लाया जा सकता और न्यायिक समीक्षा की अनुमति नहीं दी जाएगी। उन्होंने ''धर्मनिरपेक्ष'' और ''समाजवाद'' शब्द को संविधान में केवल वोट हासिल करने के लिए जोड़ा। इस मुद्दे पर डॉ. भीमराव अंबेडकर ने स्पष्ट रूप से कहा था कि भारत जैसे देश में ''धर्मनिरपेक्ष'' शब्द की कोई आवश्यकता नहीं है, क्योंकि हम हमेशा से सभी धर्मों को समान मानते आए हैं। डॉ. अंबेडकर ने कहा था कि ''धर्मनिरपेक्ष'' शब्द उन देशों द्वारा अपनाया जाना चाहिए, जिन्होंने अपने संविधान को एक इस्लामिक राज्य के रूप में प्रस्तुत किया। भारत तो हमेशा ''सर्वधर्म समभाव'' के सिद्धांत पर चलने वाला देश रहा है। इसी कारण संविधान सभा की बहसों के दौरान डॉ. अंबेडकर ने ''धर्मनिरपेक्ष'' शब्द को संविधान में शामिल न करने की वकालत की थी। डॉ. भीमराव अंबेडकर ने समाजवाद के बारे में कहा था कि भारत में सरकार के स्वरूप का निर्णय सरकार द्वारा नहीं, बल्कि जनता द्वारा किया जाना चाहिए।

जनता को अपनी इच्छा के अनुसार सरकार चुनने का अधिकार होना चाहिए, और ''समाजवाद'' जैसे शब्द को संविधान में शामिल नहीं किया जा सकता लेकिन इंदिरा गांधी ने जनता को लुभाने और झूठे नारों से गुमराह करने के प्रयास में ''धर्मनिरपेक्ष'' और ''समाजवाद'' दोनों शब्द संविधान में जोड़ दिए। आपातकाल के दौरान ''आंतरिक अशांति'' को ऐसी स्थिति के रूप में परिभाषित किया गया था जिसमें राष्ट्र के खिलाफ संगठित प्रयास हों, जिससे देश की स्थिरता को खतरा हो, और यह आपातकाल लागू करने का कारण बन सकता है। आज कांग्रेसी नेता कह रहे हैं कि, ''उनकी भारतीय राज्य के खिलाफ लड़ाई है।'' राहुल गांधी को न तो इतिहास का ज्ञान है और न ही किसी मुद्दे की गहरी समझ है।

माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के नेतृत्व में अनुच्छेद 370 और 35-ए हटाए गए, जीएसटी लागू किया गया, और ''एक राष्ट्र, एक कर'' की अवधारणा स्थापित हुई। अब हम समान नागरिक संहिता को लागू करने की ओर बढ़ रहे हैं, जिसमें राज्यों द्वारा इसे लागू करने के प्रयास किए जा रहे हैं। मोदी सरकार के नेतृत्व में कई ऐतिहासिक कदम उठाए गए, जैसे ओबीसी समुदाय को संवैधानिक दर्जा देना और आर्थिक रूप से कमजोर वर्गों (EWS) के लिए 10 प्रतिशत आरक्षण प्रदान करना। मेडिकल परीक्षाओं में ओबीसी को 27 प्रतिशत और EWS को 10 प्रतिशत आरक्षण दिया गया।

प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी ने जम्मू-कश्मीर में वाल्मीकि समुदाय को आरक्षण का लाभ भी सुनिश्चित किया। पहली बार जम्मू-कश्मीर में लोगों ने जम्मू-कश्मीर संविधान की जगह भारतीय संविधान की शपथ ली। इसके अलावा, एससी और एसटी समुदाय के सदस्य विधान सभा तक पहुंचे। वहीं, तीन दशक से लंबित महिला आरक्षण विधेयक प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के नेतृत्व में पारित हुआ, जिससे लोकसभा और विधान सभा में महिलाओं को 33 प्रतिशत आरक्षण मिला।

शाह बानो मामले में, जब सुप्रीम कोर्ट ने शाह बानो को भरण-पोषण देने का आदेश दिया तो राजीव गांधी ने मुस्लिम नेताओं और मौलवियों के दबाव में कानून बदलकर शाह बानो को उनके हक के भरण-पोषण से वंचित कर दिया। माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी ने तीन तलाक के कानून को खत्म कर दिया और करोड़ों मुस्लिम महिलाओं को स्वतंत्र और सम्मानपूर्वक जीवन जीने का अधिकार दिया। यह भारतीय संविधान का एक सकारात्मक और ऐतिहासिक परिणाम है। अब तक देश में 100 से अधिक बार राज्यों में राष्ट्रपति शासन लगाया गया है। इंदिरा गांधी ने इसे 50 बार लागू किया, पूर्व प्रधानमंत्री डॉ. मनमोहन सिंह ने इसे 8-9 बार लागू किया और राजीव गांधी ने भी कई बार राष्ट्रपति शासन लगाया। लेकिन माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी की सरकार बनने के बाद, जम्मू-कश्मीर को छोड़कर किसी भी राज्य में राष्ट्रपति शासन लागू नहीं किया गया। जम्मू-कश्मीर में भी राष्ट्रपति शासन चुनाव कराने के वादे के साथ लागू किया गया था, और बाद में वहां चुनाव कराए भी गए।

विपक्ष डॉ. भीमराव अंबेडकर की केवल प्रशंसा करता है, लेकिन आदरणीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी की सरकार ने 14 अप्रैल को राष्ट्रीय समरसता दिवस घोषित किया। उनके जन्मस्थल मऊ में स्मारक बनाया गया, लंदन में शिक्षाभूमि स्थापित की गई, नागपुर में दीक्षाभूमि बनाई गई, दिल्ली में महापरिनिर्वाण भूमि और मुंबई में चैत्यभूमि का निर्माण किया गया। इन स्मारकों के जरिए प्रधानमंत्री जी ने डॉ. भीमराव अंबेडकर की प्रतिष्ठा को समाज में ऊंचा किया। कांग्रेस ने तो बाबा साहेब को भारत रत्न देने से तक इंकार कर दिया था, लेकिन भाजपा समर्थित सरकार ने डॉ. भीमराव अंबेडकर को भारत रत्न से सम्मानित किया। कांग्रेस ने हर संभव कोशिश की कि बाबा साहेब चुनाव न जीत सकें । उन्हें मुंबई से चुनाव नहीं लड़ने दिया गया, लेकिन वे कोलकाता से संविधान सभा के लिए चुने गए।

26 जनवरी 2025 को भारत ने अपना 76वां गणतंत्र दिवस मनाया। लेकिन हमें यह याद रखना चाहिए कि गौरव यात्रा के इन 75 वर्षों में कुछ लोग ऐसे भी थे जिन्होंने संविधान के साथ छेड़छाड़ की, उसकी मूल भावनाओं को नष्ट करने की कोशिश की, और कुछ ऐसे भी थे जिन्होंने इसे संरक्षित करने का कार्य किया।

हमें यह भी पहचानना होगा कि किस सरकार ने बाबा साहब के दृष्टिकोण को उजागर और सुरक्षित करने का कार्य किया। जैसे हम संविधान गौरव अभियान की शुरुआत करते हैं, हमें अपने इतिहास पर गर्व करना चाहिए और उन लोगों के प्रति सतर्क रहना चाहिए जिनके 'खाने के दांत और, दिखाने के और' हैं। ये लोग संविधान की किताब तो हाथ में रखते हैं, लेकिन कभी उसे पढ़ा नहीं। उनके पूर्वजों ने संविधान और देश के साथ क्या किया था, इसके बारे में ये कुछ भी नहीं जानते। ▪

हमारी संस्कृति समरसता की
मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव

पं. मदनमोहन मालवीय ने बनारस हिंदू विश्वविद्यालय की स्थापना की और एक गुरुकुल के रूप में इस संस्थान का सनातन संस्कृति में महत्वपूर्ण योगदान रहा है।

लेकिन कांग्रेस ने पं. मालवीय को भी भुला दिया। उन्होंने बाल गंगाधर तिलक को भुला दिया, नेताजी सुभाषचंद्र बोस को भुला दिया।

- **आजादी के बाद कांग्रेस ने असली गांधी को भुला दिया और बाबा साहब का अपमान किया**
- **कांग्रेस 'गांधी' नाम का उपयोग सिर्फ वोट पाने के लिए करती है।**

हमारी संस्कृति समरसता की रही है और जब-जब किसी ने हमारे देश पर, भारत की आत्मा पर प्रहार करने की कोशिश की है, तब देश ने उसका जवाब दिया है और उन चुनौतियों के बीच से ही रास्ता निकाला है। हमारी संस्कृति समरसता की है और उसकी विशेषता है कि वह हमें एक-दूसरे से जोड़ती है, नजदीक लाती है। आजादी के पहले कांग्रेस कुछ और थी, लेकिन आजादी के बाद कांग्रेस पार्टी का व्यवहार बदल गया और उसने अपने ही नेताओं को भुला दिया। देश की आजादी में महात्मा गांधी के योगदान को कांग्रेस के नेताओं ने भुला दिया। आज पता नहीं बापू का असली परिवार कहां है। लेकिन कांग्रेस के नेता नकली गांधी बन बैठे। इन्हें पता है कि 'गांधी' नाम से वोट मिलते हैं, इसलिए ये उसे छोड़ना नहीं चाहते। पं. मदनमोहन मालवीय ने बनारस हिंदू विश्वविद्यालय की स्थापना की और एक गुरुकुल के रूप में इस संस्थान का सनातन संस्कृति में महत्वपूर्ण योगदान रहा है। लेकिन कांग्रेस ने पं. मालवीय को भी भुला दिया। उन्होंने बाल गंगाधर तिलक को भुला दिया, नेताजी सुभाषचंद्र बोस को भुला दिया। अपनी संकु चित सोच के चलते कांग्रेस के नेताओं ने सरदार वल्लभभाई पटेल को भुला दिया। जिन बाबा साहब अंबेडकर ने देश को संविधान दिया, धारा 370 लगाने जैसे कुत्सित विचार का विरोध किया, उन बाबा साहब की राह में कांटे बिछाने का काम कांग्रेस पार्टी ने किया। पं. नेहरू ने अपनी संकुचित सोच के चलते बाबा साहब डॉ. अंबेडकर को आगे नहीं बढ़ने दिया। योग्यता, क्षमता और सिद्धांतों के आधार पर बाबा साहब को मंत्रिमंडल में स्थान दिया जाना था, लेकिन कांग्रेस के नेताओं ने ऐसा नहीं किया। पं. नेहरू ने अपनी हीनभावना के चलते बाबा साहब को चुनाव नहीं जीतने दिया। उनका सम्मान करना तो दूर, कांग्रेस की सरकार ने उस व्यक्ति को पदम विभूषण से सम्मानित किया, जिसने बाबा साहब को चुनाव हराया था। कांग्रेस के नेताओं ने देश का संविधान बनाने में डॉ. अंबेडकर के योगदान को देखते हुए भी उनकी एक फोटो तक लगाना ठीक नहीं समझा। उनके स्मारक बनाने या उनकी स्मृतियों को संजोने के लिए कुछ नहीं किया। अब जब कांग्रेस की जमीन सिकुड़ती जा रही है, तो कांग्रेस पार्टी जमीन से जुड़ने के लिए बाबा साहब के नाम पर यात्रा निकालने का ढोंग कर रही है। लेकिन देश और प्रदेश की जनता सब जानती है। जनता की आंखों में धूल झोंकने की कांग्रेस की यह कोशिश कभी कामयाब नहीं होगी।

भाजपा ने शुरुआत से बाबा साहब डॉ. अंबेडकर, उनकी भावनाओं और उनके बनाए संविधान का सम्मान किया है। बाबा साहब ने जिस धारा 370 का विरोध किया, उसके विरोध में डॉ. श्यामाप्रसाद मुखर्जी ने जनसंघ की स्थापना की। सत्ता में न होने पर भी हमारी पार्टी ने बाबा साहब के जीवन से जुड़ी 14 अप्रैल और 6 दिसंबर की तारीखों को हमेशा याद रखा। हमारी सरकार ने बाबा साहब को न सिर्फ उचित सम्मान दिया, बल्कि उनके जीवन से जुड़े पंचतीर्थों को संवारकर उनकी स्मृतियों को संजोने का भी प्रयास किया है।

हमारे प्रधानमंत्री जी जब शपथ लेते हैं, तो बाबा साहब के बनाए संविधान को माथे से लगाते हैं। दूसरी तरफ कांग्रेस पार्टी ने डॉ. अंबेडकर के विरोध के बावजूद कश्मीर में धारा 370 लगाई। जब लोगों ने विरोध किया, आंदोलन किया, तो कांग्रेस ने उसे कुचलने का काम किया। जब इलाहाबाद हाईकोर्ट ने श्रीमती इंदिरा गांधी के चुनाव को अवैध घोषित किया, तो उन्होंने संविधान की हत्या करते हुए देश में आपातकाल लगा दिया। कांग्रेस पार्टी ने 90 से अधिक बार संविधान में संशोधन किये और संविधान के इस अपमान में कांग्रेस की चारों पीढ़ियों का योगदान रहा है। हमें कांग्रेस के इन पापों को जन-जन तक पहुंचाना होगा। ▪

मोदी जी के नेतृत्व में भारत वैश्विक आर्थिक शक्ति के रूप में उभर रहा है - मुख्यमंत्री डॉ. यादव

9 करोड़ से अधिक की आबादी के साथ मध्यप्रदेश क्षेत्रफल की दृष्टि से भारत का दूसरा सबसे बड़ा राज्य है। प्रदेश की अर्थव्यवस्था एक दशक में तीन गुना बढ़ी है, अर्थव्यवस्था को अगले पाँच साल में दोगुना करना सरकार का लक्ष्य है।

पूंजीगत व्यय और शासकीय व्यय में पिछले एक साल में 19 प्रतिशत की वृद्धि हुई है, जो प्रदेश की प्रगति का द्योतक है।

- **मध्यप्रदेश-जापान की मित्रता का नया अध्याय शुरू।**
- **मध्यप्रदेश से जापान को वर्ष 2023-24 में 92.8 मिलियन डॉलर का निर्यात किया।**
- **मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने जापान की उद्यमशीलता और जीवटता को किया नमन।**
- **जापान के उद्योग समूह मध्यप्रदेश में निवेश के लिए आमंत्रित।**
- **मुख्यमंत्री का जापान में इंटरैक्टिव सेशन में उद्योगपतियों से संवाद।**

प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में भारत विश्व बन्धुत्व की भावना के साथ नई वैश्विक आर्थिक शक्ति के रूप में उभर रहा है। जापान ऐतिहासिक रूप में गौतम बुद्ध की परंपरा से जुड़ा है और भारत गौतम बुद्ध की धरती है। भारत और जापान का सदियों से परस्पर संबंध रहा है। प्राचीनकाल से आधुनिक युग तक जापान का समृद्ध इतिहास रहा है। विनाशकारी भूकंपों और प्राकृतिक आपदाओं से उबरने में दिखाई गई उद्यमशीलता, जीवटता से जापान ने विश्व में विशेष पहचान बनाई है।

जापान अपनी विशिष्ट जीवन शैली और औद्योगिक शैली के आधार पर आर्थिक संपन्नता में महत्वपूर्ण उपलब्धि अर्जित करने वाला देश है। प्रसन्नता और गर्व का विषय है कि जापान से मध्यप्रदेश के व्यावसायिक संबंध भी जुड़े हैं। वर्ष 2023-24 में मध्यप्रदेश से जापान को 92.8 मिलियन डॉलर का निर्यात किया गया, इनमें एल्युमिनियम से बनी वस्तुएं, कार्बनिक रसायन, परमाणु रिएक्टर्स, बॉयलर्स, यांत्रिक उपकरण, फार्मास्युटिकल उत्पाद सहित अन्य मशीनरी शामिल हैं। जापान में मैन्युफैक्चरिंग और अन्य क्षेत्रों से जुड़े उद्योग भी हैं। जापान के उद्योग समूह मध्यप्रदेश में निवेश के लिए आमंत्रित हैं।

9 करोड़ से अधिक की आबादी के साथ मध्यप्रदेश क्षेत्रफल की दृष्टि से भारत का दूसरा सबसे बड़ा राज्य है। प्रदेश की अर्थव्यवस्था एक दशक में तीन गुना बढ़ी है, अर्थव्यवस्था को अगले पाँच साल में दोगुना करना सरकार का लक्ष्य है। पूंजीगत व्यय और शासकीय व्यय में पिछले एक साल में 19 प्रतिशत की वृद्धि हुई है, जो प्रदेश की प्रगति का द्योतक है। पिछले पाँच वर्ष में राज्य ने निर्यात की दिशा में विशेष प्रयास किए हैं, जिसके परिणामस्वरूप वर्ष 2023-24 में 65 हजार करोड़ का निर्यात किया गया। ऊर्जा, खनन, शिक्षा, एम.एस.एम.ई. सहित सभी प्रमुख क्षेत्रों में उद्योग अनुकूल नीतियां लागू की जा रही हैं, जिसके परिणामस्वरूप मध्यप्रदेश में निवेश के लिए अनुकूल वातावरण बना है, साथ ही विश्व में उद्योग समूहों की रूचि भी मध्यप्रदेश में बढ़ी है। निवेश और औद्योगिक गतिविधियों के विस्तार के लिए नीतियों के इतर जाकर भी यदि आवश्यकता होगी तो निवेशकों की सहूलियत के लिये सरकार नीतियों में परिवर्तन करेंगी।

फूड पार्क्स, आईटी पार्क्स, प्लास्टिक पार्क, मेडिकल डिवाइस पार्क , सोलर इक्विपमेंट पार्क, फूट वियर पार्क , ईवी पार्क , टेक्सटाईल पार्क , गारमेंट पार्क , प्लग एंड प्ले जोन, सेमीकंडक्टर पार्क आदि क्षेत्रों में मध्यप्रदेश में समान रूप से संभावना बनी है।

राज्य सरकार की गारमेंट, लॉजेस्टिक्स, ईवी, खाद्य प्रसंस्करण, इथेनॉल, आईटी, फार्मा, मेडिकल डिवाइसेस इत्यादि सेक्टर्स पर केन्द्रित विशेष नीतियाँ निवेशकों को आकर्षित

कर रही हैं। मध्यप्रदेश फूड बॉस्केट कहलाता है, इससे कई सेक्टर जुड़े हैं, जिनसे संबंधित व्यावसायिक गतिविधियों को बढ़ाने के लिए सभी ओर से प्रोत्साहन मिल रहा है।

प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी 24-25 फरवरी 2025 को प्रदेश की राजधानी भोपाल में होने वाली ग्लोबल इन्वेस्टर्स समिट का शुभारंभ कर रहे हैं। इस समिट में सभी महत्वपूर्ण सेक्टर्स पर केन्द्रित सेमिनार होंगे और निवेश की संभावनाओं पर चर्चा होगी। विशेष रूप से कौशल उन्नयन के क्षेत्र में प्रदेश में बड़ी संभावनाएँ विद्यमान हैं। बड़ी संख्या में युवा शक्ति के साथ ही प्रदेश में कई आईटीआई, इंजीनियरिंग कॉलेज, पॉलीटेक्निक जैसी संस्थाएं विद्यमान हैं। इस क्षेत्र में जापान और मध्यप्रदेश साथ मिलकर महत्वपूर्ण कार्य कर सकते हैं। प्रदेश में निजी क्षेत्र के 52 और 17 शासकीय विश्वविद्यालय सहित इंजीनियरिंग कॉलेज, मेडिकल कॉलेज, स्वास्थ्य संस्थाएं विद्यमान हैं। इन क्षेत्रों में सहयोग दोनों के लिए लंबे समय तक हितकारी होगा। भविष्य की संभावनाओं के अनुरूप जापान और मध्यप्रदेश प्रगति के पथ पर विश्वस्त सहयोगी के रूप में अग्रसर होंगे।

जापान का इतिहास प्राचीन काल से लेकर आधुनिक काल तक विविध और समृद्ध रहा है। विनाशकारी भूकंपों और प्राकृतिक आपदाओं से उभरते हुए जापान ने दुनिया को अपनी दृढ़ता के साथ नवाचार की क्षमता भी दिखाई है। जापान आज टेक्नोलॉजी के साथ रोबोटिक्स और ऑटोमोबाइल निर्माण में अग्रणी है। भारत और जापान के बीच व्यवसायिक संबंध तब शुरू हुए जब पैनासोनिक ने वर्ष 1972 में अपने विनिर्माण संयंत्र स्थापित किये हैं। आज भारत और जापान एक विशेष रणनीतिक और वैश्विक भागीदारी साझा करते हैं।

इस वर्ष 21 सेक्टर्स के लिए नयी निवेश नीतियां ला रहे हैं, जिसमें मैन्युफैक्चरिंग, लॉजिस्टिक्स, निर्यात संवर्धन, एमएसएमई, स्टार्टअप, पंप हाइड्रोस्टोरेज, जैव ईंधन, ग्लोबल केपेबिलिटी सेंटर, AVGC-XR, सेमीकंडक्टर, ड्रोन, विमानन, मेडिकल कॉलेजों का पीपीपी मोड पर निर्माण और संचालन, पर्यटन आदि क्षेत्रों को विशिष्ट वित्तीय सहायता प्रदान की जाएगी।

सरकार रोजगार सृजन को बेहद महत्व देती है। इसलिए, जो कंपनियां अधिक से अधिक लोगों को रोजगार देंगी, उन्हें अतिरिक्त प्रोत्साहन दिया जा रहा है। निर्यात करने वाली कंपनियों को भी विशेष लाभ दिए जा रहे हैं। इससे न केवल राज्य की अर्थव्यवस्था मजबूत होगी बल्कि देश का निर्यात भी बढ़ेगा। सरकार हरित उद्योगों को भी बढ़ावा दे रही है।

प्रदेश में निवेश के लिए जो निवेशक आते हैं राज्य उनका पूरा ख्याल रखता है साथ ही उनकी सभी आवश्यकताओं का भी ध्यान रखा जाता है।

मध्यप्रदेश में निवेशकों के लिए स्पष्ट एवं लाभकारी नीतियां हैं सिंगल विंडो क्लीयरेंस, पारदर्शी त्वरित अनुमोदन एवं अनुकूल सुविधाएँ और वातावरण उपलब्ध है। बिजली, पानी, भूमि और अन्य आवश्यक सुविधाएं भी मौजूद हैं। मध्यप्रदेश उद्योगों के विकास के लिए पूर्णतः समर्पित है। जापान के निवेश को और उद्योगपतियों को मध्यप्रदेश आने और यहां की अपार संभावना का लाभ उठाने के लिए सभी आमंत्रित हैं। अनंत संभावनाओं की भूमि मध्यप्रदेश में निवेश करें और अपने व्यवसाय को नई ऊँचाइयों पर ले जाने के साथ मध्यप्रदेश के विभिन्न क्षेत्र के विकास में अपना योगदान दें। 24 और 25 फरवरी को भोपाल में इन्वेस्ट मध्यप्रदेश ग्लोबल इन्वेस्टर्स समिट का आयोजन किया जा रहा है। जापान के उद्योगपति मध्यप्रदेश में निवेश के लिए आगे आएंगे और राज्य के विकास में अपनी भूमिका निभाएंगे। ▪

संविधान कराता है अधिकारों और कर्तव्यों का बोध

मुख्यमंत्री डॉ. यादव

राष्ट्र के जन-गण-मन में देशभक्ति और देश के लिए गर्व का भाव सशक्त हो रहा है। प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व-गुण के फलस्वरूप यह संभव हुआ है। संपूर्ण विश्व में भारत की गरिमा और साख बढ़ रही है। गणतंत्र दिवस, संविधान निर्माताओं के प्रति भी कृतज्ञता ज्ञापित करने का दिन है। हमारा संविधान गौरव और स्वाभिमान के साथ हमें अपने अधिकारों और कर्तव्यों का बोध भी कराता है।

एक वर्ष में प्रदेश के चहुँमुखी विकास के साथ प्रदेश की जनता के हित में जन-सहयोग से जो कार्य हुए हैं, उनसे मध्यप्रदेश विकसित राज्य के रूप में पहचान बना रहा है। इस उपलब्धि का श्रेय प्रदेश के लगभग साढ़े आठ करोड़ नागरिकों को जाता है, जो इस पहचान के शिल्पकार रहे हैं। प्रधानमंत्री श्री मोदी की मंशानुरूप विकसित भारत के लिए विकसित मध्यप्रदेश की हमारी यात्रा निरंतर चल रही है। संविधान दिवस के माध्यम से राष्ट्र संविधान की महिमा को एक उत्सव के रूप में मनाता है। 76वां गणतंत्र दिवस समारोह उत्सव, उमंग और देशभक्ति के साथ हर्षोल्लास के साथ मनाया गया। ▪

एक लक्ष्य, एक ध्येय, विकसित भारत- नरेन्द्र मोदी

- **नेताजी सुभाष चंद्र बोस के आदर्श और भारत की आजादी के प्रति उनका अटूट समर्पण हमें आज भी प्रेरित करते हैं।**
- **नेता जी की जीवन यात्रा की सारी विरासत युवा भारत को एक नई ऊर्जा देगी।**

नेताजी ने देश की स्वतंत्रता के लिए आजाद हिंद फौज बनाई, इसमें देश के हर क्षेत्र हर वर्ग के वीर और वीरांगनाएं शामिल थीं।

सबकी भाषाएं अलग-अलग थीं, लेकिन भावना एक थी देश की आजादी। यही एकजुटता आज विकसित भारत के लिए भी बहुत बड़ी सीख है।

जब हमारा देश विकसित भारत के संकल्प की सिद्धि में जुटा है, तब नेताजी सुभाष के जीवन से हमें निरंतर प्रेरणा मिलती है। नेता जी के जीवन का सबसे बड़ा लक्ष्य था- आजाद हिंद। उन्होंने अपने संकल्प की सिद्धि के लिए अपने फैसले को एक ही कसौटी पर परखा- आजाद हिंद। नेता जी एक समृद्ध परिवार में जन्मे, उन्होंने सिविल सर्विसेस की परीक्षा पास की। वो चाहते तो अंग्रेजी शासन में एक वरिष्ठ अधिकारी बनकर आराम की जिंदगी जीते, लेकिन उन्होंने आजादी के लिए कष्टों को चुना, चुनौतियों को चुना, देश विदेश में भटकना पसंद किया, नेता जी सुभाष कंफर्ट जोन के बंधन में नहीं बंधे। इसी तरह हम सभी को विकसित भारत के निर्माण के लिए अपने कंफर्ट जोन से बाहर निकलना है। हमें खुद को ग्लोबली बेस्ट बनाना है, एक्सीलेंस को चुनना ही है, एफिशिएंसी पर फोकस करना है।

नेताजी ने देश की स्वतंत्रता के लिए आजाद हिंद फौज बनाई, इसमें देश के हर क्षेत्र हर वर्ग के वीर और वीरांगनाएं शामिल थीं। सबकी भाषाएं अलग-अलग थीं, लेकिन भावना एक थी देश की आजादी। यही एकजुटता आज विकसित भारत के लिए भी बहुत बड़ी सीख है। तब स्वराज के लिए हमें एक होना था, आज विकसित भारत के लिए हमें एक रहना है। आज देश में, विश्व में, हर तरफ भारत की प्रगति के लिए अनुकूल माहौल है। दुनिया भारत की ओर देख रही है कि कैसे हम इस 21वीं सदी को भारत की शताब्दी बनाते हैं और ऐसे महत्वपूर्ण कालखंड में हमें नेताजी सुभाष की प्रेरणा से भारत की एकजुटता पर बल देना है। हमें उन लोगों से भी सतर्क रहना है, जो देश को कमजोर करना चाहते हैं, जो देश की एकता को तोड़ना चाहते हैं।

नेताजी सुभाष भारत की विरासत पर बहुत गर्व करते थे। वे अक्सर भारत के समृद्ध लोकतांत्रिक इतिहास की चर्चा करते थे और उससे प्रेरणा लेने के लिए समर्थक थे। आज भारत गुलामी की मानसिकता से बाहर निकल रहा है। अपनी विरासत पर गर्व करते हुए विकास कर रहा है। मेरा सौभाग्य है कि आजाद हिंद सरकार के 75 वर्ष पूरे होने पर लाल किले पर मुझे तिरंगा फहराने का मौका मिला था।

उस ऐतिहासिक अवसर को मैं कभी भूल नहीं सकता। नेताजी की विरासत से प्रेरणा लेते हुए सरकार ने 2019 में दिल्ली के लाल किले में नेताजी सुभाष को समर्पित म्यूजियम का निर्माण किया। उसी साल सुभाष चंद्र बोस आपदा प्रबंधन पुरस्कार शुरू किए गए। 2021 में सरकार ने निर्णय लिया कि नेताजी की जयंती को अब पराक्रम दिवस के रूप में मनाया जाएगा। इंडिया गेट के समीप नेताजी की विशाल प्रतिमा लगाना, अंडमान में द्वीप का नाम नेताजी के नाम पर रखना, गणतंत्र दिवस की परेड में आईएनए के जवानों को नमन करना, सरकार की इसी भावना का प्रतीक है।

बीते 10 वर्षों में देश ने यह भी दिखाया है कि तेज विकास से सामान्य जन का जीवन भी आसान होता है और सैन्य सामर्थ्य भी बढ़ता है। बीते दशक में 25 करोड़ भारतीयों को गरीबी से बाहर निकाला गया है, यह बहुत बड़ी सफलता है। आज गांव हो या शहर हर तरफ आधुनिक इंफ्रास्ट्रक्चर का निर्माण हो रहा है, साथ ही भारत की सेना की ताकत में भी अभूतपूर्व वृद्धि हुई है। आज विश्व मंच पर भारत की भूमिका बढ़ रही है, भारत की आवाज बुलंद हो रही है, वो दिन दूर नहीं जब भारत दुनिया की तीसरी सबसे बड़ी आर्थिक ताकत बनेगा। हमें नेताजी सुभाष की प्रेरणा से एक लक्ष्य एक ध्येय विकसित भारत के लिए निरंतर काम करते रहना है और यही नेताजी को हमारी सच्ची कार्यांजलि होगी। ▪

मध्यप्रदेश संभावनाओं का प्रदेश

मुख्यमंत्री डॉ. यादव

- **देश की अर्थव्यवस्था को आगे बढ़ाने में उद्योगपतियों का महत्वपूर्ण योगदान।**
- **मध्यप्रदेश का महाराष्ट्र से है दिल का रिश्ता।**
- **प्रदेश में उद्योग जगत को श्रमिक समस्या सहित अन्य कठिनाईयों का सामना नहीं करना पड़ता।**
- **प्रदेश के औद्योगिक भविष्य को आकार देने उत्प्रेरक की भूमिका निभा रहे हैं उद्योगपति।**

मध्यप्रदेश, अपने प्राकृतिक सौंदर्य, धार्मिक स्थलों और विश्वस्तरीय बुनियादी ढाँचे के साथ, निवेशकों के लिए एक आकर्षक केन्द्र के रूप में उभर रहा है।

औद्योगिक गतिविधियों और निवेश के लिए मध्यप्रदेश संभावनाओं का प्रदेश है। प्रदेश में वर्ष-2025 को उद्योग एवं रोजगार वर्ष घोषित किया है। औद्योगिक विकास की गति को तेज कर प्रदेश को आर्थिक रूप से अधिक उन्नत और समृद्ध बनाने के उद्देश्य से निवेश-अनुकूल नीतियों, उत्कृष्ट बुनियादी ढाँचे और कुशल मानव संसाधन की उपलब्धता पर विशेष ध्यान दिया जा रहा है। मध्यप्रदेश, अपने प्राकृतिक सौंदर्य, धार्मिक स्थलों और विश्वस्तरीय बुनियादी ढाँचे के साथ, निवेशकों के लिए एक आकर्षक केन्द्र के रूप में उभर रहा है। व्यापारिक राजधानी इंदौर ने स्वयं को स्वच्छता की राजधानी के रूप में भी स्थापित किया है। पीथमपुर और मंडीदीप प्रदेश ही नहीं देश के प्रमुख औद्योगिक केंद्र के रूप में विकसित हुए हैं। शिक्षा, स्वास्थ्य, खनन, फार्मा, पर्यटन, आईटी,सहित सभी क्षेत्रों में सुगम एवं आकर्षक नीतियां विकसित की गई हैं। राज्य के विभिन्न अंचलों में निवेश प्रोत्साहन के लिए देश के शहरों में जाकर उद्योग समूहों और निवेशकों के साथ इंटरैक्टिव सेशन आयोजित किये गए हैं।

मध्यप्रदेश में उद्योग जगत को श्रमिक समस्या सहित अन्य कठिनाइयों का सामना नहीं करना पड़ता। स्वयं के कार्य पर एकाग्रता के साथ ध्यान देना प्रदेशवासियों का विशिष्ट गुण है। ''ईज ऑफ डूइंग बिजनेस'' का विचार सरकार और समाज में रचा बसा है। सूचना प्रौद्योगिकी संसाधनों से प्रबंधन के वर्तमान दौर में मध्यप्रदेश में उद्योगों का संचालन अधिक सरल और सुगम हुआ है।

प्रधानमंत्री श्री मोदी जी की उपस्थिति में होने जा रही ग्लोबल इन्वेस्टर्स समिट के माध्यम से उद्योग समूहों और मध्यप्रदेश के संबंध अधिक प्रगाढ़ होंगे। प्रधानमंत्री श्री मोदी के नेतृत्व में देश विश्व की तीसरी अर्थव्यवस्था बनने की ओर अग्रसर है। उद्योगपतियों का देश की अर्थव्यवस्था को आगे बढ़ाने में भी महत्वपूर्ण योगदान है। यदि सेना का जवान सीमा पर देश की रक्षा करता है तो उद्योगपति अपने कौशल प्रबंधन के आधार पर देश को समर्थ-समृद्ध और वैभवशाली बनाने में अपना योगदान देता है। उद्योग समूह रोजगार उपलब्ध कराने का प्रभावी माध्यम हैं।

मध्यप्रदेश का महाराष्ट्र से दिल का रिश्ता है। मालवा के सभी देव स्थान महाराष्ट्र के साथ जुड़े हैं। लोकमाता देवी अहिल्या बाई ने सुशासन, शौर्य, कौशल संवर्धन के साथ ही धर्म के क्षेत्र में अद्भुत उदाहरण प्रस्तुत किए। पांच जिलों में विस्तारित उनका राज्य देश में सुशासन का आदर्श बना।

हम सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे संतु निरामयः के भाव के अनुसार अन्य प्रदेशों और देशों से आने वाले उद्योगों का स्वागत और सबके कल्याण एवं प्रगति की कामना करते हैं। ▪

स्वामित्व योजना से गांवों में संपत्ति का स्वामित्व सुनिश्चित - नरेन्द्र मोदी

पांच साल पहले स्वामित्व योजना शुरु की गई थी, ताकि गांव में रहने वालों को उनके घर का कानूनी प्रमाण दिया जा सके। कहीं इनको घरौनी कहते हैं, कहीं अधिकार अभिलेख कहते हैं, कहीं प्रॉपर्टी कार्ड कहते हैं, कहीं मालमट्टा पत्रक कहते हैं, कहीं आवासीय भूमि पट्टा कहते हैं। अलग-अलग राज्यों में नाम अलग-अलग हैं, लेकिन ये स्वामित्व के प्रमाण पत्र ही हैं। स्वामित्व योजना के तहत गांव के करीब सवा 2 करोड़ लोगों को अपने घर का पक्का कानूनी डॉक्यूमेंट मिला है।

21वीं सदी की दुनिया में, क्लाइमेट चेंज, पानी की कमी, स्वास्थ्य का संकट, महामारी ऐसी कितनी ही चुनौतियां हैं। लेकिन विश्व के सामने एक और बहुत बड़ी चुनौती रही है। ये चुनौती है- प्रॉपर्टी राइट्स की, संपत्ति के अधिकृत कागज की। कई साल पहले संयुक्त राष्ट्र ने दुनिया के अनेक अनेक देशों में भूसंपत्ति को लेकर एक स्टडी की थी। इस स्टडी में सामने आया कि दुनिया के अनेक देशों में लोगों के पास प्रॉपर्टी के पक्के कानूनी दस्तावेज है ही नहीं। संयुक्त राष्ट्र ने साफ कहा कि अगर गरीबी कम करनी है, तो इसके लिए लोगों के पास, प्रॉपर्टी राइट्स होना बहुत जरूरी है। दुनिया के एक बड़े अर्थशास्त्री ने तो प्रॉपर्टी राइट्स की चुनौती पर एक किताब पूरी लिखी है। इस किताब में वो कहते हैं कि गांवों में लोगों के पास जो थोड़ी-बहुत संपत्ति होती है, वो dead capital होती है। यानि ये प्रॉपर्टी, एक प्रकार से मृत संपत्ति होती है। क्योंकि गांव वाले, गरीब लोग, उस संपत्ति के बदले में कोई लेनदेन नहीं कर सकते। ये परिवार की इनकम बढ़ाने में मदद नहीं कर सकती।

हम तो सबका विकास चाहते हैं, सबका विश्वास भी चाहते हैं। हमने तय किया कि ड्रोन की मदद से देश के गांव-गांव में घरों की जमीनों की मैपिंग कराई जाएगी, गांव के लोगों को उनकी आवासीय संपत्ति के कागज दिए जाएंगे।

दुनिया के सामने मौजूद इस बड़ी चुनौती से भारत भी अछूता नहीं था। भारत के गांवों में लोगों के पास लाखों-लाख करोड़ रुपए की संपत्ति होने के बावजूद भी उसकी उतनी कीमत नहीं थी। वजह ये क्योंकि लोगों के पास अक्सर घरों के कानूनी दस्तावेज होते नहीं थे, इसलिए घर की मिल्कियत को लेकर भी विवाद होते रहते थे। कई जगहों पर तो दबंग लोग घरों पर ही कब्जा कर लेते थे। बिना कानूनी दस्तावेज के बैंक भी ऐसी संपत्ति से चार कदम दूर ही रहते थे। दशकों दशक से ऐसा ही चल रहा था। अच्छा होता पहले की सरकारों ने इस दिशा में कुछ ठोस कदम उठाए होते, लेकिन उन्होंने इस दिशा में खास कुछ किया नहीं। इसलिए 2014 में जब हमारी सरकार बनी, तो हमने प्रॉपर्टी के कागज की इस चुनौती से निपटने की ठानी, कोई भी संवेदनशील सरकार, अपने गांव के लोगों को इस तरह परेशानी में नहीं छोड़ सकती थी। और हम तो सबका विकास चाहते हैं, सबका विश्वास भी चाहते हैं। हमने तय किया कि ड्रोन की मदद से देश के गांव-गांव में घरों की जमीनों की मैपिंग कराई जाएगी, गांव के लोगों को उनकी आवासीय संपत्ति के कागज दिए जाएंगे। आज हम इस योजना का लाभ मिलते जब देख रहे हैं। तो मन को एक संतोष मिलता है कि चलो गांव का, गरीबों का, हम काम कर पाएं। संपत्ति तो थी, रहते भी थे पर कागज नहीं था उस समस्या का समाधान सरकार को करना चाहिए था और इसलिए हमने काम उठाया और कर रहे हैं।

हमारे देश में 6 लाख से अधिक गांव हैं। इनमें से करीब-करीब आधे गांवों में ड्रोन से सर्वे हो चुका है। कानूनी दस्तावेज मिलने के बाद लाखों लोगों ने अपने घर, अपनी संपत्ति के आधार पर बैंकों से लोन लिया है। इस पैसे से इन्होंने गांव में अपना छोटा-मोटा व्यापार शुरू किया है। इनमें से बहुत सारे छोटे और मझोले किसान परिवार हैं। इनके लिए ये प्रॉपर्टी कार्ड, आर्थिक सुरक्षा की बड़ी गारंटी बन चुके हैं। अवैध कब्जों से, कोर्ट में लंबे विवादों से, हमारे दलित, पिछड़े और आदिवासी परिवार ही सबसे अधिक परेशान थे, उससे वही प्रभावित थे। अब कानूनी प्रमाण मिलने से, उनको इस संकट से मुक्ति मिल रही है। एक आकलन है कि सभी गांवों में प्रॉपर्टी कार्ड बनने के बाद 100 लाख करोड़ रुपए से ज्यादा की आर्थिक गतिविधि का रास्ता खुल जाएगा। आप कल्पना कर सकते हैं कितनी बड़ी पूंजी, देश की अर्थव्यवस्था में जुड़ने जा रही है।

आज सरकार पूरी ईमानदारी से ग्राम स्वराज को जमीन पर उतारने का प्रयास कर रही है। स्वामित्व योजना से गांव के विकास की प्लानिंग और उस पर अमल अब काफी बेहतर हो रहे हैं। आज हमारे पास स्पष्ट नक्शे होंगे, आबादी के इलाकों का हमें पता होगा, तो विकास के काम की प्लानिंग भी सटीक होगी और गलत प्लानिंग के कारण जो बर्बादी होती थी, जो रुकावटें आती थीं, उससे भी मुक्ति मिलेगी। कौन सी जमीन पंचायत की है, कौन सी जमीन चारागाह है, ऐसे कई विवाद रहते हैं। अब प्रॉपर्टी राइट्स मिलने से ग्राम पंचायतों की मुश्किलें भी दूर होंगी, वो भी आर्थिक रूप से सशक्त हो पाएंगी। गांव में आग लगने की घटनाएं होती हैं, बाढ़ आती है, भू-स्खलन होते हैं, ऐसी अनेक आपदाएं आती हैं। प्रॉपर्टी कार्ड मिलने से डिजास्टर मैनेजमेंट बेहतर हो पाएगा, आपदा की स्थिति में उचित क्लेम मिलना आसान होगा।

हम ये भी जानते हैं कि जो किसानों की जमीन होती है, उसको लेकर भी कितने विवाद होते हैं। जमीन के डॉक्यूमेंट पाने में मुश्किलें आती हैं। बार-बार पटवारी के पास जाना पड़ता है, तहसील के चक्कर काटने पड़ते हैं। इससे भ्रष्टाचार के रास्ते भी खुलते हैं। ये परेशानियां कम हों, इसके लिए लैंड रिकॉर्ड्स का डिजिटलीकरण किया जा रहा है। स्वामित्व और भू-आधार- ये दो व्यवस्थाएं गांवों के विकास का आधार बनने वाली हैं। भू-आधार के जरिए जमीन को भी एक खास पहचान दी गई है। करीब 23 करोड़ भू-आधार नंबर जारी किए जा चुके हैं। इससे आज आसानी से पता चल जाता है कि कौन सा प्लॉट किसका है। बीते 7-8 साल में ही करीब 98 परसेंट लैंड रिकॉर्ड्स का डिजिटलीकरण किया गया है। अधिकतर जमीनों के नक्शे अब डिजिटली उपलब्ध हैं।

महात्मा गांधी कहते थे- भारत गांव में बसता है, भारत की आत्मा गांव में है। पूज्य बापू के इस भाव को सही मायने में जमीन पर उतारने का काम बीते दशक में हुआ है। जिन ढाई करोड़ से अधिक परिवारों तक बीते 10 वर्ष में बिजली पहुंची, वे अधिकतर गांव के ही हैं। जिन 10 करोड़ से अधिक परिवारों तक बीते 10 वर्ष में शौचालय पहुंचे, वे भी ज्यादातर गांवों के ही हैं। जिन 10 करोड़ बहनों को उज्ज्वला का गैस कनेक्शन मिला, उनमें से अधिकांश बहनें गांव में ही रहती हैं। जिन 12 करोड़ से अधिक परिवारों तक पांच सालों में नल से जल पहुंचा है, वे भी गांव के ही हैं। जिन 50 करोड़ से अधिक लोगों के बैंक में खाते खुले, वे भी ज्यादातर गांवों से ही हैं। बीते दशक में डेढ़ लाख से अधिक आयुष्मान आरोग्य मंदिर बने, वो भी ज्यादातर गांवों में ही, गांव के लोगों के स्वाथ्य की सेवा करते हैं। आजादी के इतने दशकों तक हमारे गांव, गांव के करोड़ों लोग, ऐसी मूलभूत सुविधाओं से वंचित थे। हमारे दलित, पिछड़े, आदिवासी समाज के परिवार सबसे ज्यादा अभाव में थे। अब इन सारी सुविधाओं का सबसे अधिक लाभ भी इन्हीं परिवारों को ही हुआ है।

गांवों में अच्छी सड़कें हों, इसके लिए भी बीते दशक में अभूतपूर्व प्रयास किए गए हैं। साल 2000 में, जब अटल बिहारी वाजपेयी जी प्रधानमंत्री थे, तब प्रधानमंत्री ग्राम सड़क योजना शुरु की थी। तब से लेकर आज तक करीब सवा 8 लाख किलोमीटर सड़कें गांवों में बनाई गई हैं। इतने सालों में सवा 8 लाख किमी, अब आप देखिए 10 साल में हमने पौने चार लाख किलोमीटर, यानि लगभग आधी सड़कें बीते 10 साल में ही बना दी हैं। अब हम सीमा पर स्थित दुर्गम गांवों तक कनेक्टिविटी बढ़ाने के लिए वाइब्रेंट विलेज कार्यक्रम भी चला रहे हैं।

सड़क ही नहीं, गांव में इंटरनेट पहुंचाना भी हमारी प्राथमिकता रही है। साल 2014 से पहले देश की 100 से भी कम पंचायतें ब्रॉडबैंड फाइबर कनेक्शन से जुड़ी थीं। बीते 10 साल में हमने 2 लाख से ज्यादा पंचायतों को ब्रॉडबैंड फाइबर कनेक्शन से जोड़ा है। 2014 से पहले देश के गांवों में एक लाख से भी कम, कॉमन सर्विस सेंटर थे। बीते 10 साल में हमारी सरकार ने 5 लाख से ज्यादा नए कॉमन सर्विस सेंटर बनाए हैं। और ये सिर्फ आंकड़े नहीं है, इन आंकड़ों के साथ गांवों में सुविधाएं पहुंची हैं, आधुनिकता पहुंची है। पहले जिन सुविधाओं को लोग शहरों में देखते थे, अब वो गांवों में मिलने लगी है। इससे गांव में सुविधा ही नहीं, बल्कि आर्थिक सामर्थ्य भी बढ़ रहा है।

2025 की शुरुआत भी गांवों के लिए, किसानों के लिए बड़े फैसलों के साथ हुई है। सरकार ने प्रधानमंत्री फसल बीमा योजना को जारी रखने का फैसला किया है। इसके तहत अभी तक, करीब पौने 2 लाख करोड़ रुपए की क्लेम राशि किसानों को मिल चुकी है, बीमा का पैसा मिला है। एक और फैसला, DAP खाद को लेकर भी किया गया है, जिसके दाम दुनिया में काफी बढ़ गए हैं। सरकार ने फिर से हजारों करोड़ रुपए की व्यवस्था की है, ताकि किसानों को सस्ती खाद मिलती रहे। बीते दशक में किसानों को सस्ती खाद देने के लिए करीब 12 लाख करोड़ रुपए खर्च किए गए हैं। ये 2014 से पहले के दशक की तुलना में करीब दोगुनी राशि है। प्रधानमंत्री किसान सम्मान निधि, उसके तहत भी अभी तक करीब साढ़े तीन लाख करोड़ रुपए किसानों के खाते में पहुंच चुके हैं। ये किसान कल्याण के प्रति केंद्र सरकार की प्रतिबद्धता को दिखाता है।

विकसित भारत के निर्माण में नारीशक्ति की बहुत बड़ी भूमिका है। इसलिए बीते दशक में हमने माताओं-बेटियों के सशक्तिकरण को, हर बड़ी योजना के केंद्र में रखा है। बैंक सखी और बीमा सखी जैसी योजनाओं ने गांवों में महिलाओं को नए अवसर दिए हैं। लखपति दीदी योजना ने देश में सवा करोड़ से ज्यादा महिलाओं को लखपति दीदी बना दिया है। स्वामित्व योजना ने भी महिलाओं के प्रॉपर्टी राइट्स को और मजबूत किया है। कई राज्यों में प्रॉपर्टी कार्डस में पति के साथ-साथ पत्नियों के नाम भी शामिल किए हैं। कहीं पर पहला नाम पत्नी का है, तो कहीं पर दूसरा नाम है, लेकिन दोनों की भागीदारी से किया है। पीएम आवास योजना के तहत गरीबों को जो घर मिलते हैं, उनमें भी अधिकतर आवास, महिलाओं के नाम पर रजिस्टर किए गए हैं। और ये कितना सुखद संयोग है कि स्वामित्व योजना के ड्रोन भी आज महिलाओं को प्रॉपर्टी राइट्स देने में मदद कर रहे हैं। स्वामित्व योजना में मैपिंग का काम ड्रोन कर रहे हैं। वहीं नमो ड्रोन दीदी योजना से गांव की बहनें, ड्रोन पायलट बन रही हैं। वो ड्रोन से खेती में मदद कर रही हैं इससे उन्हें अतिरिक्त कमाई हो रही है।

स्वामित्व योजना के साथ हमारी सरकार ने गांव के लोगों को एक ऐसा सामर्थ्य दिया है, जो भारत के ग्रामीण जीवन का पूरी तरह कायाकल्प कर सकता है। हमारे गांव, हमारे गरीब, सशक्त होंगे, तो विकसित भारत का हमारा सफर भी सुहाना होगा। बीते दशक में जो भी कदम गांव और गरीब के हित में उठाए गए हैं, उसके कारण 25 करोड़ लोगों ने गरीबी को परास्त किया है। स्वामित्व जैसी योजनाओं से हम गांवों को विकास के मजबूत केंद्र बना पाएंगे। ▪

सम्पत्ति कार्ड से आर्थिक और सामाजिक सशक्तिकरण - मुख्यमंत्री डॉ. यादव

जनकल्याण अंतर्गत समाज के चार स्तंभ - महिला सशक्तिकरण, युवा शक्ति, किसानों और गरीब कल्याण हमारी सर्वोच्च प्राथमिकता में हैं।

प्रदेश सरकार महिला, युवा, गरीब और किसानों की जिंदगी बदलने के लिए लगातार काम कर रही हैं। सरकार ने युवा मिशन और गरीब कल्याण मिशन प्रारंभ किया है।

प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने बिना किसी भेदभाव के लोगों को उनकी सम्पत्ति के स्वामित्व का अधिकार दिया है। यह स्वामित्व का अधिकार सिर्फ भू-अधिकार ही नहीं बल्कि उनके स्वाभिमान का अधिकार है। इससे वे आर्थिक और सामाजिक रूप से सशक्त होंगे।

जनकल्याण अंतर्गत समाज के चार स्तंभ महिला सशक्तिकरण, युवा शक्ति, किसानों और गरीब कल्याण हमारी सर्वोच्च प्राथमिकता में हैं। प्रदेश सरकार महिला, युवा, गरीब और किसानों की जिंदगी बदलने के लिए लगातार काम कर रही हैं। सरकार ने युवा मिशन और गरीब कल्याण मिशन प्रारंभ किया है। इससे युवाओं के लिए रोजगार का प्रबंधन करने की दिशा में कार्य किया जा रहा है। प्रदेश में 2.50 लाख पदों पर भर्ती की जायेगी, जिसमें सभी श्रेणियों के पद भरे जायेंगे। गरीब मिशन के अंतर्गत सभी गरीब परिवार और निम्न आय वर्ग वाले लोगों के लिए पक्के मकान होंगे।

किसान कल्याण अंतर्गत खेती को लाभ का धंधा बनाया जायेगा, खेतों में सिंचाई की क्षमता बढ़ाई जायेगी। हर खेत में पानी पहुंचाने का काम किया जायेगा और हर हाथ को काम दिया जायेगा। पारस पत्थर से सोना बनता है या नहीं यह तो पता नहीं लेकिन सूखे खेतों में पानी पहुंचने से अवश्य ही सोने रूपी फसल तैयार होंगी। हर खेत में माइक्रोलिफ्ट ऐरिगेशन के माध्यम से पानी पहुंचाया जायेगा और पानी की एक-एक बूंद का उपयोग कर किसानों को खुशहाल बनाया जाएगा। 2003-04 में प्रदेश में सिर्फ 7 लाख हेक्टेयर में ही सिंचाई होती थी, अब 48 लाख हेक्टेयर से अधिक सिंचाई का रकबा हो गया है। आने वाले 5 सालों में एक करोड़ हेक्टेयर कृषि रकबे को सिंचित करने का लक्ष्य है।

प्रदेश में सुशासन के साथ नागरिक सुविधाओं का पूरा ध्यान रखा जा रहा है। प्रदेश के विकास के लिए लगातार कल्याणकारी योजनाऐं क्रियान्वित की जा रही है, जिनके माध्यम से प्रदेश में विकास की गंगा बहेगी। सरकार लाड़ली बहना योजना, लाड़ली लक्ष्मी योजना, अटल पेंशन योजना, किसान सम्मान निधि योजना, भू-स्वामित्व अधिकार योजना के साथ अन्य कल्याणकारी योजनाऐं चलाकर जनकल्याण की दिशा में लगातार कार्य कर रही है। ग्रामीण क्षेत्रों में यातायात की सुविधाओं का विस्तार करते हुए अब गांव-गांव परिवहन के लिए बसें चलाने की व्यवस्था की जा रही है। सरकार महिला सशक्तिकरण की दिशा में लगातार काम कर रही है। रानी दुर्गावती की 500वीं जयंती के अवसर पर जबलपुर व संग्रामपुर में केबिनेट की बैठकें कर उन्हें सम्मान दिया गया। इसी प्रकार से रानी अहिल्या बाई की 300वीं जयंती के दृष्टिगत आने वाले समय में सुशासन को लेकर महत्वपूर्ण निर्णय होंगे। दुग्ध उत्पादन को बढ़ावा देने के लिए मध्यप्रदेश सरकार का नवाचार है कि गौ-पालकों को अनुदान की राशि देने के साथ दूध उत्पादन पर बोनस भी दिया जायेगा। गौ-पालन के प्रोत्साहन के लिए सरकार हर संभव प्रयास करेगी। किसानों को धान का बोनस खेत की फसलों के ड्रोन सर्वे के आधार पर दिया जायेगा।

33 करोड़ देवी- देवताओं में हमारी संस्कृति समाहित है। अयोध्या में 500 साल बाद भगवान श्रीराम जिस प्रकार विराजमान हुए, उसी प्रकार प्रदेश में भगवान श्रीकृष्ण ने जहां-जहां गमन किया वहां-वहां तीर्थ स्थल बनाये जायेंगे। अमरकंटक, महेश्वर, उज्जैन, चित्रकूट आदि धार्मिक स्थलों का विकास वहां की परंपराओं के अनुरूप किया जायेगा।

प्रदेश औद्योगिक विकास की ओर अग्रसर है। फरवरी 2025 में होने वाली ग्लोबल इन्वेस्टर्स समिट के पूर्व 7 स्थानों पर रीजनल इंडस्ट्रीज कॉन्क्लेव की हैं, जिनके सार्थक परिणाम सामने आ रहे हैं। संभागीय इंडस्ट्रियल कॉन्क्लेव के बाद जिला स्तर पर भी कॉन्क्लेव होंगी।

धनौरा में शासकीय महाविद्यालय बनाया जायेगा। संजय सरोवर भीमगढ़ में फ्लोटिंग सोलर पैनल स्थापित किये जायेंगे। कांचना मंडी में नहर प्रणाली के कार्य को पूरा कराया जायेगा। सिवनी में इसी वर्ष गो-शाला बनाई जाएगी, जिसमें निराश्रित गायों को संरक्षित किया जायेगा। मेडिकल कॉलेज के सेकण्ड फेस का कार्य शुरू किया जायेगा। ▪

भारत जीवंत धरती और संस्कृति है- नरेन्द्र मोदी

- **दुनियाभर में फैले इस्कॉन के अनुयायी भगवान श्रीकष्ण की भक्ति की डोर से बंधे हैं।**
- **भारत केवल भौगोलिक सीमाओं में बंधा भूमि का एक टुकड़ा मात्र नहीं है बल्कि एक जीवंत धरती और जीवंत संस्कृति है।**
- **भारत को समझने के लिए हमें सबसे पहले आध्यात्म को आत्मसात करना होगा।**
- **हमारी आध्यात्मिक संस्कृति की नींव का प्रमुख आधार सेवा भाव है।**

आध्यात्मिकता में जनार्दन-सेवा और जन-सेवा, एक हो जाते हैं। हमारी आध्यात्मिक संस्कृति साधकों को समाज से जोड़ती है, उनमें करुणा की भावना पैदा करती है। ये भक्ति-भाव उन्हें सेवा-भाव की ओर ले जाता है।

दुनियाभर में फैले इस्कॉन के अनुयायी भगवान श्रीकृष्ण की भक्ति के डोर से बंधे हैं। उन सबको एक-दूसरे से कनेक्ट रखने वाला एक और सूत्र है, जो चौबीसों घंटे हर भक्त को दिशा दिखाता रहता है। ये श्रील प्रभुपाद स्वामी के विचारों का सूत्र है। उन्होंने उस समय वेद-वेदांत और गीता के महत्व को आगे बढ़ाया, जब देश गुलामी की बेड़ियों में जकड़ा था। उन्होंने भक्ति वेदांत को जन सामान्य की चेतना से जोड़ने का अनुष्ठान किया। 70 वर्ष की आयु में जब लोग अपने कर्तव्यों को पूरा मान चुके होते हैं, उस समय उन्होंने इस्कॉन जैसा मिशन शुरू किया। इसके बाद उन्होंने लगातार दुनिया भर का भ्रमण किया, श्रीकृष्ण के संदेश को दुनिया के कोने-कोने में ले गए। आज दुनिया के हर कोने में करोड़ों लोगों को उनकी तपस्या का प्रसाद मिल रहा है। श्रील प्रभुपाद स्वामी की सक्रियता, उनके प्रयास आज भी हमें प्रेरित करते हैं।

हमारा भारत एक असाधारण और अद्भुत भूमि है। भारत केवल भौगोलिक सीमाओं में बंधा भूमि का एक टुकड़ा मात्र नहीं है। भारत एक जीवंत धरती है, एक जीवंत संस्कृति है, जीवंत परंपरा है। और, इस संस्कृति की चेतना है- यहाँ का आध्यात्म! इसलिए, यदि भारत को समझना है, तो हमें पहले आध्यात्म को आत्मसात करना होता है। जो लोग दुनिया को केवल भौतिक दृष्टि से देखते हैं, उन्हें भारत भी अलग-अलग भाषा और प्रांतों का समूह नजर आता है। लेकिन, जब आप इस सांस्कृतिक चेतना से अपनी आत्मा को जोड़ते हैं, तब आपको भारत के विराट रूप के दर्शन होते हैं। तब आप देख पाते हैं, सुदूर पूरब में बंगाल की धरती पर चैतन्य महाप्रभु जैसे संत अवतरित होते हैं। पश्चिम में महाराष्ट्र में संत नामदेव, तुकाराम, और ज्ञानदेव जैसे संतों का अवतरण होता है। चैतन्य महाप्रभु ने महावाक्य मंत्र जन-जन तक पहुंचाया। महाराष्ट्र के संतों ने 'रामकृष्ण हरी', रामकृष्ण हरी के मंत्र से आध्यात्मिक अमृत बांटा। संत ज्ञानेश्वर ने ज्ञानेश्वरी गीता के जरिए भगवान कृष्ण के गूढ़ ज्ञान को जनसुलभ बनाया।

इसी तरह, श्रील प्रभुपाद जी ने इस्कॉन के माध्यम से गीता को लोकप्रिय बनाया। गीता की टीकाएं प्रकाशित कर उसकी भावना से लोगों को जोड़ा। अलग-अलग स्थानों पर जन्में ये सभी संत अपने-अपने तरीके से कृष्ण भक्ति की धारा को गति देते रहे हैं। इन संतों के जन्मकाल में वर्षों का अंतर है, अलग-अलग भाषा, अलग-अलग पद्धति है, लेकिन, बोध एक है, विचार एक है, चेतना एक है। सभी ने भक्ति के प्रकाश से समाज में नए प्राण फूंके, उसे नई दिशा दी, अविरत ऊर्जा दी।

हमारी आध्यात्मिक संस्कृति की नींव का प्रमुख आधार सेवा भाव है। आध्यात्मिकता में जनार्दन-सेवा और जन-सेवा, एक हो जाते हैं। हमारी आध्यात्मिक संस्कृति साधकों को समाज से जोड़ती है, उनमें करुणा की भावना पैदा करती है। ये भक्ति-भाव उन्हें सेवा-भाव की ओर ले जाता है।

दातव्यम् इति यत् दानम दीयते
अनुपकारिणे देशे काले च पात्रे च तत्
दानं सात्त्विकं स्मृतम्।।

श्री कृष्ण ने इस श्लोक में सच्ची सेवा का मतलब बताया है। उन्होंने बहुत सुंदर तरीके से समझाया है कि सच्ची सेवा वही है, जिसमें आपका कोई स्वार्थ न हो। हमारे सभी धार्मिक ग्रंथों और शास्त्रों के मूल में भी सेवा भावना है। इस्कॉन जैसी इतनी विराट संस्था भी, इसी सेवा भावना से काम करती है। शिक्षा, स्वास्थ्य, और

पर्यावरण से जुड़े कितने ही काम आपके प्रयासों से होते हैं। कुम्भ में इस्कॉन सेवा के कई बड़े कार्य कर रहा है।

हमारी सरकार भी इसी सेवा भावना के साथ पूरे समर्पण से लगातार देशवासियों के हित में काम कर रही है। हर घर में शौचालय बनवाना, हर गरीब महिला को उज्ज्वला का गैस कनेक्शन देना, हर घर तक नल से जल की सुविधा पहुंचाना, हर गरीब को 5 लाख रुपए तक मुफ्त इलाज की सुविधा देना, 70 वर्ष की आयु से ऊपर के हर बुजुर्ग को इस सुविधा के दायरे में लाना, हर बेघर को पक्के घर देना, ये इसी सेवा भावना के साथ, इसी समर्पण भाव के साथ किए गए कार्य हैं, जो मेरे लिए हमारी महान सांस्कृतिक परंपरा का प्रसाद है। सेवा की यही भावना, सच्चा सामाजिक न्याय लाती है, सच्चे सेक्यूलरिज्म का प्रतीक है।

हमारी सरकार कृष्ण सर्किट के माध्यम से देश के अलग-अलग तीर्थों, धार्मिक स्थानों को जोड़ रही है। इस सर्किट का विस्तार गुजरात, राजस्थान, हरियाणा, उत्तर प्रदेश और ओडिशा तक है। स्वदेश दर्शन और प्रसाद योजना के द्वारा इन स्थानों को विकसित किया जा रहा है। इन मंदिरों में भगवान श्रीकृष्ण के अलग-अलग रूपों के दर्शन होते हैं। कहीं वो बाल रूप में दिखते हैं, तो कहीं उनके साथ राधा रानी की भी पूजा होती है। किसी मंदिर में उनका कर्मयोगी स्वरूप दिखाई देता है, तो कहीं राजा के रूप में उनकी पूजा की जाती है। हमारा प्रयास है कि भगवान श्री कृष्ण के जीवन से जुड़े अलग-अलग स्थलों तक पहुंचना और मंदिरों के दर्शन करना आसान हो। इसके लिए विशेष ट्रेनें भी चलाई जा रही हैं।

पिछले एक दशक में देश में विकास और विरासत को एक साथ गति मिली है। विरासत से विकास के इस मिशन को इस्कॉन जैसी संस्थाओं का महत्वपूर्ण सहयोग मिल रहा है। हमारे मंदिर या धार्मिक स्थल तो सदियों से सामाजिक चेतना के केंद्र रहे हैं। हमारे गुरुकुलों का शिक्षा और कौशल विकास को बढ़ावा देने में अहम् योगदान रहा है।

इस्कॉन भी अपने कार्यक्रमों के जरिए युवाओं को प्रेरित करता है कि वो आध्यात्म को अपने जीवन का हिस्सा बनाएं। और अपनी परंपरा पर चलते हुए, इस्कॉन के युवा साधक कैसे आधुनिक टेक्नोलॉजी को आत्मसात करते हैं, ये देखना और अद्भुत होता है। इस्कॉन के सानिध्य में युवा सेवा और समर्पण की भावना से राष्ट्रहित में काम करेंगे। हम सब देख रहे हैं कि वर्तमान समाज जितना आधुनिक हो रहा है, उतनी ही उसे संवेदनशीलता की भी जरूरत है। हमें संवदेनशील इंसानों का समाज तैयार करना है। एक ऐसा समाज जो मानवीय गुणों के साथ आगे बढ़े। एक ऐसा समाज जहां अपनेपन की भावना का विस्तार हो। इस्कॉन जैसी संस्था अपने भक्ति वेदांत के माध्यम से दुनिया की संवेदनशीलता को नया प्राण दे सकती है। अपनी क्षमताओं का उपयोग कर, पूरी दुनिया में मानवीय मूल्यों का विस्तार कर सकती है। प्रभुपाद स्वामी के आदर्शों को जीवंत बनाए रखने के लिए इस्कॉन के महानुभाव इसी तरह हमेशा तत्पर रहेंगे। ▪

संविधान हमें दायित्वों का स्मरण कराता है -विष्णुदत्त शर्मा

- **प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी ने बाबा साहब के विचारों को आगे बढ़ाने का काम किया।**
- **प्रधानमंत्री जी भारत को सशक्त और सक्षम बनाने का लगातार प्रयास कर रहे हैं**

गणतंत्र दिवस हमें लोकतांत्रिक मूल्यों और देश के संविधान के प्रति अपने दायित्वों, कर्तव्यों और जिम्मेदारियों का स्मरण कराता है। हमें संविधान को और मजबूत बनाते हुए अपने कर्तव्यों और जिम्मेदारियों को लेकर आगे बढ़ना है। गणतंत्र दिवस पर हम अपनी-अपनी जिम्मेदारियों को निभाने का संकल्प लेकर आगे बढ़ने का प्रयास करेंगे,ताकि हमारा देश मजबूती के साथ आगे बढ़ता रहे। दिग्विजय सिंह जैसे लोग 24 घंटे झूठ की रणनीति कर समाज में नकारात्मकता फैलाने का काम करते हैं। दिग्विजय सिंह जैसे व्यक्ति हमें बताऐं कि बाबा साहब का सम्मान किसने किया है। पूरे देश एवं प्रदेश कि जनता जानती है कि जब दिग्विजय सिंह 10 साल तक प्रदेश के मुख्यमंत्री रहे तो एक भी बार बाबा साहब की जन्मस्थली महू क्यों नहीं गए। दिग्विजय सिंह एवं कांग्रेस के नेताओं ने हमेशा बाबा साहब का अपमान किया। कांग्रेस की सरकार ने देश में आपातकाल लगाकर लोकतंत्र एवं संविधान की हत्या करने का महापाप किया था। कांग्रेस के नेता बाबा साहब डॉ. भीमराव अंबेडकर की जन्मस्थली महू जाने का नाटक कर रहे हैं, उन्हें यहां आने से पहले बाबा साहब से क्षमायाचना करनी चाहिए। बाबा साहब को सम्मान देने का काम प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में भाजपा सरकारों ने ही किया है। डॉ. अंबेडकर की जन्मस्थली से लेकर उनसे जुड़े स्थलों को पंचतीर्थ के रूप में विकसित करने का काम भाजपा सरकार के समय ही हुआ है। ▪

भारत को फिर बनाएंगे सोने की चिड़िया : मुख्यमंत्री

भारत को एक बार फिर सोने की चिड़िया बनाएंगे। वर्ष 2014 में जब मोदी जी की सरकार बनी थी, भारत की अर्थव्यवस्था के समक्ष गंभीर चुनौतियां थीं।

भारत विश्व की 11वीं अर्थव्यवस्था था। अपनी आंतरिक शक्तियों, अनंत संभावनाओं को पहचाना और आधुनिक तकनीक का इस्तेमाल करते हुए तेजी से आगे बढ़ रहे हैं। मध्यप्रदेश में भी तेज गति से विकास हो रहा है। मध्यप्रदेश में आने वाले 5 वर्षों में जीडीपी को दोगुना करने वाले हैं।

- **शहडोल कॉन्क्लेव में 32,520 करोड़ के निवेश प्रस्ताव हुए प्राप्त।**
- **30 हजार से अधिक का होगा रोजगार सृजन।**
- **सरलता, सुगमता के साथ व्यापार व्यवसाय की औद्योगिक नीति।**
- **प्रदेश में एक-एक युवा को उसकी योग्यता, दक्षता के अनुरूप मिलेगा रोजगार।**
- **विकास का अर्थ केवल भौतिक अधोसंरचनात्मक विकास नहीं बल्कि सभी वर्गों का कल्याण भी है।**
- **उद्योगपति और निवेशकों के साथ हुआ नीति-संवाद।**
- **51 हेक्टेयर में विकसित होने वाले औद्योगिक पार्क गोहपारू का हुआ भूमि-पूजन।**
- **18 हजार करोड़ लागत और 1600 मेगावॉट क्षमता के थर्मल प्लांट के लिये हुआ अनुबंध।**
- **102 इकाइयों को 401 एकड़ भूमि के आवंटन आदेश किये वितरित।**

प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के कुशल नेतृत्व में उद्यमशीलता के माध्यम से भारत को एक बार फिर सोने की चिड़िया बनाएंगे। वर्ष 2014 में जब मोदी जी की सरकार बनी थी, भारत की अर्थव्यवस्था के समक्ष गंभीर चुनौतियां थीं। भारत विश्व की 11वीं अर्थव्यवस्था था। अपनी आंतरिक शक्तियों, अनंत संभावनाओं को पहचाना और आधुनिक तकनीक का इस्तेमाल करते हुए तेजी से आगे बढ़ रहे हैं। मध्यप्रदेश में भी तेज गति से विकास हो रहा है। मध्यप्रदेश में आने वाले 5 वर्षों में जीडीपी को दोगुना करने वाले हैं।

उद्योगपति **''सर्वे भवंतु सुखिनः''** की सनातन संस्कृति को चरितार्थ करते हैं। एक योद्धा जिस प्रकार युद्ध में देश के लिए अपना सर्वस्व अर्पण कर देता है उसी प्रकार एक उद्यमी कई परिवारों का भला करता है। यदि सभी अपनी-अपनी भूमिका को ठीक ढंग से निभाएं तो सभी का कल्याण होगा और देश तरक्की करेगा। अपने लिए जिए तो क्या जिए, सभी के कल्याण के लिए जीना है।

सरलता, सुगमता के साथ व्यापार, व्यवसाय राज्य की औद्योगिक नीति है। राज्य में उद्योगों के अनुकूल वातावरण है। उद्योगों को सहकार, सहयोग और सम्मान देते हैं। राज्य में औद्योगिक श्रमिकों की कोई परेशानी नहीं है। पर्यटन,

सरलता, सुगमता के साथ व्यापार, व्यवसाय राज्य की औद्योगिक नीति है। राज्य में उद्योगों के अनुकूल वातावरण है। उद्योगों को सहकार, सहयोग और सम्मान देते हैं।

आईटी सेक्टर और रेडीमेड गारमेंट्स आदि क्षेत्रों में उद्योगों को विशेष इंसेन्टिव दिए जाते हैं। रेडीमेड गारमेंट्स में 200 प्रतिशत तक मदद दी जाती है और 10 वर्ष तक 5 हजार रूपये प्रति मजदूर इंसेन्टिव भी दिया जाता है।

प्रदेश में प्रत्येक युवा को उसकी योग्यता और दक्षता के अनुरूप रोजगार मिलेगा। मध्यप्रदेश में पिछले कुछ समय में 6 रीजनल इंडस्ट्रीज कॉन्क्लेव आयोजित किये गए हैं, जिनमें 04 लाख करोड़ रुपए से अधिक का निवेश आया है, इनसे 3 लाख लोगों को रोजगार के अवसर प्राप्त होंगे। मध्यप्रदेश में आगामी 24 फरवरी को ग्लोबल इन्वेस्टर्स कॉन्क्लेव आयोजित की गई है। विभिन्न क्षेत्रों में निवेश की संभावनाओं को तलाशते हुए, सभी विभाग अपनी नीतियां बना रहे हैं, जो शीघ्र ही तैयार हो जाएंगी। प्रदेश में नव उद्यमिता (स्टार्ट-अप) को बढ़ावा दिया जा रहा है।

विकास का अर्थ केवल भौतिक अधोसंरचनाओं का विकास नहीं है, समाज के सभी वर्गों के कल्याण के लिए सरकार कार्य कर रही है। प्रधानमंत्री श्री मोदी ने गरीब, युवा, महिला और किसानों के कल्याण के लिए मिशन प्रारंभ किया है, जिस पर राज्य में तेजी से कार्य हो रहा है। शहडोल, अनूपपुर, उमरिया क्षेत्र धार्मिक रूप से महत्वपूर्ण हैं, परंतु इस क्षेत्र का विकास कहीं न कहीं रुका हुआ था। अब इनके विकास का समय आया है, आगामी वर्षों में यहां सर्वांगीण विकास होगा। प्रदेश में संतुलित विकास की दिशा में कदम बढ़ाने के उद्देश्य से प्रदेश की 7वीं रीजनल इंडस्ट्रीज कान्क्लेव ''अपार संभावनाओं की भूमि'' शहडोल में आयोजित हुई। मध्यप्रदेश की अग्रसर औद्योगिक नीति और अनुकूल औद्योगिक वातावरण से निवेश के निरंतर प्रस्ताव प्राप्त हो रहे है, जो कि प्रगतिशील औद्योगिक नीति का प्रत्यक्ष प्रमाण है। शहडोल को औद्योगिक हब के रूप में विकसित करना लक्ष्य है जो मध्यप्रदेश ही नहीं अपितु पूरे देश का औद्योगिक केन्द्र बनें। राज्य सरकार उद्योगपतियों और निवेशकों को हर संभव सहायता और सहयोग करेगी, जिससे क्षेत्र का समग्र विकास हो सकें। ▪

श्री जगत प्रकाश नड्डा ने राष्ट्रीय ध्वज फहराया

- **माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के यशस्वी नेतृत्व में ''विकसित भारत'' का संकल्प अंत्योदय के स्वरूप में अंतिम व्यक्ति के उन्नति का माध्यम बना है।**
- **लोकतंत्र की जननी हमारा भारत गणतांत्रिक राष्ट्र के स्वरूप में संपूर्ण विश्व का प्रतिनिधि है।**
- **हम लोग मिलकर राष्ट्र के संवैधानिक मूल्यों को सशक्त और सार्वभौमिक बनाने का संकल्प लें।**

माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के यशस्वी नेतृत्व में ''विकसित भारत'' का हमारा संकल्प अंत्योदय के स्वरूप में अंतिम व्यक्ति के उन्नति का माध्यम बना है। माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के आह्वान पर अमृतकाल में देश के युवा, किसान, आदिवासी, दलित समेत सभी लोग भारत को विकसित राष्ट्र बनाने के लिए संकल्पित हैं। लोकतंत्र की जननी हमारा भारत गणतांत्रिक राष्ट्र के स्वरूप में संपूर्ण विश्व का प्रतिनिधि है। हम लोग मिलकर राष्ट्र के संवैधानिक मूल्यों को सशक्त और सार्वभौमिक बनाने का संकल्प लें। हम लोगों का कर्तव्य है कि सभी लोग मिलकर भारत को विकसित राष्ट्र बनाने में कोई कसर नहीं छोड़े और देश के सभी लोगों को अपने साथ लेकर इस भव्य यात्रा में पूरा योगदान करें। हम सभी लोग राष्ट्र के सर्वांगीण विकास और संवैधानिक मूल्यों को सशक्त करने के लिए समर्पित हैं। ▪

भगवान श्री राम जी की प्राण प्रतिष्ठा ऐतिहासिक - विष्णुदत्त शर्मा

भगवान श्री राम जी की प्राण प्रतिष्ठा का दिन पूरी दुनिया के लिए ऐतिहासिक और उत्साह से भरा हुआ है। पिछले 500 वर्षों में करोड़ों लोगों के संघर्ष, लंबे इंतजार और बड़ी संख्या में लोगों के बलिदान के बाद 1 वर्ष पूर्व प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी की उपस्थिति में अयोध्या में भगवान रामलला की प्राण प्रतिष्ठा हुई थी। पूरी दुनिया में हिंदू समाज और समस्त भारतीयों के लिए यह ऐतिहासिक दिन है। ▪

बबली की दिवाली

अटल बिहारी वाजपेयी

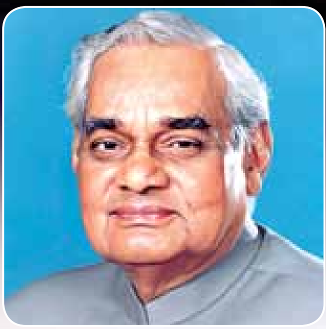

बबली, लौली कुत्ते दो,
कुत्ते नहीं खिलौने दो,

लंबे-लंबे बालों वाले,
फूले-पिचके गालों वाले।

कद छोटा, खोटा स्वभाव है,
देख अजनबी बड़ा ताव है,

भागे तो बस शामत आई,
मुँह में झटपट पैण्ट दबाई।

दौड़ो मत, ठहरो ज्यों के त्यों,
थोड़ी देर करेंगे भौं-भौं।

डरते हैं इसलिए डराते।
सूँघ-साँघ कर खुश हो जाते

इन्हें तनिक-सा प्यार चाहिए,
नजरों में एतबार चाहिए,

गोदी में चढ़कर बैठेंगे,
हँसकर पैरों में लोटेंगे।

पाँव पसार पलंग पर सोते,
अगर उतारो मिलकर रोते;

लेकिन नींद बड़ी कच्ची है,
पहरेदारी में सच्ची है।

कहीं जरा-सा होता खटका,
कूदे, भागे, मारा झटका,

पटका लैम्प, सुराही तोड़ी,
पकड़ा चूहा, गर्दन मोड़ी।

बिल्ली से दुश्मनी पुरानी,
उसे पकड़ने की है ठानी,

पर बिल्ली है बड़ी सयानी,
आखिर है शेरों की नानी,

ऐसी सरपट दौड़ लगाती,
कुत्तों से न पकड़ में आती।

बबली माँ है, लौली बेटा,
मां सीधी है, बेटा खोटा,

पर दोनों में प्यार बहुत है,
प्यार बहुत, तकरार बहुत है।

लड़ते हैं इन्सानों जैसे,
गुस्से में हैवानों जैसे,

लौली को कीचड़ भाती है,
व्यर्थ बसंती नहलाती है।

लोट-पोट कर करें बराबर,
फिर बिस्तर पर चढ़ें दौड़कर,

बबली जी चालाक, चुस्त हैं,
लौली बुद्धू और सुस्त हैं।

घर के ऊपर बैठा कौवा,
बबली जी को जैसे हौवा,

भौंक-भौंक कोहराम मचाती,
आसमान सर पर ले आती।

जब तक कौवा भाग न जाता,
बबली जी को चैन न आता,

आतिशबाजी से घबराते,
बिस्तर के नीचे छुप जाते।

एक दिवाली ऐसी आई,
बबली जी ने दौड़ लगाई,

बदहवास हो घर से भागी,
तोड़े रिश्ते, ममता त्यागी।

कोई सज्जन मिले सड़क पर,
मोटर में ले गए उठाकर,

रपट पुलिस में दर्ज करायी,
अखबारों में खबर छपाई।

लौली जी रह गए अकेले,
किससे झगड़ें, किससे खेलें,

बजी अचानक घंटी टन-टन,
उधर फोन पर बोले सज्जन।

क्या कोई कुत्ता खोया है?
रंग कैसा, कैसा हुलिया है?

बबली जी का रूप बखाना,
रंग बखाना, ढंग बखाना।

बोले आप तुरन्त आइए,
परेशान हूं, रहम खाइए;

जब से आई है, रोती है,
ना खाती है, ना सोती है;

मोटर लेकर सरपट भागे,
नहीं देखते पीछे, आगे;

जा पहुँचे जो पता बताया,
धर घंटी का बटन दबाया;

बबली की आवाज सुन पड़ी,
द्वार खुला, सामने आ खड़ी;

बदहवास सी सिमटी-सिमटी,
पलभर ठिठकी, फिर आ लिपटी,

घर में लहर खुशी की छायी,
मानो दीवाली फिर आई;

पर न चलेगी आतिशबाजी,
कुत्ता पालो मेरे भ्राजी।

देवी अहिल्या नारी सशक्तिकरण मिशन स्वीकृत

प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने देश के विकास में चार वर्गों - युवा, महिला, किसान और गरीब को आधार स्तम्भ के रूप में परिभाषित किया है। इसी अनुक्रम में देवी अहिल्या नारी सशक्तिकरण मिशन प्रारम्भ किया जाएगा। महिलाओं के समग्र सामाजिक-आर्थिक विकास के उद्देश्य से विमेन लीड डेवलपमेंट प्रयास को समन्वित रूप से लागू करने के लिए देवी अहिल्या नारी सशक्तिकरण मिशन के क्रियान्वयन का सैद्धांतिक अनुमोदन दिया है।

मिशन के प्रमुख उद्देश्यों में महिलाओं और बालिकाओं की शिक्षा, स्वास्थ्य, पोषण, आर्थिक विकास एवं सुरक्षा, महिलाओं एवं बालिकाओं तक विभिन्न सरकारी सेवाओं की पहुंच सुनिश्चित करना, महिलाओं के आर्थिक स्वावलम्बन व समाज में आर्थिक भागीदारी बढ़ाने के लिए एकीकृत प्रयास करना, समाज में महिलाओं और बालिकाओं के प्रति सकारात्मक व्यवहार परिवर्तन के लिए पुरुषों में संवेदनशीलता बढ़ाने वाली जागरूकता विकसित किया जाना शामिल है। मिशन के प्रमुख लक्ष्यों में जन्म के समय लिंगानुपात में 5 अंक प्रति हजार की वृद्धि करना, बालिकाओं की 10 या उससे अधिक वर्षों की स्कूली शिक्षा में 5 प्रतिशत की वृद्धि करना, मातृ-मृत्यु दर में 10 अंक की कमी लाना, महिला के विरुद्ध अपराध में 5 अंक की कमी लाना, बाल विवाह को रोकने और महिला श्रमबल भागीदारी दर में 3 प्रतिशत की वृद्धि करना शामिल है।

देवी अहिल्या नारी सशक्तिकरण मिशन के प्रमुख घटक में स्वास्थ्य एवं पोषण, शिक्षा और जीवन कौशल, आर्थिक स्वावलंबन, सुरक्षा एवं संरक्षण और संवाद से व्यवहार परिवर्तन है।

मंत्रि-परिषद ने प्रदेश में कृषक/ कृषकों के समूह को कृषि पम्प कनेक्शन प्रदान करने के लिए ''प्रधानमंत्री कृषक मित्र सूर्य योजना'' में वर्तमान में प्रचलित ''मुख्यमंत्री कृषक मित्र योजना'' अंतर्गत सोलर कृषि पम्प भी सम्मिलित किए जाने का निर्णय लिया है। निर्णय अनुसार ''प्रधानमंत्री कृषक मित्र सूर्य योजना'' की अनुदान व्यवस्था को संशोधित किया गया है। अब योजना में परियोजना लागत का श्रेणीवार 5 प्रतिशत अथवा 10 प्रतिशत कृषक द्वारा मार्जिन मनी के रूप में दिया जाएगा। शेष राशि के लिए कृषक द्वारा ऋण लिया जाएगा, जिस ऋण के भुगतान का संपूर्ण दायित्व राज्य शासन का होगा। राज्य शासन द्वारा उक्त ऋण का भुगतान सोलर कृषि पंप लगने की वजह से कृषि उपभोक्ताओं के लिए ''अटल कृषि ज्योति योजना'' एवं अन्य योजनाओं के अंतर्गत वितरण कंपनियों को देय सब्सिडी में हुई बचत से ऋण का भुगतान किया जा सकेगा। योजना के प्रथम चरण में अस्थायी विद्युत संयोजन वाले उपभोक्ताओं अथवा अविद्युतिकृत कृषकों को सोलर पंप का लाभ दिया जाएगा। योजना के आगामी चरणों में स्थायी विद्युत पंप उपयोग कर रहे कृषकों को भी सोलर पंप दिया जाना प्रस्तावित है। इसका क्रियान्वयन राज्य में मध्यप्रदेश ऊर्जा विकास निगम द्वारा केन्द्र सरकार की ''कुसुम योजना'' के घटक 'ब' अंतर्गत किया जायेगा। सोलर पम्प की स्थापना से विद्युत पम्पों को विद्युत प्रदाय के लिए राज्य सरकार पर अनुदान के भार को सीमित किया जा सकेगा एवं विद्युत वितरण कम्पनियों की वितरण हानियों को कम किया जा सकेगा।

देवी अहिल्या नारी सशक्तिकरण मिशन के प्रमुख घटक में स्वास्थ्य एवं पोषण, शिक्षा और जीवन कौशल, आर्थिक स्वावलंबन, सुरक्षा एवं संरक्षण और संवाद से व्यवहार परिवर्तन है।

मंत्रि-परिषद ने प्रदेश में एनीमेशन, विजुअल इफेक्ट्स, गेमिंग कॉमिक्स और विस्तारित रियलिटी क्षेत्र के विकास को बढ़ावा देने के लिए ''मध्यप्रदेश एनीमेशन, विजुअल इफेक्ट्स, गेमिंग कॉमिक्स और विस्तारित रियलिटी (एवीजीसी/एक्सआर) नीति-2025'' जारी किये जाने का निर्णय लिया है।

एवीजीसी/ एक्सआर नीति-2025 लागू किए जाने से एवीजीसी-एक्सआर उद्योग के लिए राज्य में एक स्थायी पारिस्थितिकी-तंत्र का निर्माण होगा, जिसके परिणामस्वरूप राज्य में निवेश बढ़ेगा और रोजगार के अवसर पैदा होंगे। यह नीति एवीजीसी क्षेत्र को बढ़ावा देकर राज्य को कई लाभ प्रदान कर सकती है। इससे न केवल युवाओं के लिए हजारों नौकरियों का सृजन होगा बल्कि राज्य की अर्थव्यवस्था को भी गति मिलेगी। इससे कौशल विकास को बढ़ावा मिलेगा और राज्य को इस क्षेत्र में विश्व स्तरीय उत्पादन केंद्र बनाने में मदद मिलेगी। ▪

भारतीय जनता पार्टी के प्रदेश अध्यक्ष व सांसद श्री विष्णुदत्त शर्मा ने कैबिनेट में लिए गए निर्णयों को लेकर मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव का जताया आभार

- धार्मिक नगरों में पूर्ण शराबबंदी का निर्णय नगरों की पवित्रता बनाए रखने का ऐतिहासिक कदम।
- मुख्यमंत्री का फैसला भाजपा सरकार के शराबबंदी की ओर बढ़ते कदम को परिलक्षित करता है।
- बाबा साहब व अहिल्याबाई के सामाजिक समरसता से प्रेरणा लेकर कार्य कर रही भाजपा सरकार।
- किसानों के कल्याण व नारी सशक्तिकरण के लिए भाजपा सरकार प्रतिबद्ध।

मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव की भाजपा सरकार युवा और किसानों के कल्याण के लिए मिशन मोड पर कार्य कर रही है।

देवी अहिल्याबाई होल्कर की 300वीं जयंती पर उन्हें सम्मान देने महेश्वर में केबिनेट बैठक हुई है।

मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव की अध्यक्षता में महेश्वर में आयोजित कैबिनेट की बैठक में प्रदेश के उज्जैन सहित 17 धार्मिक नगरों में पूर्ण शराबबंदी का ऐतिहासिक निर्णय मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव की दृढ़ इच्छा शक्ति और भाजपा सरकार के शराबबंदी की ओर बढ़ते कदम को परिलक्षित करता हैं। मध्यप्रदेश की भाजपा सरकार का यह निर्णय धार्मिक नगरों की पवित्रता को बनाए रखने के लिए ऐतिहासिक कदम है। जिन धार्मिक नगरों में पूर्ण शराबबंदी का निर्णय लिया गया है, वहां की शराब दुकानों को कहीं अन्यत्र शिफ्ट नहीं किया जाएगा, बल्कि दुकानें पूरी तरह से बंद की जाएंगी। मध्यप्रदेश सरकार का यह निर्णय यह दर्शाता है कि सरकार जनभावनाओं को ध्यान में रखकर उनका सम्मान करते हुए कार्य करती है। इस निर्णय से प्रदेश में नशे की प्रवृत्ति पर रोक लगेगी, साथ ही धार्मिक स्थलों, आध्यात्म व संस्कृति के संरक्षण के लिए किए जा रहे कार्यों को और गति मिलेगी। बाबा साहब डॉ. भीमराव अंबेडकर के सामाजिक समरसता और देवी अहिल्याबाई होल्कर के नारी सशक्तिकरण के कार्यों से प्रेरणा लेकर मध्यप्रदेश की भाजपा सरकार कार्य कर रही है।

मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव की कैबिनेट की बैठक में बाबा साहब डॉ. अंबेडकर की जन्म स्थली महू में स्थित डॉ. अंबेडकर विश्वविद्यालय के विधि संकाय को सेंटर फॉर एक्सीलेंस के रूप में विकसित करने के लिए 25 करोड़ रुपए मंजूर किए गए हैं। बाबा साहब विधि के छात्र थे, उन्हें कानून की पढ़ाई से बहुत लगाव था, इसलिए उनके सम्मान स्वरूप डॉ. अंबेडकर विवि के विधि संकाय को सेंटर फॉर एक्सीलेंस के रूप में विकसित किया जा रहा है। कांग्रेस ने समय-समय पर बाबा साहब डॉ. भीमराव अंबेडकर को अपमानित करने का कार्य किया है। कांग्रेस ने देश में 55 वर्ष शासन किया, लेकिन संविधान बनाने वाले बाबा साहब को कांग्रेस ने कभी भारत रत्न नहीं मिलने दिया। देश की जनता यह जानती है कि बाबा साहब के विचारों को जमीन पर उतारने का कार्य कोई कर रहा है तो वह देश के प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी और केंद्रीय गृह एवं सहकारिता मंत्री श्री अमित शाह जी कर रहे हैं। प्रधानमंत्री जी के नेतृत्व में भाजपा बाबा साहब के विचारों को जमीन पर उतार रही है। सामाजिक समरसता के प्रतीक बाबा साहब की जन्मस्थली सहित उनसे जुड़े स्थानों को पंच तीर्थ के रूप में विकसित करने का कार्य भाजपा सरकार ने ही किया है।

मध्यप्रदेश की कैबिनेट ने सिंचाई के लिए तीन से साढ़े सात हार्स पॉवर तक के अस्थाई कनेक्शन लेने वाले किसानों को 10 प्रतिशत राशि देने पर सोलर पंप देने का निर्णय लिया है। यह निर्णय किसानों को आत्मनिर्भर बनाने की दिशा में मील का पत्थर साबित होगा। प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी ने देश में केवल चार जातियां बताई है, गरीब, युवा, किसान और महिला। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव की भाजपा सरकार युवा और किसानों के कल्याण के लिए मिशन मोड पर कार्य कर रही है। देवी अहिल्याबाई होल्कर की 300वीं जयंती पर उन्हें सम्मान देने महेश्वर में केबिनेट बैठक हुई है। कैबिनेट में नारी सशक्तिकरण के लिए मिशन मोड पर कार्य करने का सराहनीय निर्णय लिया गया है। लिंगानुपात में वृद्धि, बाल विवाह रोकने, मातृ मृत्युदर को कम करने के साथ महिलाओं के आर्थिक सशक्तिकरण के लिए कई निर्णय लिए गए हैं, जो महिलाओं के कल्याण के लिए दूरगामी परिणाम देंगे। कैबिनेट ने कल्याणी व परित्यक्ता महिलाओं के जीवन को संवारने का भी निर्णय लिया है। ऐसी महिलाओं को शादी करने पर 2 लाख रूपए राज्य सरकार देगी, जिससे कल्याणी व परित्यक्ता महिलाएं फिर से अपनी जिंदगी शुरू कर सकेंगी। ▪

भारत की युवा शक्ति के सामर्थ्य से होगा "विकसित भारत" का निर्माण-नरेन्द्र मोदी

- **भारत की युवा शक्ति उल्लेखनीय परिवर्तन ला रही है, विकसित भारत युवा नेता संवाद एक प्रेरक मंच के रूप में कार्य करता है, जो एक विकसित भारत को आकार देने हेतु हमारे युवाओं की ऊर्जा और रचनात्मक भावना को एकजुट करता है।**
- **भारत की युवा शक्ति का सामर्थ्य भारत को एक विकसित राष्ट्र बनाएगा।**
- **भारत विभिन्न क्षेत्रों में अपने लक्ष्य तय समय से भी पहले हासिल कर रहा है।**
- **महत्वाकांक्षी लक्ष्यों की प्राप्ति के लिए देश के प्रत्येक नागरिक की सक्रिय भागीदारी और सामूहिक प्रयास आवश्यक है।**
- **भारत के युवाओं के विचारों का दायरा बहुत व्यापक है।**
- **विकसित भारत आर्थिक, सामरिक, सामाजिक और सांस्कृतिक रूप से सशक्त होगा।**
- **भारत की युवा शक्ति विकसित भारत के सपने को जरूर साकार करेगी।**

मेरे लिए मेरे देश के नौजवानों के साथ मित्रता का वो ही नाता है, वो ही रिश्ता है। और मित्रता की सबसे मजबूत कड़ी होती है- विश्वास।

मुझे भी आप पर बहुत विश्वास है। इसी विश्वास ने मुझे, मेरा युवा भारत यानि MYBharat के गठन की प्रेरणा दी।

पूरा देश, स्वामी विवेकानंद जी को याद कर रहा है, स्वामी जी को प्रणाम कर रहा है। स्वामी विवेकानंद को देश के नौजवानों पर बहुत भरोसा था। स्वामी जी कहते थे - मेरा विश्वास युवा पीढ़ी में है, नई पीढ़ी में है। स्वामी जी कहते थे मेरे कार्यकर्ता नौजवान पीढ़ी से आएंगे, सिंहों की भांति वे हर समस्या का समाधान निकालेंगे। और जैसे विवेकानंद जी का आप पर भरोसा था, मेरा विवेकानंद जी पर भरोसा है, उनकी कही हर बात पर भरोसा है। उन्होंने भारत के नौजवानों के लिए जो सोचा है, जो कहा है, मेरा उसमें अंधविश्वास है। आज अगर स्वामी विवेकानंद जी, सशरीर हमारे बीच होते, तो 21वीं सदी के युवा की इस जागृत शक्ति को देखकर, सक्रिय प्रयासों को देखकर, वो भारत में एक नया विश्वास भर देते, नई ऊर्जा भर देते और नए सपनों के बीज बो देते।

कुछ महीने पहले मैं अपने निवास पर युवा खिलाड़ियों से मिला था, तो एक खिलाड़ी ने खड़े होकर के कहा- कि मोदी जी दुनिया के लिए आप भले प्रधानमंत्री होंगे, पीएम होंगे, लेकिन हमारे लिए तो पीएम का मतलब है- परम मित्र।

मेरे लिए मेरे देश के नौजवानों के साथ मित्रता का वो ही नाता है, वो ही रिश्ता है। और मित्रता की सबसे मजबूत कड़ी होती है- विश्वास। मुझे भी आप पर बहुत विश्वास है। इसी विश्वास ने मुझे, मेरा युवा भारत यानि MYBharat के गठन की प्रेरणा दी। इसी विश्वास ने विकसित भारत यंग लीडर डायलॉग का आधार बनाया। मेरा ये विश्वास कहता है- भारत की युवाशक्ति का सामर्थ्य, भारत को जल्द से जल्द विकसित राष्ट्र बनाएगा।

आंकड़ों का जो जोड़-भाग करते रहते हैं, उनको लगता होगा, ये सब बहुत मुश्किल है, लेकिन मेरी आत्मा कहती है, आप सबके भरोसे से कहती हैं कि लक्ष्य बड़ा जरूर है, लेकिन असंभव नहीं है। जब करोड़ों युवाओं की भुजाएं, विकास रथ के पहिए को आगे बढ़ा रही हैं, तो हम जरूर लक्ष्य पर पहुंचकर रहेंगे।

कहते हैं इतिहास हमें भी सीख देता है, हमें प्रेरणा भी देता है। दुनिया में ऐसे अनेक उदाहरण हैं, जब किसी देश ने, किसी समुदाय ने, समूह ने बड़े सपने, बड़े संकल्पों के साथ एक दिशा में चलना शुरू किया, मिल-जुलकर के चलना शुरू किया और कभी भी लक्ष्य को भूले बिना चलते रहना तय किया और इतिहास गवाह है कि वो सपनों को सिद्ध करके ही रहे, उन्होंने हासिल करके दिखाया। 1930 के दशक में, यानी करीब 100 साल पहले अमेरिका, भीषण आर्थिक संकट

में फंस गया था। तब अमेरिका की जनता ने ठाना कि हमें इससे बाहर निकलना है, और तेज गति से आगे बढ़ना है। उन्होंने न्यू डील उसका रास्ता चुना, और अमेरिका ना सिर्फ उस संकट से निकला, बल्कि उसने विकास की रफ्तार को कई गुना तेज करके दिखाया, ज्यादा समय नहीं 100 साल। एक समय था, जब सिंगापुर बेहाल था, एक मछुआरों का छोटा सा गांव हुआ करता था। वहां जीवन की मूल सुविधाओं तक का संकट था। सिंगापुर को सही नेतृत्व मिला, और जनता के साथ मिलकर के सबने तय किया कि हम अपने देश को विकसित राष्ट्र बनाएंगे। वो नियमों से चले, अनुशासन से चले, सामूहिकता के भाव से चले, और कुछ ही सालों में सिंगापुर, एक ग्लोबल फाइनेंशियल और ट्रेड हब बनकर छा गया। दुनिया में ऐसे बहुत सारे देश हैं, घटनाएं हैं, समाज है, समूह है। हमारे देश में भी अनेक ऐसे उदाहरण रहे हैं, भारत के लोगों ने आजादी का संकल्प लिया। अंग्रेज सल्तनत की ताकत क्या नहीं थी, उनके पास क्या नहीं था, लेकिन देश उठ खड़ा हुआ, आजादी के सपने को जीने लगा, आजादी प्राप्त करने के लिए जूझने लगा, जीवन आहुत करने के लिए निकल पड़ा और भारत के लोगों ने आजादी हासिल करके दिखाई।

आजादी के बाद देश में अनाज के संकट का समय था। देश के किसानों ने संकल्प लिया और भारत को खाद्यान्न के संकट से मुक्त करके दिखाया। PL 480 उस नाम से गेहूं आया करते थे, और गेहूं पहुंचाना यही बड़ा काम हुआ करता था। हम उस संकट से निकल गए। बड़े सपने देखना, बड़े संकल्प लेना और उन्हें तय समय में पूरा करना असंभव नहीं है। किसी भी देश को आगे बढ़ने के लिए बड़े लक्ष्य तय करने ही होते हैं। जो ये सोचकर के बैठे रहते हैं, अरे छोड़ो यार, होता रहता है, अरे चलो भाई ऐसे ही चलता रहेगा, अरे क्या जरूरत है यार, लोग कोई भूखे थोड़े मरते हैं, चलता है ना, चलने दो। अरे कुछ बदलने की क्या जरूरत है, काहे को सर खपाते हो यार। जो लोग इस भावना में दिखते हैं ना, वो चलते-फिरते हैं, लेकिन मरी हुई लाश से ज्यादा कुछ नहीं होते है वो। बिना लक्ष्य के जीवन नहीं हो सकता है। अगर जीवन की कोई जड़ी-बूटी होती है, तो वो लक्ष्य होता है, जो जीवन जीने की ताकत भी देता है। जब सामने एक बड़ा लक्ष्य होता है, तो हम पूरी ताकत उसको पाने के लिए लगा देते हैं। और आज का भारत, यही कर रहा है।

बीते 10 वर्षों में भी हमने संकल्प से सिद्धि के कितने ही उदाहरण देखे हैं। हम भारतीयों ने तय किया कि हमें खुले में शौच से मुक्त होना है। सिर्फ 60 महीने में ही 60 करोड़ देशवासियों ने खुद को खुले में शौच से मुक्त कर दिया। भारत ने हर परिवार को बैंक अकाउंट से जोड़ने का लक्ष्य रखा। आज भारत का करीब-करीब हर परिवार बैंकिंग सेवा से जुड़ चुका है। भारत ने गरीब महिलाओं की रसोई को धुएं से मुक्त करने का संकल्प लिया। हमने 10 करोड़ से अधिक गैस कनेक्शन देकर इस संकल्प को भी सिद्ध किया। आज कितने ही सेक्टर्स में भारत अपने लक्ष्यों को तय समय से भी पहले हासिल करके दिखा रहा है। आपको कोरोना का समय याद होगा, दुनिया वैक्सीन के लिए परेशान थी, कहा जा रहा था कि कोरोना की वैक्सीन बनाने में बरसों लग जाएंगे, लेकिन भारत के वैज्ञानिकों ने समय से पहले वैक्सीन बनाकर दिखा दी। कुछ लोग कहते थे, भारत में सबको कोरोना वैक्सीन लगने में पता नहीं, 3 साल, 4 साल, 5 साल लग जाएंगे, लेकिन हमने दुनिया का सबसे बड़ा वैक्सीनेशन अभियान चलाया और रिकॉर्ड समय में सबको वैक्सीन लगाकर दिखा दिया। आज दुनिया भी भारत की ये गति देख रही है। हमने ग्रीन एनर्जी को लेकर जी-20 में एक बड़ा कमिटमेंट किया था। भारत दुनिया का पहला ऐसा देश बना जिसने पेरिस कमिटमेंट को पूरा किया, और वो भी तय समय से कितने साल पहले? 9 साल पहले। अब भारत ने 2030 तक पेट्रोल में 20 परसेंट इथेनॉल ब्लेंडिंग का टारगेट रखा है। इस टारगेट को भी हम 2030 के पहले, शायद आने वाले बहुत कम समय में उसको हासिल करने वाले हैं। भारत की ऐसी हर सफलता, संकल्प से सिद्धि का ऐसा हर उदाहरण, हम सबके लिए प्रेरणा है, ये सफलता हमें विकसित भारत के लक्ष्य के प्रति हमारी कमिटमेंट और लक्ष्य के प्रति हमारी करीब जाने की गति तेज कर देती है।

इस विकास यात्रा में हमें एक बात कभी नहीं भूलनी है, हमें याद रखना है, बड़े लक्ष्य रखना और उन्हें हासिल करना, ये सिर्फ किसी एक सरकारी मशीनरी का काम नहीं है। बड़े लक्ष्य की प्राप्ति के लिए राष्ट्र के हर एक नागरिक का जुटना बहुत जरूरी है। और इसके लिए हमें मंथन करना होता है, दिशा तय करनी होती है, मतलब विकसित भारत की ओनरशिप ये मोदी की नहीं, आपकी भी बन गई है। विकसित भारत : यंग लीडर्स डायलॉग, मंथन की इस प्रक्रिया का ही एक उत्तम उदाहरण है। ये ऐसा प्रयास है, जिसे नौजवानों ने नेतृत्व दिया है। मन गर्व से भर जाता है कि मेरा देश का नौजवान सोचने में कितना तेज गति से आगे जा रहा है। इससे पता चलता है कि देश के समक्ष मौजूद चुनौतियों को समझने का दायरा कितना व्यापक है। सॉल्यूशंस में ग्राउंड रिएलिटी है, ग्राउंड एक्सपीरिएंस है, हर बात में मिट्टी की महक है। भारत के युवा एसी के बंद कमरों में बैठकर नहीं सोच रहे, भारत के युवा की सोच का विस्तार आसमान से भी ऊंचा है।

यंग लीडर डायलॉग की प्रक्रिया से मंथन के बाद जो सुझाव निकले, भारत के युवाओं के जो आइडियाज, अब देश की नीतियों का हिस्सा बनेंगे, विकसित भारत को दिशा देंगे। मैंने लाल किले से एक लाख नए युवाओं को राजनीति में लाने की बात कही है। सुझावों को लागू करने के लिए राजनीति भी बहुत शानदार माध्यम हो सकती है। विश्वास है, अनेकों नौजवान राजनीति में भागीदारी के लिए भी आगे आएंगे।

विकसित भारत में हम क्या देखना चाहते हैं, कैसा भारत देखना चाहते हैं। विकसित भारत यानि जो आर्थिक, सामरिक, सामाजिक और सांस्कृतिक रूप से सशक्त होगा। जहां इकोनॉमी भी बुलंद होगी और इकोलॉजी भी समृद्ध होगी। जहां अच्छी पढ़ाई, अच्छी कमाई के ज्यादा से ज्यादा अवसर होंगे, जहां दुनिया की सबसे बड़ी युवा स्किल्ड मैनपावर होगी। जहां युवाओं के पास अपने सपने पूरा करने के लिए खुला आसमान होगा।

क्या हम सिर्फ बोलने से ही विकसित हो जाएंगे? जब हमारे हर फैसले की कसौटी एक ही होगी- विकसित भारत। जब हमारे हर कदम की दिशा एक ही होगी - विकसित भारत। जब हमारी नीति की भावना एक ही होगी- विकसित भारत। तो दुनिया की कोई भी शक्ति हमें विकसित होने से नहीं रोक पाएगी। हर देश के इतिहास में एक समय आता है, जब वो quantum jump ले सकता है। भारत के लिए ये मौका अभी है। और मैंने बहुत पहले, लाल किले से मेरे दिल की एक आवाज निकली थी, और मैंने कहा था- यही समय है, सही समय है। आज दुनिया के अनेक बड़े देशों में सीनियर सिटिजन्स की संख्या तेजी से बढ़ रही है। और आने वाले अनेक दशकों तक भारत, दुनिया का सबसे युवा देश रहने वाला है। बड़ी-बड़ी एजेंसियां कह रही हैं कि भारत की जीडीपी में बड़ी बढ़ोत्तरी युवा शक्ति ही सुनिश्चित करेगा। इसी युवाशक्ति पर देश के महान मनीषियों ने इतना अगाध विश्वास किया है। महर्षि अरबिंदो ने कहा था- भविष्य का सामर्थ्य, आज के नौजवानों के हाथों में है, गुरुदेव टैगोर ने कहा था- युवा शक्ति जरूर सपने देखे और उन्हें पूरा करने के लिए जीवन खपा दे। होमी जहांगीर भाभा कहते थे- युवाओं को नए-नए प्रयोग करने चाहिए, क्योंकि युवा हाथों से ही इनोवेशन होता है। दुनिया की कितनी ही बड़ी कंपनियां, उसको भारत के युवा ही चला रहे हैं। भारतीय युवाओं के सामर्थ्य की पूरी दुनिया मुरीद है। हमारे सामने 25 साल का Golden Period है, अमृतकाल है, और मैं पूरी तरह से आत्मविश्वास से भरा हूं, भारत की युवा शक्ति विकसित भारत का सपना जरूर साकार करेगी। सिर्फ 10 साल में युवाओं ने भारत को स्टार्ट अप

की दुनिया में टॉप तीन देशों में लाकर के खड़ा कर दिया। बीते 10 साल में युवाओं ने भारत को मैन्यूफैक्चरिंग में इतना आगे पहुंचा दिया। सिर्फ 10 साल में युवाओं ने डिजिटल इंडिया का परचम पूरी दुनिया में लहरा दिया। सिर्फ 10 साल में युवाओं ने भारत को स्पोर्ट्स की दुनिया में कहां से कहां पहुंचा दिया। भारत का युवा, जब हर असंभव को संभव कर रहा है, तो विकसित भारत भी जरूर संभव कर दिखाएगा।

सरकार भी युवाओं का सामर्थ्य बढ़ाने के लिए पूरी शक्ति से जुटी है। भारत में हर सप्ताह एक नई यूनिवर्सिटी बन रही है, भारत में हर दिन एक नई ITI की स्थापना हो रही है। भारत में हर तीसरे दिन एक अटल टिंकरिंग लैब खोली जा रही है। भारत में हर दिन दो नए कॉलेज बन रहे हैं। देश में 23 IITs हैं, सिर्फ एक दशक में ट्रिपल आईटी की संख्या 9 से बढ़कर 25 हो चुकी है, IIMs की संख्या 13 से बढ़कर 21 हो चुकी है। 10 साल में एम्स की संख्या में तीन गुना वृद्धि हुई है, 10 साल में मेडिकल कॉलेजों की संख्या भी करीब-करीब दोगुनी हो गई है। आज हमारे स्कूल हों, कॉलेज हों, यूनिवर्सिटी हों, क्वांटिटी हो या फिर क्वालिटी, हर स्तर पर शानदार परिणाम दिख रहा है। साल 2014 तक भारत के केवल Nine हायर एजुकेशन इंस्टीट्यूट्स QS रैंकिंग में आते थे। आज ये संख्या 46 है। भारत की शिक्षा संस्थानों का बढ़ता हुआ ये सामर्थ्य, विकसित भारत का बहुत बड़ा आधार है।

कुछ लोगों को लग सकता है कि 2047 तो अभी बहुत दूर है, इसके लिए अभी क्या काम करना, लेकिन उस सोच से भी हमें बाहर निकलना है। विकसित भारत की इस यात्रा में हमें हर रोज नये लक्ष्य बनाने हैं, उसे प्राप्त करना है। वो दिन दूर नहीं जब भारत दुनिया की तीसरी सबसे बड़ी इकोनॉमी का लक्ष्य हासिल करेगा। बीते 10 वर्षों में देश ने 25 करोड़ लोगों को गरीबी से बाहर निकाला। जिस रफ्तार से हम चल रहे हैं, तो वो दिन भी दूर नहीं है, जब पूरा भारत गरीबी से मुक्त होगा। इस दशक के अंत तक भारत ने 500 गीगावॉट रीन्युएबल एनर्जी कैपेसिटी पैदा करने का लक्ष्य रखा है। हमारी रेलवे, नेट जीरो कार्बन एमिटर प्राप्त करने की दिशा में 2030 तक अचीव करना है।

हमारे सामने एक बहुत बड़ा लक्ष्य अगले दशक में ओलंपिक्स के आयोजन का भी है। इसके लिए देश, जी जान से जुटा हुआ है। स्पेस पावर के रूप में भी भारत अपने कदम तेजी से आगे बढ़ा रहा है। 2035 तक स्पेस में अपना स्टेशन स्थापित करना है। दुनिया ने चंद्रयान की सफलता देखी। अब गगनयान की तैयारी जोरों पर है। लेकिन हमें उससे भी आगे का सोचना है, हमें अपने चंद्रयान पर सवार करके किसी भारतीय को चांद पर लैंड करवाना है। ऐसे अनेक लक्ष्यों को पाते हुए ही हम 2047 तक विकसित भारत का लक्ष्य हासिल कर पाएंगे।

जब हम बढ़ती हुई इकोनॉमी के आंकड़े की बात करते हैं, तो कुछ लोग सोचते हैं, इससे हमारे जीवन पर क्या प्रभाव पड़ेगा। सच्चाई ये है कि जब इकोनॉमी बढ़ती है, तो जीवन के हर स्तर पर उसका सकारात्मक प्रभाव पड़ता है। इस सदी के पहले दशक में भारत एक ट्रिलियन डॉलर की इकोनॉमी बना, मैं 21st सेंचुरी के फर्स्ट टेन्योर की बात कर रहा हूं। तब इकोनॉमी की साइज छोटी थी, इसलिए तब भारत का खेती का बजट कुछ हजार करोड़ रुपए था। भारत का इंफ्रास्ट्रक्चर बजट एक लाख करोड़ रुपए से भी कम था। और उस समय देश की क्या स्थिति थी? उस समय ज्यादातर गांव सड़कों से वंचित थे, बिजली से वंचित थे, नेशनल हाईवे और रेलवे की स्थिति बहुत खराब थी। बिजली-पानी जैसी बुनियादी सुविधाओं से भारत का बहुत बड़ा हिस्सा वंचित था।

इसके कुछ समय बाद भारत दो ट्रिलियन डॉलर की इकोनॉमी बना। तब भारत का इंफ्रास्ट्रक्चर बजट 2 लाख करोड़ रुपए से भी कम था। लेकिन रोड, रेल, एयरपोर्ट, नहरें, गरीबों के घर, स्कूल, अस्पताल, ये सब पहले के मुकाबले कुछ ज्यादा होने लगे। फिर इसके बाद भारत तेजी से तीन ट्रिलियन डॉलर की इकोनॉमी बना, नतीजा ये हुआ कि एयरपोर्टस की संख्या दोगुनी हो गई, देश में वंदे भारत जैसी आधुनिक ट्रेनें चलने लगी, बुलेट ट्रेन का सपना जमीन पर उतरने लगा। भारत ने दुनिया में सबसे तेज गति से 5G का रोल-आउट किया। देश की हजारों ग्राम पंचायतों तक ब्रॉडबैंड इंटरनेट पहुंचने लगा। 3 लाख से अधिक गांवों तक सड़कें पहुंच गईं, नौजवानों को 23 लाख करोड़ रुपए का बिना गारंटी वाला मुद्रा लोन दिया। मुफ्त इलाज देने की दुनिया की सबसे बड़ी योजना आयुष्मान भारत शुरु की गई। किसानों के बैंक खाते में हर वर्ष हजारों करोड़ रुपए सीधे जमा करने की योजना शुरू हुई। गरीबों के लिए 4 करोड़ पक्के घर बनाए गए। यानि अर्थव्यवस्था जितनी बड़ी होती गई, उतना ही ज्यादा विकास के कार्यों ने गति पकड़ी, उतने ही ज्यादा अवसर बनने लगे। हर सेक्टर में, समाज के हर वर्ग, उसके लिए खर्च करने की देश की क्षमता उतनी ही बढ़ी।

आज भारत करीब-करीब 4 ट्रिलियन डॉलर इकोनॉमी है। इससे भारत का सामर्थ्य भी कई गुणा बढ़ गया है। 2014 में जितना इंफ्रास्ट्रक्चर का पूरा बजट था, जितने पैसे में रेल-रोड-एयरपोर्ट सब बनाए जाते थे, उससे कहीं अधिक पैसे आज भारत सिर्फ रेलवे पर खर्च कर रहा है। आज भारत का इंफ्रास्ट्रक्चर बजट, 10 साल पहले की तुलना में करीब 6 गुणा अधिक है, 11 लाख करोड़ से ज्यादा है। और इसका परिणाम आज आप भारत के बदलते हुए लैंडस्केप में देख रहे हैं। आज ये सब संभव हुआ।

अब हम यहां से बहुत तेज गति से 5 ट्रिलियन डॉलर इकोनॉमी के पड़ाव की तरफ बढ़ रहे हैं। आप सोचिए, जब हम 5 ट्रिलियन तक पहुंचेंगे, तो विकास की स्केल कितनी बड़ी होगी, सुविधाओं का विस्तार कितना ज्यादा होगा। भारत अब इतने पर ही नहीं रुकने वाला। अगले दशक की समाप्ति होते-होते भारत 10 ट्रिलियन डॉलर के पड़ाव को भी पार कर जाएगा। आप कल्पना कीजिए, इससे बढ़ती हुई इकोनॉमी में, जब आपका करियर आगे बढ़ेगा, तो कितने सारे अवसर आपके लिए होंगे। आप जरा कल्पना कीजिए, 2047 में आप किस उम्र के होंगे, आप अपने परिवार की किन व्यवस्थाओं की चिंता में होंगे। आप कल्पना कीजिए, 2047 में जब आप 40-50 के आसपास होंगे, जीवन के एक महत्वपूर्ण पड़ाव पर होंगे, और देश विकसित हुआ होगा, तो उसका सबसे ज्यादा फायदा वो किसको मिलेगा? आज जो नौजवान है सर्वाधिक फायदा उनको ही मिलने वाला है। और इसलिए मैं आज आपको पूरे विश्वास से कह रहा हूं, आपकी पीढ़ी ना सिर्फ देश के इतिहास का सबसे बड़ा परिवर्तन करेगी, बल्कि उस परिवर्तन की सबसे बड़ी लाभार्थी भी होगी। बस इस यात्रा में हमें एक जरूरी बात याद रखनी है। हमें कंफर्ट जोन की आदत से बचना है। ये स्थिति बड़ी खतरनाक होती है। आगे बढ़ने के लिए कंफर्ट जोन से बाहर आकर रिस्क उठाना जरूरी है। यही जीवन मंत्र आपको सफलता की नई ऊंचाई पर ले जाएगा।

भारत के भविष्य का रोडमैप तय करने में, विकसित भारत, यंग लीडर्स डायलॉग बहुत बड़ी भूमिका निभाएगा। जिस ऊर्जा, जिस उत्साह, जिस लगन के साथ आपने इस संकल्प को अपनाया है, वो वाकई अद्भुत है। विकसित भारत के लिए आपके विचार, निश्चित रूप से बहुमूल्य हैं, उत्तम हैं, सर्वश्रेष्ठ हैं। अब आपको इन विचारों को देश के कोने-कोने तक लेकर के जाना है। देश के हर जिले में, हर गांव-गली-मोहल्ले में, विकसित भारत के इन विचारों से दूसरे नौजवानों को भी जोड़ना है, इस स्पिरिट को लेकर जाना है। हम 2047 तक भारत को विकसित राष्ट्र बनाकर रहेंगे। इसी संकल्प के साथ हमें जीना है, हमें खुद को खपा देना है।

इस संकल्प को सिद्धि में बदलने के लिए, आप सबके अविरत पुरुषार्थ के लिए, सिद्धि प्राप्त करने तक चैन से नहीं बैठेंगे, इस महत्वपूर्ण शपथ को लेकर के आप आगे बढ़े। ▪

युवाओं को स्वावलंबी और आत्मनिर्भर बनाना है - डॉ. मोहन यादव

- **भारत को विकसित राष्ट्र बनाने में युवा दें हर संभव योगदान।**
- **प्रधानमंत्री श्री मोदी जी का नेतृत्व और मार्गदर्शन प्राप्त होना देश का सौभाग्य।**
- **गरीब, युवा, अन्नदाता और नारी शक्ति को आत्मनिर्भर और सशक्त बनाना सर्वोच्च प्राथमिकता।**
- **युवाओं ने हर काल में धर्म, संस्कृति और जीवन मूल्यों को सुरक्षित रखा।**
- **संवाद-सामर्थ्य और समृद्धि पर केन्द्रित है युवा शक्ति मिशन।**

वर्ष 2030 तक प्रदेश के 70 प्रतिशत से अधिक युवाओं को रोजगार उपलब्ध कराने का प्रयास होगा। शिक्षा, रोजगार के साथ व्यक्तित्व विकास और बेहतर जीवन का भी आधार है।

मिशन का लक्ष्य रखा गया है कि प्रदेश का प्रत्येक युवा वर्ष 2028 तक कक्षा 10वीं तथा वर्ष 2030 तक कक्षा 12 के स्तर तक शिक्षा पूरी करें।

विश्व का सबसे युवा देश भारत है और हम सभी प्रश्नों के समाधान अपनी क्षमता और योग्यता के आधार पर करने में सक्षम है। मध्यप्रदेश में ही डेढ़ करोड़ से अधिक युवा शक्ति है। उनसे संवाद कर उनकी रूचि और योग्यता के अनुरूप उनके भविष्य और प्रगति के लिए राज्य सरकार की ओर से हरसंभव सहयोग प्रदान किया जाएगा। समस्त 54 विभागों में संचालित युवाओं के हित और उनसे संबंधित योजनाओं और कार्यक्रमों में समन्वय करते हुए युवाओं को गुणवत्तापूर्ण शिक्षा, उनकी क्षमता संवर्धन के लिए उद्यमिता में प्रशिक्षण उपलब्ध कराकर उन्हें स्वावलंबी और आत्मनिर्भर बनाना तथा युवाओं की ऊर्जा का देश और प्रदेश हित में उपयोग सुनिश्चित करना युवा शक्ति मिशन का उद्देश्य है।

वर्तमान युग में कौशल उन्नयन और इस क्षेत्र में प्रशिक्षण का विशेष महत्व है। शासकीय सेवा या निजी क्षेत्र में रोजगार उपलब्ध कराने के साथ उद्यमिता विकास के लिए कार्य करते हुए युवाओं को नौकरी करने वाला नहीं, नौकरी देने वाला बनाया जाएगा। मिशन के अंतर्गत युवाओं के जीवन को खुशहाल, समृद्धशाली बनाने के लिए लक्ष्य निर्धारित कर समय-सीमा में उनकी प्राप्ति के लिए रोडमैप भी बनाया गया है। वर्ष 2030 तक प्रदेश के 70 प्रतिशत से अधिक युवाओं को रोजगार उपलब्ध कराने का प्रयास होगा। शिक्षा, रोजगार के साथ व्यक्तित्व विकास और बेहतर जीवन का भी आधार है। मिशन का लक्ष्य रखा गया है कि प्रदेश का प्रत्येक युवा वर्ष 2028 तक कक्षा 10वीं तथा वर्ष 2030 तक कक्षा 12 के स्तर तक शिक्षा पूरी करें।

युवाओं को आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर बनाने के लिए अपनी रूचि अनुसार उद्यमिता और रोजगार के लिए अन्य क्षेत्रों में प्रशिक्षण और मार्गदर्शन भी प्रदान किया जाएगा। कई देशों ने तकनीक के दम पर विश्व में अपनी विशेष पहचान बनाई है। हमारे युवा भी नये संकल्प के साथ आगे बढ़ें और स्वामी विवेकानंद जी के ''उठो, जागो और तब तक मत रूको जब तक लक्ष्य प्राप्त न हो'' के ध्येय वाक्य को चरितार्थ करें।

स्वामी विवेकानंद युवा शक्ति मिशन, प्रदेश के युवाओं के सपनों को साकार करने में राज्य शासन की ओर से आवश्यक सहयोग उपलब्ध कराने की दिशा में एक कदम है। प्रधानमंत्री श्री मोदी का मानना है कि गरीब, युवा, अन्नदाता और नारी शक्ति को केन्द्रित कर विकास गतिविधियां संचालित करने से देश कम समय में विकसित राष्ट्र बनने के लक्ष्य को प्राप्त कर सकेगा। उनकी मंशानुसार ही राज्य सरकार द्वारा स्वामी विवेकानन्द युवा शक्ति मिशन आरंभ किया गया है। युवा असीम ऊर्जा का स्त्रोत हैं, उनकी यह ऊर्जा दीपक के समान प्रकाश फैलाने में उपयोग में आए, यही युवा शक्ति मिशन का उद्देश्य है। इसी उद्देश्य से राज्य सरकार युवाओं को दिशा देने के प्रयास के लिए प्रतिबद्ध है। वर्तमान समय और आवश्यकता के अनुसार युवाओं से संवाद के माध्यम से उन्हें शिक्षा के साथ अन्य विधाओं में प्रशिक्षण और मार्गदर्शन भी उपलब्ध कराने के लिए भी राज्य सरकार संवदेनशील है। ▪

स्वामी विवेकानंद युवा शक्ति मिशन: संवाद, सामर्थ्य और समृद्धि की त्रिवेणी

डॉ. मोहन यादव

युवाओं की मेधा शक्ति को जाग्रत करने वाले स्वामी विवेकानंद जी ने कहा था, ''उठो,जागो और तब तक मत रुको जब तक लक्ष्य प्राप्त न हो जाए'' विवेकानंद जी युवाओं को आशा और उम्मीद से देखते थे और युवा पीढ़ी को परिवर्तन का अग्रदूत मानते थे। स्वामी जी के लिये राष्ट्रकवि श्री रामधारी सिंह दिनकर ने अपनी पुस्तक ''संस्कृति के चार अध्याय'' में लिखा कि ''अभिनव भारत को जो कुछ कहना था, वह विवेकानंद के मुख से उद्घोषित हुआ। अभिनव भारत को जिस दिशा में जाना था, उसका स्पष्ट संदेश विवेकानंद ने दिया। विवेकानंद वह सेतु हैं जिस पर प्राचीन और नवीन भारत परस्पर आलिंगन करते हैं। युवा शक्ति को राष्ट्र की मूलभूत चेतना और समाज निर्माण की ऊर्जा मानने वाले स्वामी विवेकानंद जी की जयंती 'राष्ट्रीय युवा दिवस' पर उनके चरणों में शत-शत नमन।

हमारे मार्गदर्शक यशस्वी प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने युवा पीढ़ी की क्षमता को जाना, समझा और ज्ञान (GYAN) पर ध्यान का मार्गदर्शन दिया। इसमें ''जी'' से गरीब, ''वाय'' से युवा, ''ए'' से अन्नदाता और ''एन'' से नारी कल्याण की बात कही। उन्होंने युवाओं के लिये अनुशासन, शील, सकारात्मकता, कौशल क्षमता और प्रतिभा के विकास का आह्वान किया। प्रधानमंत्री जी की प्रेरणा से हम मध्यप्रदेश में ''स्वामी विवेकानंद युवा शक्ति मिशन'' की शुरुआत कर रहे हैं। हमने इस मिशन को ''ज्ञान (GYAN) पर ध्यान'' और मध्यप्रदेश की ''युवा नीति-2023'' को केन्द्र में रखकर आकार दिया है। इसका उद्देश्य युवाओं को गुणवत्तापूर्ण शिक्षा, कौशल विकास, मानसिक और शारीरिक स्वास्थ्य, रोजगार के अवसर और सामाजिक जिम्मेदारी के प्रति जागरूक करना है। यह मिशन शहरी तथा ग्रामीण, पिछड़े और आर्थिक-सामाजिक रूप से कमजोर वर्ग के युवाओं के कल्याण के लिये है। इसमें महिलाओं, दिव्यांग, युवाओं और किसानों को सशक्त बनाने का प्रयास है।

युवा शक्ति मिशन ''आत्म दीपो भव:'' का घोष है। युवाओं के विकास और निर्माण के लिये जिन पक्षों को धरातल पर उतारने का प्रयास किया जा रहा है,

वर्षों पूर्व स्वामी विवेकानंद जी ने युवाओं की इसी क्षमता और मेधा को लेकर आह्वान किया था ''आत्म दीपो भव:'' अर्थात् अपना दीप स्वयं बनो। स्वयं अपने मार्गदर्शक बनो।

हमने युवाओं के विकास के लिये विभिन्न मोर्चों पर काम शुरू किया है। युवाओं के लिये विभिन्न विभागों में शासकीय नौकरी की प्रक्रिया प्रारंभ कर दी गई है। शिक्षा के क्षेत्र में गुणवत्ता पूर्ण शिक्षा के लिये 55 पीएमश्री कॉलेज ऑफ एक्सीलेंस शुरू किये गये हैं। चिकित्सा शिक्षा के लिये आयुर्वेदिक, एलोपैथिक और होम्योपैथिक तीनों क्षेत्रों में कार्य किया जा रहा है। विगत वर्ष हमने तीन मेडिकल कॉलेज शुरू किये हैं। पीपीपी मोड पर 2 साल में 25 नये मेडिकल कॉलेज आरंभ किये जायेंगे। औद्योगिकरण में रोजगारपरक व्यवस्थाओं के लिये प्रदेश के विभिन्न अंचलों में आयोजित की जा रही रीजनल इंडस्ट्री कॉन्क्लेव का बड़ा आधार युवा शक्ति है। रीवा, उज्जैन, सहित अन्य आईटी पार्कों के माध्यम से युवाओं को अपनी योग्यता और क्षमता के आधार पर प्रदेश में ही रोजगार के अवसर उपलब्ध हुए हैं।

''स्वामी विवेकानंद युवा शक्ति मिशन'' में युवाओं के कौशल संवर्धन पर विशेष ध्यान दिया जाएगा। कौशल विश्वविद्यालय की स्थापना से रोजगार के लिए आवश्यक दक्षताओं का विकास किया जाएगा। पर्यटन, कृषि और सेवा क्षेत्रों में कौशल विकास के लिए विशेष प्रशिक्षण कार्यक्रम होंगे। इसके अलावा, युवाओं में उद्यमिता को प्रोत्साहित करने और स्थानीय स्तर पर रोजगार के अवसर उपलब्ध कराने के लिए विभिन्न योजनाएं लागू की जाएंगी। युवाओं को पर्यावरण संरक्षण, सामाजिक बुराइयों के विरुद्ध जागरूकता और राष्ट्र की सांस्कृतिक विरासत को संरक्षित करने के लिए प्रोत्साहित किया जाएगा। खेल और सांस्कृतिक गतिविधियों से उनके मानसिक और शारीरिक स्वास्थ्य को बेहतर बनाने के प्रयास किए जाएंगे।

युवा शक्ति मिशन ''आत्म दीपो भव:'' का घोष है। युवाओं के विकास और निर्माण के लिये जिन पक्षों को धरातल पर उतारने का प्रयास किया जा रहा है, वर्षों पूर्व स्वामी विवेकानंद जी ने युवाओं की इसी क्षमता और मेधा को लेकर आह्वान किया था ''**आत्म दीपो भव:**'' अर्थात्

अपना दीप स्वयं बनो। स्वयं अपने मार्गदर्शक बनो। युवाओं की ऊर्जा के सकारात्मक भाव से ही राष्ट्र की सुरक्षा, समृद्धि के साथ विकास आकार ले सकता है। यह युवाओं की श्रम साधना और कौशल उन्नयन से संभव है।

प्रधानमंत्री जी ने युवा समूह के लिये समुचित प्रोत्साहन की आवश्यकता बताई। यह सुखद संयोग है कि भारत में 15 से 29 वर्ष के युवाओं की संख्या 27.03 प्रतिशत है। यदि युवा सक्षम हैं, सामर्थ्यवान हैं, आत्मनिर्भर हैं तो पूरा समाज और देश उन्नत होगा। स्वामी विवेकानंद जी की इसी बात को ध्यान में रखकर ''स्वामी विवेकानंद युवा शक्ति मिशन'' के तहत युवाओं में शिक्षा, कौशल विकास और सामुदायिक सेवा जैसे गुणों को विकसित किया जायेगा और उन्हें सक्षम बनाया जायेगा। इसमें युवाओं को नेतृत्ववान बनाने के लिये संसाधन और अवसर होंगे। युवाओं को गुणवत्तापूर्ण शिक्षा और व्यावसायिक कौशल से प्रशिक्षित कर उन्हें रोजगार के लिये सक्षम बनाया जायेगा।

मिशन के स्तंभ हैं- संवाद, सामर्थ्य और समृद्धि। संवाद से आत्मविश्वास और नेतृत्व की क्षमता विकसित होगी। गुणवत्तापूर्ण शिक्षा, क्षमता संवर्धन और कौशल विकास से सामर्थ्य विकसित होगा और सामर्थ्यवान युवा समृद्ध होगा। हमारे लिये यह हर्ष की बात है कि इस मिशन से युवा, स्वामी विवेकानंद जी के आह्वान को सार्थक करने की दिशा में आगे बढ़ सकेंगे। वे भगवान श्रीकृष्ण की तरह स्वयं दीप बनेंगे और समाज को भी अपनी ऊर्जा और क्षमता से उज्ज्वल करेंगे। स्वामी जी ने युवाओं के लिये कहा था कि ''आप भारतीय संस्कृति की विराट विरासत और परंपरा के उत्तराधिकारी हैं।'' हम विरासत से विकास की अवधारणा को लेकर मध्यप्रदेश के विकास और निर्माण पथ पर अग्रसर हैं। यह मिशन युवाओं के सपनों को साकार करने और समाज में सकारात्मक बदलाव लाने में सफल होगा। प्राचीन, सुसंस्कृत और चिर युवा भारत की यह त्रिवेणी प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के विकसित राष्ट्र निर्माण के संकल्प को साकार करने में सक्रिय भूमिका निभायेगी। युवा अपने सपनों को साकार करें, स्वयं आगे बढ़ें और समाज, देश तथा प्रदेश को आगे बढ़ायें।

मध्यप्रदेश का युवा प्रदेश सरकार पर भरोसा करता है। इस मिशन से उनके जीवन में नया सूर्य उगे, उनका जीवन आलोकित हो और वे समाज के लिये रचनात्मक और सृजनात्मक कार्यों में सहभागी बनें। युवाओं को जाग्रत करने और भारतीय आध्यात्म और संस्कृति को वैश्विक पटल पर स्थापित करने वाले स्वामी विवेकानंद जी को पुनश्च नमन। ▪

(लेखक, मध्यप्रदेश के मुख्यमंत्री हैं)

जन जातीय समाज को स्वाभिमानी, स्वावलंबी बना रही मोदी सरकार: हितानंद जी

कांग्रेस की सरकार ने देश पर आपातकाल थोपकर संविधान की आत्मा को कुचलने का काम किया। संविधान के निर्माता बाबा साहब अंबेडकर को कभी कांग्रेस ने सम्मान नहीं दिया। कभी उन्हें चुनाव नहीं जीतने दिया।

जनजातीय समाज के गौरवशाली इतिहास को भाजपा समाज में स्थापित करना चाहती है। देश में पहली क्रांति का सूत्रपात जनजातीय योद्धाओं ने ही किया था। जनजातीय समाज को रोटी, कपड़ा और मकान उपलब्ध कराने के प्रयास पहले भी होते रहे हैं, लेकिन प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी की सरकार इन चीजों को हर व्यक्ति को उपलब्ध कराने के साथ-साथ जनजातीय समाज का स्वाभिमान जगा रही है, अपनी योजनाओं से उन्हें स्वावलंबी बना रही है। भगवान बिरसा मुंडा, भीमा नायक, टंट्या मामा, रानी दुर्गावती, राजा शंकर शाह, रघुनाथ शाह, मोदी सरकार ने खोज-खोजकर जनजातीय महापुरुषों को सम्मान दिया है। उनके स्मारक बनवाए हैं और उनके संघर्ष तथा बलिदान को पाठ्यक्रमों में शामिल किया है। हमें जनजातीय समाज के कल्याण के लिए किए जा रहे भाजपा सरकारों के प्रयासों को जन-जन तक पहुंचाना है।

कुछ लोग भाजपा के विरोध में एक नैरेटिव गढ़ रहे हैं। वो कह रहे हैं कि भाजपा संविधान खत्म कर देगी, आरक्षण खत्म कर देगी। लेकिन इतिहास गवाह है, देश में जब-जब कांग्रेस की सरकारें रही हैं, उन्होंने संविधान में बदलाव किए हैं। कांग्रेस की सरकार ने देश पर आपातकाल थोपकर संविधान की आत्मा को कुचलने का काम किया। संविधान के निर्माता बाबा साहब अंबेडकर को कभी कांग्रेस ने सम्मान नहीं दिया। कभी उन्हें चुनाव नहीं जीतने दिया। नेहरू परिवार के सदस्यों की मृत्यु कहीं पर हुई हो, लेकिन उन सभी के स्मारक दिल्ली में बने हैं। बाबा साहब की तो मृत्यु दिल्ली में हुई थी, लेकिन कांग्रेस ने उनका स्मारक नहीं बनने दिया। भाजपा की ही मोदी सरकार ने बाबा साहब के जीवन से जुड़े स्थानों का पंचतीर्थ के रूप में विकास किया। कांग्रेस की सरकारों ने कभी बाबा साहब को भारत रत्न नहीं मिलने दिया। स्व. अटलजी की सरकार ने अलग से जनजातीय कार्य मंत्रालय बनाया। भाजपा की सरकारों ने पेसा एक्ट लागू किया, जनजातीय समाज को स्वावलंबी बनाने के लिए वन-धन जैसी योजना लागू की। जनजातीय क्षेत्रों में भाजपा की सरकार हर फाल्या, मजरे-टोले को सड़कों से जोड़ रही है, हर परिवार को पक्का मकान दे रही है। हमें जनजातीय समाज को यह बताना है कि कांग्रेस ने उनके साथ कैसा-कैसा अन्याय किया है और भाजपा जनजातीय समाज तथा संविधान की रक्षक है। ▪

(श्रीराम मंदिर प्राण-प्रतिष्ठा की प्रथम वर्षगांठ पर विशेष)

भारत के उत्थान की प्रेरणा है राष्ट्र मंदिर

हितानंद शर्मा

पौष शुक्ल द्वादशी, 22 जनवरी 2024 केवल अयोध्या में भव्य श्रीराम मंदिर की प्राण-प्रतिष्ठा के उत्सव का दिवस नहीं, बल्कि संपूर्ण हिंदू समाज की दृष्टि और विचारों के परिवर्तन की उपलब्धि का दिन है।

पीढ़ियों की तपस्या, त्याग, बलिदान और प्रतीक्षा के बाद अयोध्या ने इस शुभ घड़ी का स्वागत किया था।

अद्भुत, अकल्पनीय और अविस्मरणीय वह अभिजीत मुहूर्त, जब प्राण-प्रतिष्ठा कर रामलला के नेत्रों से पट्टिका हटाई गई तब पूरे विश्व में सनातन संस्कृति के उपासकों के नेत्रों में श्रद्धा, आस्था, आनंद और प्रतीक्षा के आँसू थे। पौष शुक्ल द्वादशी, 22 जनवरी 2024 केवल अयोध्या में भव्य श्रीराम मंदिर की प्राण-प्रतिष्ठा के उत्सव का दिवस नहीं, बल्कि संपूर्ण हिंदू समाज की दृष्टि और विचारों के परिवर्तन की उपलब्धि का दिन है। पीढ़ियों की तपस्या, त्याग, बलिदान और प्रतीक्षा के बाद अयोध्या ने इस शुभ घड़ी का स्वागत किया था।

भगवान श्रीराम की प्राण-प्रतिष्ठा से आनंदित, उत्साहित यह वही अयोध्या है जिसके परिचय में अथर्व वेद में उल्लेख आता है कि -

अष्ट चक्रा नव द्वारा देवाना
पूः अयोध्या।
तस्या हिरण्यमयः कोश स्वर्गो
ज्योतिषावृतः।।

अयोध्या, जिसका अर्थ ही है जो अजेय, अपराजित है। सहस्त्रों वर्षो तक अयोध्या अपने स्वर्णिम इतिहास के लिए जानी जाती रही। वही अयोध्या जहाँ हिन्दू समाज के आराध्य श्रीराम जी का जन्म सकल लोक के मंगल हेतु हुआ। इसीलिए गोस्वामी तुलसीदास जी अयोध्या का वर्णन कुछ इस प्रकार करते हैं-

विप्र धेनु सुर संत हित लीन्ह मनुज
अवतार।
निज इच्छा निर्मित प्रभु माया गुन गो पार।।

हिन्दू समाज की आस्था के केंद्र, समरसता, नैतिकता व कर्तव्यपालन का बोध कराने वाले श्रीराममंदिर का कालांतर में विध्वंस कर मुगल आक्रांताओं द्वारा गुलामी के प्रतीक के रूप में बाबरी मस्जिद बना दी गई। इसके बाद 1528 से ही आरंभ हुए श्रीराममंदिर आंदोलन का 9 नवम्बर 2019 को सुप्रीम कोर्ट के ऐतिहासिक निर्णय पर विराम हुआ। 5 अगस्त 2020 को भूमिपूजन के साथ करोड़ों लोगों की अपनी भावनाओं ने विविध प्रकार से अभिव्यक्ति की।

यह एक ऐसा आंदोलन रहा जिसमें साधु-संतों ने युद्ध भी किया और वे आध्यात्मिक जागरण के केंद्र भी बने। बैरागी अभिराम दास (योद्धा साधु), राममंदिर आंदोलन के शलाका पुरुष महंत रामचन्द्र परमहंस, महंत अवैद्यनाथ व देवरहा बाबा ने संपूर्ण आंदोलन को एक दिशा प्रदान की। कोठारी बन्धुओं के बलिदान को हिन्दू समाज भला कैसे विस्मृत कर सकता है? विष्णु डालमिया, अशोक सिंहल वे तेजपुंज हैं, जिन्होंने सनातन ऊर्जा को संग्रहीत कर इस पवित्र कार्य से जोड़ा।

मंदिर आंदोलन के मूल में राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की भूमिका से सभी भलीभांति परिचित ही हैं। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के कार्यकर्ताओं ने पूरे आंदोलन में जनजागरण करते हुए आस्था के उच्चतम प्रतिमानों को विश्वव्यापी स्वरूप दिया। विश्व हिंदू परिषद, बजरंग दल, अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद सहित विचार परिवार के सभी संगठनों ने अपनी पूर्ण सामर्थ्य के साथ तत्कालीन सरसंघचालक बालासाहब देवरस की मंशा के अनुरूप धैर्यपूर्वक योजनाबद्ध आंदोलन किए। भारतीय जनता पार्टी द्वारा लालकृष्ण आडवाणी के नेतृत्व में देशव्यापी रथयात्रा ने पूरे भारत में वातावरण का निर्माण किया तो असंख्य कारसेवकों के बलिदान ने राम राष्ट्र के इस यज्ञ में समिधा का कार्य किया।

मंदिर आंदोलन के इतिहास में अनेक बलिदानियों के रक्त व उनके परिजनों के त्याग का बिंदु समाहित है। राममंदिर के प्रति समाज की आस्था इतनी प्रबल रही है कि जब श्रमदान आवश्यक था तब श्रमदान किया। वहीं राष्ट्रमंदिर को भव्यता और दिव्यता देने के लिए निधि समर्पण अभियान में जाति, वर्ग, दल, समूह के सभी बंधनों को ध्वस्त करते हुए जिससे जो बन पड़ा उसने भगवान श्रीराम के चरणों में समर्पण किया। भारतीय पंचांग के अनुसार पौष शुक्ल द्वादशी को जो पिछले वर्ष 22 जनवरी 2024 को थी, भगवान के विग्रह की प्राण-प्रतिष्ठा हुई थी। संपूर्ण भारत की आस्था के केंद्र श्रीराम मन्दिर के माध्यम से आध्यात्मिक चेतना को बल मिला

और देशवासियों में स्वाभिमान का जागरण हुआ। वहीं जो लोग मन्दिर निर्माण का विरोध कर रहे थे उनके सारे अवरोधों का प्रति उत्तर भी इस एक वर्ष में मिला। प्राण-प्रतिष्ठा से आज प्रथम वर्षगांठ तक असंख्य दर्शनार्थियों ने न केवल रामलला के दर्शन किए बल्कि अयोध्या सहित आस-पास के क्षेत्र के आर्थिक तंत्र को मजबूत करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। नागर शैली में निर्मित अलौकिक सुंदरता से परिपूर्ण श्रीराम मंदिर की लंबाई पूर्व से पश्चिम 380 फीट, चौड़ाई 250 फीट व ऊंचाई 161 फीट है। भव्य तीन मंजिला मंदिर में 392 स्तंभ और 44 द्वार हैं। भूतल में प्रभु श्रीराम का मोहक बाल रूप तो प्रथम तल में श्रीराम दरबार का गर्भगृह है। नृत्य मंडप, रंग मंडप, सभा मंडप, प्रार्थना व कीर्तन मंडप है। उत्तरी भुजा में मां अन्नपूर्णा व दक्षिणी भुजा में हनुमान जी विराजित हैं।

मंदिर के समीप ही पौराणिक काल का सीताकूप रहेगा। 732 मीटर लंबे व 14 मीटर चौड़े चहुंमुखी आयताकार परकोटे के चार कोनों पर भगवान सूर्य, मां भगवती, गणपति व भगवान शिव का मंदिर बनेगा। मंदिर परिसर में ही महर्षि वाल्मिकी, महर्षि वशिष्ठ, विश्वामित्र, अगस्त्य, निषादराज, माता शबरी व देवी अहिल्या के मंदिर प्रस्तावित हैं। यह मात्र एक मंदिर नहीं बल्कि भारत की संस्कृति और अस्मिता का प्रतीक है। एक स्वाभिमानी राष्ट्र अपने ऐसे ही प्रतीकों से ऊर्जा प्राप्त करता है। राम मंदिर भारत की चेतना का पर्याय है और इसका भी कि राम जन-जन की स्मृति में कितने गहरे रचे-बसे हैं। यह आधुनिक विश्व के इतिहास में पहली बार है, जब किसी समाज ने अपने प्रेरणा पुरुष के जन्मस्थान एवं उनके उपासना स्थल को अतिक्रमण और अवैध कब्जे से न्यायपूर्वक छुड़ाने में सफलता प्राप्त की।

प्राण-प्रतिष्ठा उत्सव में उमड़ा भावनाओं का ज्वार ऐसे अनेक प्रश्नों का उत्तर दे रहा था कि राम मंदिर का निर्माण क्यों आवश्यक था और हिंदू समाज उसके लिए इतनी व्यग्रता से क्यों प्रतीक्षा कर रहा था? अच्छा होता कि यह प्रतीक्षा स्वतंत्रता के बाद ही पूरी हो जाती, किंतु संकीर्ण राजनीतिक कारणों और कथित सेक्युलरिज्म की विजातीय-विकृत अवधारणा के चलते ऐसा नहीं हो सका। यह विडंबना ही रही कि अयोध्या में राम मंदिर के निर्माण की हिंदू समाज की सदियों पुरानी स्वाभाविक अभिलाषा की अनदेखी की गई।

जिस अयोध्या को अवनी की अमरावती और धरती का बैकुंठ कहा गया, वह सदियों तक अभिशप्त थी, उपेक्षित रही, सुनियोजित तिरस्कार झेलती रही। अपनी ही भूमि पर सनातन आस्था पद दलित होती रही, किंतु राम का जीवन हमें संयम की शिक्षा देता है और भारतीय समाज ने संयम बनाए रखा। समय के साथ समाज का संकल्प भी दृढ़ होता गया और आज समस्त सृष्टि अयोध्या के वैभव को निहार रही है। यह धर्म नगरी विश्व की सांस्कृतिक राजधानी के रूप में प्रतिष्ठित हो रही है।

संकल्प और साधना की सिद्धि के लिए, हमारी प्रतीक्षा की इस समाप्ति के लिए और संकल्प की पूर्णता के लिए प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के प्रयासों का भी अभिनंदन है। एक दूरदृष्टि लेकर भारत के न भूतो न भविष्यति के स्वर्णिम अवसर को साकार करने में उनकी महत्वपूर्ण भूमिका रही।

श्री राम जन्मभूमि मंदिर की स्थापना भारत के सांस्कृतिक पुनर्जागरण का आध्यात्मिक अनुष्ठान है। यह राष्ट्र मंदिर है। अब भारत को भव्य बनाने के संकल्प को पूर्ण करने की बारी है और भगवान श्रीराम का मंदिर इसकी प्रबल प्रेरणा है। ऐसा होना निश्चित ही है क्योंकि इस प्राण प्रतिष्ठा से समस्त दिशाओं से शुभ संकेत मिलना आरंभ हो ही चुका है। गोस्वामी तुलसीदास जी की इन पंक्तियों के साथ-

''मोरे जिय भरोस दृढ़ सोई, मिलहि राम सगुन सुभ होई।'' शुभमस्तु। ▪

(लेखक भारतीय जनता पार्टी मध्य प्रदेश के प्रदेश संगठन महामंत्री हैं)

प्रधानमंत्री जी विवेकानंद जी के सपनों को पूरा कर रहे हैं- विष्णुदत्त शर्मा

- **प्रधानमंत्री जी गैर राजनीतिक घरों के एक लाख गैर युवाओं को राजनीति में लाने का प्रयास कर रहे।**
- **आज देश के लिए बलिदान देने के साथ देश के लिए जीने वाले युवाओं की जरूरत है।**
- **हर युवा को अपना लक्ष्य तय कर कार्य करना होगा।**
- **विवेकानंद जी ने भारत की संस्कृति के मूल तत्व को दुनिया के सामने रखा था।**

देश को आजाद कराने के लिए हजारों युवाओं, क्रांतिकारियों ने आगे बढ़कर अपना बलिदान दिया। स्वामी विवेकानंद जी जब शिकागो सम्मेलन को संबोधित करने के लिए खड़े हुए तो उन्होंने दो शब्द कहे- मेरे प्यारे भाई एवं बहनों, इसके बाद दस मिनट तक तालियां बजती रहीं। भारत के एक युवा सन्यासी ने शिकागो सम्मेलन में यह जो दो शब्द कहे थे, उसमें भारत का मूल सांस्कृतिक स्वरूप विद्यमान था। उन्होंने भारत की संस्कृति के मूल तत्व को दुनिया के सामने रखा था। युवा सन्यासी जिनकी जयंती को युवा दिवस के रूप में मनाया जा रहा है, उन्होंने कहा था कि अगर अच्छे कार्य करने वाले 100 युवा मिल जाएं तो मैं भारत का परिदृश्य बदल दूंगा। उस समय जो स्वामी विवेकानंद जी जिनका नाम नरेन्द्र था, ने कहा था उसे आज के प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी पूरा कर रहे हैं। प्रधानमंत्री जी ने देश के अलग-अलग विधाओं के पारंगत चाहे एंटरप्रेन्योर हों, स्टार्टअप लाने वाले युवा हो या और किसी भी क्षेत्र के उन्हें राजनीति में आने का आह्वान किया।

प्रधानमंत्री जी ने भारत को 2047 तक विश्व गुरू बनाने के लिए एक लाख ऐसे युवाओं को राजनीति में आने आह्वान किया था, जो राजनैतिक घरों से नहीं हों। आज देश के लिए बलिदान देने वालों के साथ देश के लिए जीने वाले युवाओं की बहुत जरूरत है। भारत युवाओं का देश है। विश्व में सबसे अधिक युवा भारत में हैं। पूर्व प्रधानमंत्री श्रद्धेय अटल बिहारी वाजपेयी जी ने कहा था- एक हाथ में सृजन, दूसरे में प्रलय लिए चलते हैं.....। आज ऐसे ही युवाओं की देश को बहुत जरूरत है। युवा जिस भी क्षेत्र में हैं, उसी क्षेत्र में अपना सर्वोच्च देकर भारत को विश्व गुरू बनाने में अपना योगदान दें। जो जिस व्यवसाय, पेशा या कार्य क्षेत्र में है, वह उसी क्षेत्र में अपना उत्कृष्ट प्रदर्शन करे, जिससे देश हर क्षेत्र में आगे बढ़े और 2047 तक भारत विश्व गुरू बन सके। ▪

हमें ऐसा भारत बनाना है, जिस पर हमारे संविधान निर्माताओं को भी गर्व हो...

इस बार का 'गणतंत्र दिवस' बहुत विशेष है। ये भारतीय गणतंत्र की 75वीं वर्षगाँठ है। इस वर्ष संविधान लागू होने के 75 साल हो रहे हैं। मैं संविधान सभा के उन सभी महान व्यक्तित्वों को नमन करता हूँ, जिन्होंने हमें हमारा पवित्र संविधान दिया। संविधान सभा के दौरान अनेक विषयों पर लंबी-लंबी चर्चाएं हुईं। वो चर्चाएं संविधान सभा के सदस्यों के विचार, उनकी वो वाणी, हमारी बहुत बड़ी धरोहर है।

जब संविधान सभा ने अपना काम शुरू किया, तो बाबा साहब आंबेडकर ने परस्पर सहयोग को लेकर एक बहुत महत्वपूर्ण बात कही थी।

"So far as the ultimate goal is concerned, I think none of us need have any apprehensions. None of us need have any doubt, but my fear which I must express clearly is this, our difficulty as I said is not about the ultimate future. Our difficulty is how to make the heterogeneous mass that we have today, take a decision in common and march in a cooperative way on that road which is bound to lead us to unity. Our difficulty is not with regard to the ultimate; our difficulty is with regard to the beginning."

बाबा साहब इस बात पर जोर दे रहे थे कि संविधान सभा एक साथ, एक मत हो, और मिलकर, सर्वहित के लिए काम करे। डॉ. राजेंद्र प्रसाद जी, जो हमारी संविधान सभा के प्रमुख थे। आइए डॉ. राजेंद्र प्रसाद जी को सुनते हैं -

''हमारा इतिहास बताता है और हमारी संस्कृति सिखाती है कि हम शांति प्रिय हैं और रहे हैं। हमारा साम्राज्य और हमारी फतह दूसरी तरह की रही है, हमने दूसरो को जंजीरो से, चाहे वो लोहे की हो या सोने की, कभी नहीं बांधने की कोशिश की है। हमने दूसरों को अपने साथ, लोहे की जंजीर से भी ज्यादा मजबूत मगर सुंदर और सुखद रेशम के धागे से बांध रखा है और वो बंधन धर्म का है, संस्कृति का है, ज्ञान का है। हम अब भी उसी रास्ते पर चलते रहेंगे और हमारी एक ही इच्छा और अभिलाषा है, वो अभिलाषा ये है कि हम संसार में सुख और शांति कायम करने में मदद पहुंचा सकें और संसार के हाथों में सत्य और अहिंसा वो अचूक हथियार दे सकें जिसने हमें आज आजादी तक पहुंचाया है। हमारी जिंदगी और संस्कृति में कुछ ऐसा है जिसने हमें समय के थपेड़ों के बावजूद जिंदा रहने की शक्ति दी है। अगर हम अपने आदर्शों को सामने रखे रहेंगे तो हम संसार की बड़ी सेवा कर पाएंगे।''

हमारा इतिहास बताता है और हमारी संस्कृति सिखाती है कि हम शांति प्रिय हैं और रहे हैं। हमारा साम्राज्य और हमारी फतह दूसरी तरह की रही है, हमने दूसरो को जंजीरो से, चाहे वो लोहे की हो या सोने की, कभी नहीं बांधने की कोशिश की है।

डॉ. राजेंद्र प्रसाद जी ने मानवीय मूल्यों के प्रति देश की प्रतिबद्धता की बात कही थी। डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी ने अवसरों की समानता का विषय उठाया। डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी ने कहा था -

"I hope sir that we shall go ahead with our work in spite of all difficulties and thereby help to create that great India which will be the motherland of not this community or that, not this class or that, but of every person, man, woman and child inhabiting in this great land irrespective of race, caste, creed or community. Everyone will have an equal opportunity, so that he or she can develop himself or herself according to best talent and serve the great common motherland of India."

हम देशवासियों को, इन विचारों से प्रेरणा लेकर, ऐसे भारत के निर्माण के लिए काम करना है, जिस पर हमारे संविधान निर्माताओं को भी गर्व हो।

'गणतंत्र दिवस' से एक दिन पहले 25 जनवरी को national voter's day है। ये दिन इसलिए अहम है, क्योंकि इस दिन 'भारतीय निर्वाचन आयोग' की स्थापना हुई थी.. Election Commission' हमारे संविधान निर्माताओं ने संविधान में हमारे चुनाव आयोग को, लोकतंत्र में लोगों की भागीदारी को, बहुत बड़ा स्थान दिया है। देश में जब 1951-52 में पहली बार चुनाव हुए, तो कुछ लोगों को संशय

था, कि क्या, देश का लोकतंत्र जीवित रहेगा। लेकिन, हमारे लोकतंत्र ने सारी आशंकाओं को गलत साबित किया - आखिर भारत, Mother of Democracy है। बीते दशकों में भी देश का लोकतंत्र सशक्त हुआ है, समृद्ध हुआ है।

मैं चुनाव आयोग का भी धन्यवाद दूंगा, जिसने समय-समय पर, हमारी मतदान प्रक्रिया को आधुनिक बनाया है, मजबूत किया है। आयोग ने जन-शक्ति को और शक्ति देने के लिए, तकनीक की शक्ति का उपयोग किया। मैं चुनाव आयोग को निष्पक्ष चुनाव के उनके commitment के लिए बधाई देता हूँ। मैं देशवासियों से कहूँगा कि वो ज्यादा-से-ज्यादा संख्या में अपने मत के अधिकार का उपयोग करें, हमेशा करें, और देश के Democratic Process का हिस्सा भी बनें और इस Process को सशक्त भी करें।

प्रयागराज में महाकुंभ का श्रीगणेश हो चुका है। चिरस्मरणीय जन-सैलाब, अकल्पनीय दृश्य और समता-समरसता का असाधारण संगम! इस बार कुंभ में कई दिव्य योग भी बन रहे हैं। कुंभ का ये उत्सव विविधता में एकता का उत्सव मनाता है। संगम की रेती पर पूरे भारत के, पूरे विश्व के लोग, जुटते हैं। हजारों वर्षों से चली आ रही इस परंपरा में कहीं भी कोई भेदभाव नहीं, जातिवाद नहीं। इसमें भारत के दक्षिण से लोग आते हैं, भारत के पूर्व और पश्चिम से लोग आते हैं। कुंभ में गरीब-अमीर सब एक हो जाते हैं। सब लोग संगम में डुबकी लगाते हैं, एक साथ भंडारों में भोजन करते हैं, प्रसाद लेते हैं - तभी तो 'कुंभ' एकता का महाकुंभ है। कुंभ का आयोजन हमें ये भी बताता है कि कैसे हमारी परम्पराएं पूरे भारत को एक सूत्र में बांधती हैं। उत्तर से दक्षिण तक मान्यताओं को मानने के तरीके एक जैसे ही हैं। एक तरफ प्रयागराज, उज्जैन, नासिक और हरिद्वार में कुंभ का आयोजन होता है, वैसे ही, दक्षिण भू-भाग में, गोदावरी, कृष्णा, नर्मदा और कावेरी नदी के तटों पर पुष्करम होते हैं। ये दोनों ही पर्व हमारी पवित्र नदियों से, उनकी मान्यताओं से, जुड़े हुए हैं। इसी तरह कुंभकोणम से तिरुक्कड-यूर, कूड़-वासल से तिरुचेरई अनेक ऐसे मंदिर हैं, जिनकी परम्पराएं कुंभ से जुड़ी हुई हैं।

इस बार आप सब ने देखा होगा कि कुंभ में युवाओं की भागीदारी बहुत व्यापक रूप में नजर आती है, और ये भी सच है कि जब युवा-पीढ़ी, अपनी सभ्यता के साथ, गर्व के साथ, जुड़ जाती है, तो उसकी जड़ें, और मजबूत होती हैं, और तब उसका स्वर्णिम भविष्य भी सुनिश्चित हो जाता है। हम इस बार कुंभ के digital footprints भी इतने बड़े scale पर देख रहे हैं। कुंभ की ये वैश्विक लोकप्रियता हर भारतीय के लिए गर्व की बात है।

कुछ दिन पहले ही, पश्चिम बंगाल में 'गंगा सागर' मेले का भी विहंगम आयोजन हुआ है। संक्रांति के पावन अवसर पर इस मेले में पूरी दुनिया से आए लाखों श्रद्धालुओं ने डुबकी लगाई है। 'कुंभ', 'पुष्करम' और 'गंगा सागर मेला' - हमारे ये पर्व, हमारे सामाजिक मेल-जोल को, सद्भाव को, एकता को बढ़ाने वाले पर्व हैं। ये पर्व भारत के लोगों को भारत की परंपराओं से जोड़ते हैं, और जैसे हमारे शास्त्रों ने संसार में धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष, चारों पर बल दिया है। वैसे ही हमारे पर्वों और परम्पराएं भी आध्यात्मिक, सामाजिक, सांस्कृतिक और आर्थिक, हर पक्ष को भी सशक्त करते हैं।

इस महीने हमने 'पौष शुक्ल द्वादशी' के दिन रामलला के प्राण प्रतिष्ठा पर्व की पहली वर्षगांठ मनाई है। इस साल 'पौष शुक्ल द्वादशी' 11 जनवरी को पड़ी थी। इस दिन लाखों राम भक्तों ने अयोध्या में रामलला के साक्षात् दर्शन कर उनका आशीर्वाद लिया। प्राण प्रतिष्ठा की ये द्वादशी, भारत की सांस्कृतिक चेतना की पुनः प्रतिष्ठा की द्वादशी है। इसलिए पौष शुक्ल द्वादशी का ये दिन एक तरह से प्रतिष्ठा द्वादशी का दिन भी बन गया है। हमें विकास के रास्ते पर चलते हुए, ऐसे ही, अपनी विरासत को भी सहेजना है, उनसे प्रेरणा लेते हुए आगे बढ़ना है।

2025 की शुरुआत में ही भारत ने अंतरिक्ष के क्षेत्र में कई ऐतिहासिक उपलब्धियां हासिल की हैं। एक भारतीय space-tech start-up बेंगलुरू के Pixxel (पिक्सेल) ने भारत का पहला निजी satellite constellation - 'Firefly' (फायर-फ्लाई), सफलतापूर्वक launch किया है। यह satellite constellation दुनिया का सबसे High-Resolution Hyperspectral Satellite Constellation है। इस उपलब्धि ने, न केवल भारत को आधुनिक space technology में अग्रणी बनाया है, बल्कि, यह आत्मनिर्भर भारत की दिशा में भी एक बड़ा कदम है। ये सफलता हमारे निजी space sector की बढ़ती ताकत और innovation का प्रतीक है। मैं इस उपलब्धि के लिए Pixxel की टीम, ISRO, और IN-SPACe को पूरे देश की ओर से बधाई देता हूं।

कुछ दिन पहले हमारे वैज्ञानिकों ने space sector में ही एक और बड़ी उपलब्धि हासिल की। हमारे scientists ने satellites की space docking कराई है। जब अंतरिक्ष में दो spacecraft connect किए जाते हैं, तो, इस प्रक्रिया को Space Docking कहते हैं। यह तकनीक अंतरिक्ष में space station तक supply भेजने और crew mission के लिए अहम् है। भारत ऐसा चौथा देश बना है, जिसने ये सफलता हासिल की है।

हमारे वैज्ञानिक अंतरिक्ष में पौधे उगाने और उन्हें जीवित रखने के प्रयास भी कर रहे हैं। इसके लिए ISRO के वैज्ञानिकों ने लोबिया के बीज को चुना। 30 दिसंबर को भेजे गए ये बीज अंतरिक्ष में ही अंकुरित हुए। ये एक बेहद प्रेरणादायक प्रयोग है जो भविष्य में space में सब्जियां उगाने का रास्ता खोलेगा। ये दिखाता है कि हमारे वैज्ञानिक कितनी दूर की सोच के साथ काम कर रहे हैं।

मैं आपको एक और प्रेरणादायक पहल के बारे में बताना चाहता हूं। IIT मद्रास का ExTeM (एक्सटेम) केंद्र अंतरिक्ष में manufacturing के लिए नई तकनीकों पर काम कर रहा है। ये केंद्र अंतरिक्ष में xD–Printed buildings, metal foams और optical fibers जैसे तकनीकों पर Research कर रहा है। ये सेंटर, बिना पानी के concrete निर्माण जैसी क्रांतिकारी विधियों को भी विकसित कर रहा है। ExTeM (एक्सटेम) की ये Research, भारत के गगनयान मिशन और भविष्य के Space Station को मजबूती देगी। इससे manufacturing में आधुनिक

Technology के भी नए रास्ते खुलेगें।

ये सभी उपलब्धियां इस बात का प्रमाण है कि भारत के वैज्ञानिक और innovators भविष्य की चुनौतियों का समाधान देने के लिए कितने visionary हैं। हमारा देश, आज, Space technology में नए कीर्तिमान स्थापित कर रहा है।

आपने कई बार इंसानों और जानवरों के बीच गजब की दोस्ती की तस्वीरें देखी होंगी, आपने जानवरों की वफादारी की कहानियाँ सुनी होंगी। जानवर पालतू हों या जंगल में रहने वाले पशु, इंसानों से उनका नाता कई बार हैरान कर देता है। जानवर भले बोल नहीं पाते, लेकिन उनकी भावनाओं को, उनके हाव-भाव को, इंसान, भली-भांति भांप लेते हैं। जानवर भी प्यार की भाषा को समझते हैं, उसे निभाते भी हैं। मैं आपसे असम का एक उदाहरण साझा करना चाहता हूं। असम में एक जगह है 'नौगांव'। 'नौगांव' हमारे देश की महान विभूति श्रीमंत शंकरदेव जी का जन्म स्थान भी है। ये जगह बहुत ही सुंदर है। यहाँ हाथियों का भी एक बड़ा ठिकाना है। इस क्षेत्र में कई घटनाएं देखी जा रही थी, जहां हाथियों के झुंड फसलों को बर्बाद कर देते थे, किसान परेशान रहते थे, जिससे आस-पास के करीब 100 गांवों के लोग, बहुत परेशान थे, लेकिन गांववाले, हाथियों की भी मजबूरी समझते थे। उन्हें पता था कि हाथी, भूख मिटाने के लिए, खेतों का रूख कर रहे हैं, इसलिए गांव वालों ने इसका समाधान निकालने की सोची। गावं वालों की एक टीम बनी, जिसका नाम था 'हाथी बंधु'। हाथी बंधुओं ने सूझ-बूझ दिखाते हुए करीब 800 बीघा बंजर भूमि पर एक अनूठी कोशिश की। यहाँ गांव वालों ने आपस में मिल-जुल कर apier grass लगाई। इस घास को हाथी बहुत पसंद करते हैं। इसका असर ये हुआ कि हाथियों ने खेतों की ओर जाना कम कर दिया। ये हजारों गांववालों के लिए बहुत राहत की बात है। उनका ये प्रयास हाथियों को भी खूब भाया है।

हमारी संस्कृति और विरासत हमें आस-पास के पशु-पक्षियों के साथ प्यार से रहना सिखाती है। ये हम सभी के लिए बहुत खुशी की बात है, कि बीते दो महीनों में, हमारे देश में दो नए Tiger Reserves जुड़े हैं। इनमें से एक है छत्तीसगढ़ में गुरु घासीदास-तमोर पिंगला Tiger Reserve और दूसरा है - MP में रातापानी Tiger Reserve.

स्वामी विवेकानंद जी ने कहा था, जिस व्यक्ति में अपने Idea को लेकर जुनून होता है, वही, अपने लक्ष्य को हासिल कर पाता है। किसी Idea को सफल बनाने के लिए हमारा passion और dedication सबसे जरूरी होता है। पूरी लगन और उत्साह से ही innovation, creativity और सफलता का रास्ता अवश्य निकलता है। कुछ दिन पहले ही, स्वामी विवेकानंद जी की जयंती पर, मुझे, 'Viksit Bharat Young Leaders Dialogue' का हिस्सा बनने का सौभाग्य मिला। यहां मैंने देश के कोने-कोने से आए युवा-साथियों के साथ अपना पूरा दिन बिताया। युवाओं ने startups, culture, Women, Youth और Infrastructure जैसे कई sectors को लेकर अपने Ideas शेयर किए।

कुछ दिन पहले ही StartUp इंडिया के 9 साल पूरे हुए हैं। हमारे देश में जितने StartUps 9 साल में बने हैं उनमें से आधे से ज्यादा Tier 2 और Tier 3 शहरों से हैं, और जब यह सुनते हैं तो हर हिन्दुस्तानी का दिल खुश हो जाता है यानि हमारा StartUp Culture बड़े शहरों तक ही सीमित नहीं है। और आपको यह जानकर हैरानी होगी कि छोटे शहरों के StartUps में आधे से ज्यादा का नेतृत्व हमारी बेटियां कर रही हैं।

जब यह सुनने को मिलता है कि अंबाला, हिसार, कांगड़ा, चेंगलपट्टू, बिलासपुर, ग्वालियर और वाशिम जैसे शहर StartUps के Center बन रहे हैं, तो 'मन' आनंद से भर जाता है। नागालैंड जैसे राज्य में, पिछले साल StartUps के Registration में 200 प्रतिशत से अधिक की वृद्धि हुई है। Waste Management, Non-Renewable Energy, Biotechnology और Logistics ऐसे Sector हैं, जिनसे जुड़े Start-Up सबसे ज्यादा देखे जा रहें हैं। ये Conventional Sectors नहीं हैं लेकिन हमारे युवा-साथी भी तो Conventional से आगे की सोच रखते हैं, इसलिए, उन्हें सफलता भी मिल रही है।

10 साल पहले जब कोई StartUp के क्षेत्र में जाने की बात करता था, तो उसे, तरह-तरह के ताने सुनने को मिलते थे। कोई ये पूछता था कि आखिर StartUp होता क्या है? तो कोई कहता था कि इससे कुछ होने वाला नहीं है! लेकिन अब देखिए, एक दशक में कितना बड़ा बदलाव आ गया। आप भी भारत में बन रहे नए अवसरों का भरपूर लाभ उठाएं। अगर आप खुद पर विश्वास रखेंगे तो आपके सपनों को भी नई उड़ान मिलेगी।

नेक नियत से निस्वार्थ भावना के साथ किए गए कामों की चर्चा दूर-सुदूर पहुँच ही जाती है। और हमारा 'मन की बात' तो इसका बहुत बड़ा Platform है। हमारे इतने विशाल देश में दूर-दराज भी अगर कोई अच्छा काम कर रहा होता है, कर्तव्य भावना को सर्वोपरि रखता है, तो उसके प्रयासों को सामने लाने का, ये, बेहतरीन मंच है।

अरुणाचल प्रदेश में दीपक नाबाम जी ने सेवा की अनूठी मिसाल पेश की है। दीपक जी यहां Living-Home चलाते हैं। जहां मानसिक रूप से बीमार, शरीर से असमर्थ लोगों और बुजुर्गों की सेवा की जाती है, यहां पर Drugs की लत के शिकार लोगों की देख-भाल की जाती है। दीपक नाबाम जी ने बिना किसी सहायता के समाज के वंचित लोगों, हिंसा पीड़ित परिवारों, और बेघर लोगों को, सहारा देने का अभियान शुरू किया। आज उनकी सेवा ने एक संस्था का रूप ले लिया है। उनकी संस्था को कई Award से भी सम्मानित किया गया है।

लक्षद्वीप के कवरत्ती द्वीप पर Nurse के रूप में काम करने वाली के. हिंडुम्बी जी उनका काम भी बहुत प्रेरित करने वाला है। आपको ये जानकर हैरानी होगी कि वो 18 वर्ष पहले सरकारी नौकरी से Retire हो चुकी हैं, लेकिन आज भी उसी करुणा, और स्नेह के साथ, लोगों की सेवा में जुटी हैं जैसे वो पहले करती थीं। लक्षद्वीप के ही केजी मोहम्मद जी के प्रयास ये भी अद्भुत हैं। उनकी मेहनत से मिनीकॉय द्वीप का Marine Ecosystem मजबूत हो रहा

है। उन्होनें पर्यावरण के प्रति लोगों को जागरूक करने के लिए कई गीत लिखे हैं। उन्हें लक्षद्वीप साहित्य कला अकादमी की तरफ से Best folk song award भी मिल चुका है। केजी मोहम्मद retirement के बाद वहां के museum के साथ जुड़कर भी काम कर रहे हैं।

एक और बड़ी अच्छी खबर अंडमान और निकोबार द्वीप समूह से भी है। निकोबार जिले में virgin coconut oil को हाल ही में GI Tag मिला है। virgin coconut oil उसको GI Tag के बाद एक और नई पहल हुई है। इस oil के उत्पादन से जुड़ी महिलाओं को संगठित कर self help group बनाए जा रहे हैं, उन्हें Marketing और branding की special training भी दी जा रही है। ये हमारे आदिवासी समुदायों को आर्थिक रूप से सशक्त बनाने की दिशा में एक बड़ा कदम है। मुझे विश्वास है, भविष्य में निकोबार का virgin coconut oil दुनिया-भर में धूम मचाने वाला है और इसमें सबसे बड़ा योगदान अंडमान और निकोबार के महिला self help group का होगा।

पल-भर के लिए आप एक दृष्य की कल्पना कीजिए- कोलकाता में जनवरी का समय है। दूसरा विश्व युद्ध अपने चरम पर है और इधर भारत में अंग्रेजों के खिलाफ गुस्सा उफान पर है। इसकी वजह से शहर में चप्पे-चप्पे पर पुलिसवालों की तैनाती है।

कोलकाता के बीचों-बीच एक घर के आस-पास पुलिस की मौजूदगी ज्यादा चौकस है। इसी बीच, लंबा Brown coat, pants और काली टोपी पहने हुए एक व्यक्ति रात के अंधेरे में एक बंगले से car लेकर बाहर निकलता है। मजबूत सुरक्षा वाली कई चौकियों को पार करते हुए वो एक रेलवे स्टेशन गोमो पहुँच जाता है। ये स्टेशन अब झारखंड में है। यहां से एक train पकड़कर वो आगे के लिए निकलता है। इसके बाद अफगानिस्तान होते हुए, वो यूरोप जा पहुंचता है- और यह सब अंग्रेजी हुकूमत के अभेद किलेबंदी के बावजूद होता है।

ये कहानी आपको फिल्मी सीन जैसी लगती होगी। आपको लग रहा होगा, इतनी हिम्मत दिखाने वाला व्यक्ति आखिर किस मिट्टी का बना होगा। दरअसल ये व्यक्ति कोई और नहीं, हमारे देश की महान विभूति, नेताजी सुभाष चंद्र बोस थे। 23 जनवरी यानि उनकी जन्म-जयंती को अब हम 'पराक्रम दिवस' के रूप में मनाते हैं। उनके शौर्य से जुड़ी इस गाथा में भी उनके पराक्रम की झलक मिलती है। कुछ साल पहले, मैं उनके उसी घर में गया था जहां से वे अंग्रेजों को चकमा देकर निकले थे। उनकी वो car अब भी वहां मौजूद है। वो अनुभव मेरे लिए बहुत ही विशेष रहा। सुभाष बाबू एक visionary थे। साहस तो उनके स्वभाव में रचा-बसा था। इतना ही नहीं, वे बहुत कुशल प्रशासक भी थे। महज 27 साल की उम्र में वो Kolkata Corporation के Chief Executive Officer बने और उसके बाद उन्होंने Mayor की जिम्मेदारी भी संभाली। एक प्रशासक के रूप में भी उन्होंने कई बड़े काम किए। बच्चों के लिए स्कूल, गरीब बच्चों के लिए दूध का इंतजाम और स्वच्छता से जुड़े उनके प्रयासों को आज भी याद किया जाता है। नेताजी सुभाष का रेडियो के साथ भी गहरा नाता रहा है। उन्होंने 'आजाद हिन्द रेडियो' की स्थापना की थी, जिस पर उन्हें सुनने के लिए लोग बड़ी बेसब्री से प्रतीक्षा करते थे। उनके संबोधनों से, विदेशी शासन के खिलाफ, लड़ाई को, एक नई ताकत मिलती थी।

'आजाद हिन्द रेडियो' पर अंग्रेजी, हिन्दी, तमिल, बांग्ला, मराठी, पंजाबी, पश्तो और उर्दू में news bulletin का प्रसारण होता था। मैं नेताजी सुभाष चंद्र बोस को नमन करता हूं। देश-भर के युवाओं से मेरा आग्रह है कि वे उनके बारे में अधिक-से-अधिक पढ़ें और उनके जीवन से निरंतर प्रेरणा लें।

'मन की बात' का ये कार्यक्रम, हर बार मुझे राष्ट्र के सामूहिक प्रयासों से, आप सब की सामूहिक इच्छाशक्ति से, जोड़ता है। हर महीने मुझे बड़ी संख्या में आपके सुझाव, आपके विचार मिलते हैं और हर बार इन विचारों को देखकर विकसित भारत के संकल्प पर मेरा विश्वास और बढ़ता है। आप सब इसी तरह अपने-अपने काम से भारत को सर्वश्रेष्ठ बनाने के लिए प्रयास करते रहें। ▪

आजादी से अंतरिक्ष तक की चर्चा- विष्णुदत्त शर्मा

"मन की बात" कार्यक्रम में प्रधानमंत्री जी ने बताया कि देश की आजादी के बाद जो संविधान सभा थी, उसकी मूल भावना क्या थी। उस सभा में बाबा साहब अंबेडकर जी ने क्या कहा, डॉ. श्यामाप्रसाद मुखर्जी ने क्या कहा और डॉ. राजेंद्र प्रसाद जी ने क्या कहा। प्रधानमंत्री जी ने उनके क्लिप भी देश की जनता के सामने प्रस्तुत किए। प्रधानमंत्री जी ने बताया कि नेताजी सुभाषचंद्र बोस, किस तरह अंग्रेजों की कैद से बाहर निकले और कैसे उन्होंने सारी दुनिया में देश की आजादी के लिए काम किया।

प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी ने 'मन की बात' कार्यक्रम में भोपाल शहर के पास स्थित रातापानी टाइगर रिजर्व का भी उल्लेख करते हुए कहा है कि भारतीय संस्कृति और विरासत आस-पास के पशु-पक्षियों के साथ स्नेह से रहना सिखाती है। देश में दो नए टाइगर रिजर्व की शुरुआत वनस्पति और जीव जगत के संबंधों को अधिक समृद्ध करेगा। पशुओं के कारण किसान भाईयों को कई तरह की समस्याओं का सामना करना पड़ता है। ये पशु कई बार उनकी फसलों को नुकसान पहुंचाते हैं। उन्होंने असम का उदाहरण प्रस्तुत करते हुए बताया कि वहां जंगली हाथियों द्वारा फसलों को पहुंचाए जाने वाले नुकसान को रोकने के लिए स्थानीय लोगों ने एक नवाचार किया। उन्होंने हाथी बंधु नाम से एक ग्रुप बनाया और सभी ने मिलकर करीब 800 एकड़ जमीन पर चारा उगाया। अब हाथी आते हैं, लेकिन चारा खाकर वापस लौट जाते हैं, खेतों में नहीं घुसते। प्रधानमंत्री जी ने अपने कार्यक्रम में धर्म और आध्यात्म के दुनिया के सबसे बड़े आयोजन प्रयागराज में चल रहे महाकुंभ की चर्चा की। साथ ही उन्होंने उज्जैन में होने वाले सिंहस्थ कुंभ की भी चर्चा की। प्रधानमंत्री जी अंतरिक्ष के क्षेत्र में हमारे वैज्ञानिकों द्वारा किए जा रहे अनुसंधान की चर्चा करते हुए कहा कि आने वाले समय में अंतरिक्ष में कृषि की संभावनाएं बन रही हैं, जो एक बड़ी क्रांति होगी। ▪

ऋग्वेद से निकला है हिन्दू शब्द

वीर सावरकर

हिन्दू, हिन्दुस्थान, हिन्द इन प्राकृत शब्दों का मूल उद्‌गम ऋग्वेदकालीन सप्तसिन्धु नामक हमारे अपने प्राचीनतम राष्ट्रीय अभिधा में ही है।

आसिंधुसिंधुपर्यन्ता यस्य भारतभूमिका।
पितृभू: पुण्यभूश्चैव स वै, 'हिन्दू' रिति स्मृत:।।

"हिन्दू" शब्द हिन्दू संगठन का प्रमुख धार है, अतएव दृढ़ या ढीला, चिरन्तन या चंचल होगा उसी प्रमाण में उस आधार पर निर्मित हिन्दू संगठन की यह प्रचंड बनावट भी व्यापक, भारी भरकम तथा स्थायी होने वाली है। हिन्दू महासभा क्या तथा उसने उठाया हुआ हिन्दू संगठन का महान कार्य क्या, जब तक वह 'हिन्दू किसे कहा जाय?' इस प्रश्न का निश्चित उत्तर नहीं देता तब तक उसका एक पग भी दिशाभ्रम के बिना आगे बढ़ना असंभव होगा, अनर्थकारी होगा।

'हिन्दू' शब्द की प्राचीनता

1. हिन्दू शब्द की उत्पत्ति न तो मुसलमानों द्वारा हुई है न ही मुसलमानों ने प्राथमिक रूप से यह शब्द हमारे राष्ट्र के लिये सम्बोधित ही किया है जिस काल में हिन्दू शब्द की उत्पत्ति के सम्बन्ध में पर्याप्त गवेषणा ही नहीं हुई थी उस काल की यह दुष्ट दन्तकथा भर है? हिन्दू शब्द की ऐतिहासिक उत्पत्ति के निम्नलिखित स्पष्टीकरण से यह सिद्ध हो जाएगा।
2. हिन्दू, हिन्दुस्थान, हिन्द इन प्राकृत शब्दों का मूल उद्‌गम ऋग्वेदकालीन सप्तसिन्धु नामक हमारे अपने प्राचीनतम राष्ट्रीय अभिधा में ही है। हमारे वेदकालीन पूर्वजों ने ऋग्वेद में 'सप्तसिन्धव:' इस शब्द को देशवाचक एवं राष्ट्रवाचक अर्थों में ही, स्वत: की राष्ट्रीय अभिधा के रूप में, स्वत: के हेतु ही प्रयुक्त किया है।
उस प्राचीन काल में हमारे निकटस्थ ईरान, बाबिलोन, प्राचीन अरब आदि राष्ट्र हमें हमारे 'सप्तसिन्धु' इसी राष्ट्रीय अभिधा से जानते थे। 'पारसियों ने' ढाई हजार वर्ष पूर्व के उनके धर्मग्रंथों में हमारे राष्ट्र को 'सप्तहिन्दू' से ही सम्बोधित किया है। तत्कालीन प्राचीन 'बेबोलियन' ग्रंथों में हमारे देश से निर्यातित झीने तथा सुन्दर वस्त्रों को 'सिन्धु' या 'सिन्धुव' कहा हुआ है।
अलेक्जेण्डर के दो सौ वर्ष पूर्व का ग्रीक इतिहासकार हेकाटेआस भी हमारे प्राचीन राष्ट्र को हमारे ही सिन्धु शब्द के ग्रीक रूप Indu India इसी नाम का उल्लेख करता है। बुद्धकाल में हिन्दुस्थान में आये हुए, 'चीनी' यात्री हुएन्त्संग ने भी हमारे राष्ट्र को सिन्धु शब्द का चीनी अपभ्रंश 'शिन्दु' इसी अभिधा से सम्बोधित किया था और तो और, मोहम्मद पैगंबर के जन्म के पूर्व जब अरबी लोग शैव एवं शाक्त पन्थ सदृश धर्म के अनुयायी थे और जब मुसलमानी धर्म का पता ठिकाना भी अरबों को ज्ञात नहीं था तब दो हजार वर्ष पूर्व के एक अरब ग्रंथ में हमारे राष्ट्र के संबंध में वर्णन करते हुए हिन्द एवं हिन्दू इन नामों का गौरव से उच्चारण किया गया है।
3. हिन्दू, हिन्दुस्थान आदि प्राकृत रूप हमारे सप्तसिन्धु, सिन्धु, सिन्धुस्थान इन संस्कृत एवं स्वकीय तथा प्राचीन अभिधाओं के ही प्राकृत रूप हैं, यह बात हमारे प्राचीन पंडितवर्ग को भी ज्ञात थी। उन नामों को वर्तमान में बादरायण सम्बन्ध से जोड़ा नहीं गया है। इसे स्पष्ट करने वाले भविष्यपुराण के निम्नलिखित उल्लेख जितने अभिनन्दनीय हैं उतने ही उद्बोधक भी हैं। 'सप्तसिन्धु' का ही प्राकृत रूप 'हप्तहिन्दु' है यह बात उक्त पुराण के निम्नलिखित श्लोकों में वर्णित है
जानुस्थाने जैनुशद: सप्तसिन्धुस्तथैव च।। हप्तहिन्दुर्यावनीति पुनर्ज्ञेया गुरूण्डिका।।1।।
इस प्रकार उधर उस सिन्धुसरिता का एवं इधर इस सिन्धुसागर का उल्लंघन न करें। उनका उल्लंघन करते ही विदेश गमन का निषिद्ध कृत्य हो जाता है। सिन्धु बन्धन की हजार वर्ष पुरानी यह शास्त्राज्ञा भी दर्शाती है कि, उस प्राचीन काल से ही हमारे इस हिन्दुस्थान की मर्यादा 'आसिन्धु सिन्धुपर्यंता' यही मानी जाती थी।
4. सप्तसिन्धु, सिन्धुदेश, सिन्धुस्थान आदि शब्दों का 'हिन्दु' यह प्राकृत रूप भी हमारे ही प्रकृतीकरण के नियम के अनुरूप हमारे प्राकृत में रूढ़ हो गया संस्कृत शब्दों के 'स' का हमारे प्राकृत में 'ह' विकल्प होता है। मारवाड़ी आदि बोलियों में इसके उदाहरण प्रचुरता से दिखाई देते हैं। जैसे केसरी का केहरी, सप्ताह का हप्ता, सार का हार, दश का दहा आदि, अस्मि, असि, स्म: आदि के प्राकृत रूप इसी के उदाहरण हैं। हमारी प्राकृत के समान ही प्राचीन पारसी भाषा भी संस्कृत की ही एक प्राकृत भाषा होने के कारण उसके कई रूप हमारे समान ही बने हुए दिखाई देते हैं। परन्तु केवल इसी आधार पर यह नहीं कहा जा सकता कि वे रूप इधर से आये हैं या इसी आधार पर उन्हें विदेशी भी नहीं माना जा सकता। चन्द भाट पूर्व की हिन्दी की जो पुरानी से पुरानी कविता आज मानी जाती है उसमें भी हिन्दुस्थान शब्द का गौरवयुक्त प्रयोग किया गया है। ▪

(हिन्दुत्व के पंच प्राण से)

सतीत्व और स्वाभिमान की रक्षा का जौहर

इतिहास में अमर है 1600 वीरांगनाओं का जौहर

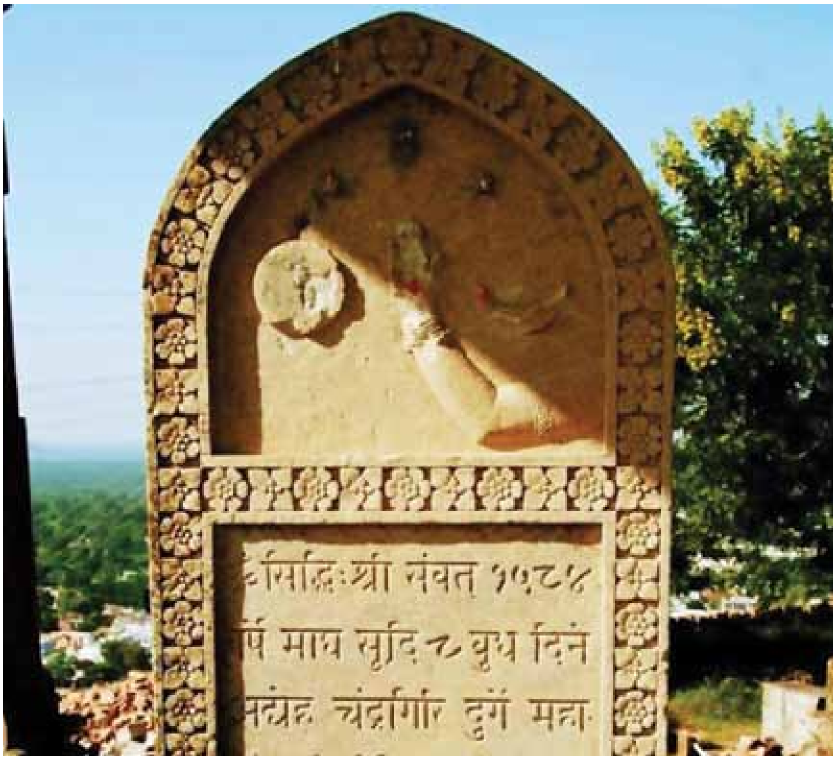

मध्यकालीन बर्बर मुगल आक्रांताओं से युद्ध में पराजय के बाद अपनी अस्मिता बचाने के लिए सिंध, ग्वालियर, रणथंभौर, चित्तौड़, चंदेरी सहित अन्य कई स्थानों पर वीरांगना नारियों ने जौहर कर अपना आत्मोत्सर्ग किया। इनमें चंदेरी का जौहर सबसे बड़ा जौहर रहा।

हितानंद शर्मा

स्व-देश, स्वाभिमान और स्वतंत्रता की रक्षा करने के भारतीयों के संकल्प और संघर्ष विश्व इतिहास में अनूठे हैं। किसी थोड़े से कालखंड नहीं बल्कि यह हजार वर्षों के सतत् संघर्ष की शौर्यगाथा है। संस्कृति और धर्म की रक्षा के लिए पुरुष, स्त्री, युवा, बच्चे, वृद्ध सभी के बलिदान प्रणम्य हैं। अपने स्वत्व, स्वाभिमान और सतीत्व की रक्षा के इस संघर्ष में स्त्रियों ने भी सदैव त्याग और बलिदान का मार्ग चुना। पहले अपने परिवार के पुरुषों का संबल बन कर विजय की कामना के साथ उनके भाल पर तिलक कर युद्ध क्षेत्र में भेजा। दुर्भाग्य से यदि विजयश्री न मिली तो किले में ही स्वयं की अस्मिता की हर कीमत पर रक्षा की। भारत की महान बेटियों ने अग्नि की भस्म बन जाना स्वीकार किया लेकिन अपनी मृत देह को भी शत्रु को स्पर्श नहीं करने दिया। मध्यकालीन बर्बर आक्रांताओं से अपनी अस्मिता की रक्षा करने के लिए इन महान भारतीय नारियों ने जौहर के अग्निपथ पर चलने में भी एक क्षण की देरी नहीं की। जौहर की ऐतिहासिक घटनाओं के ये उदाहरण केवल भारत में ही मिलते हैं।

मध्यकालीन बर्बर मुगल आक्रांताओं से युद्ध में पराजय के बाद अपनी अस्मिता बचाने के लिए सिंध, ग्वालियर, रणथंभौर, चित्तौड़, चंदेरी सहित अन्य कई स्थानों पर वीरांगना नारियों ने जौहर कर अपना आत्मोत्सर्ग किया। इनमें चंदेरी का जौहर सबसे बड़ा जौहर रहा। चंदेरी वर्तमान में अशोकनगर जिले में स्थित एक नगर है। इसी चंदेरी के दुर्ग में राजपूताने की 1600 से अधिक वीरांगनाओं ने एक साथ अग्निकुंड में अग्निदाह कर मृत्यु को स्वीकार किया। मालवा की राजधानी रहे चंदेरी का मजबूत दुर्ग आज भी राजा मेदिनी राय के पराक्रम और वीरता की गाथा कहता है। इसी दुर्ग के खूनी दरवाजे में 1600 से अधिक वीरांगना नारियों के बलिदान की करुण किन्तु महान बलिदान की कथा भी लिखी है।

496 वर्ष बीत गए हैं। यह इतिहास के उस कालखंड की पराक्रमी राजा मेदिनी राय और रानी मणिमाला की वीरता और शौर्य के साथ करुणा से भरी गाथा है। चंदेरी में तब राजा मेदिनी राय का शासन था। उनकी रानी मणिमाला भी उन्हीं की तरह स्वाभिमानी थी। चंदेरी सामरिक, व्यापारिक और मालवा में प्रवेश की दृष्टि से अति महत्वपूर्ण था। विध्वंसक विस्तारवादी नीति के साथ आक्रांता बाबर मालवा पर अपनी कुदृष्टि डाल चुका था। वह दिसंबर 1527 में अपनी सेना लेकर चंदेरी की ओर बढ़ा। उसने इस युद्ध को जेहाद घोषित किया। 20 जनवरी 1528 को उसने राजा मेदिनी राय को एक पत्र भेजा जिसमें आत्म समर्पण कर मुगल राज्य की

अधीनता स्वीकार करने का प्रस्ताव था। बदले में शमशाबाद की जागीर देने का भी प्रस्ताव था। राजा मेदिनी राय स्वाभिमानी राजा थे, उन्होंने अधीनता का यह प्रस्ताव अस्वीकार कर दिया। शत्रु बिल्कुल निकट आ गया था यह देख उन्होंने युद्ध की तैयारी और तेज कर दी। मेवाड़ के राणा सांगा इसके पूर्व में16 मार्च 1927 को बाबर के विरुद्ध राजपूत शक्ति की ओर खानवा के युद्ध में पराजय देख चुके थे, राजा मेदिनी राय भी इस युद्ध में वीरता से लड़े थे। खानवा के युद्ध में राजपूत शक्ति कमजोर पड़ जाने से राणा सांगा की ओर से भी सहायता मिलना संभव नहीं हो रहा था। पराजय लगभग तय थी फिर भी वीर मेदिनी राय ने झुकने के स्थान पर युद्ध का विकल्प चुना। एक वीर योद्धा युद्ध लड़ कर विजय प्राप्त करने या वीरगति को प्राप्त हो जाने के लिए सदैव उन्मुख रहता है। युद्ध की घोषणा कर दी गई।

27 जनवरी को सूर्य उदय होते ही युद्ध शुरू हुआ। तीसरे दिन 29 जनवरी को भीषण और निर्णायक युद्ध हुआ। पराक्रम से लड़ते हुए राजा मेदिनी राय वीरगति को प्राप्त हुए। राजा की मृत्यु और बाबर के महल की ओर आने की सूचना जैसे ही रानी मणिमाला के पास पंहुची तो उन्होंने 1600 क्षत्राणियों और अपने सतीत्व की रक्षा हेतु जौहर का निर्णय लिया। महल के अंदर बनाए गए जौहर कुंड में प्रज्वलित अग्नि में एक-एक कर सभी क्षत्राणियों ने समिधा के समान स्वयं की आहुति दे दी। अग्नि की लपटें कई कोस दूर तक दिखाई दे रही थी। जब यह दृश्य महल में आए बर्बर बाबर ने देखा तो वह भी कांप गया। उसके साथ आई चौथी बीबी दिलावर बेगम वहीं बेहोश होकर गिर गयी। इस प्रकार इन महान नारियों ने अपने स्वाभिमान और सतीत्व की रक्षा के लिए स्वयं को बलिदान कर दिया।

चंदेरी के दुर्ग में ऐतिहासिक जौहर की यह गाथा क्षत्राणियों ने अपने रक्त से लिखी है। यह भारत की नारियों का अपनी अस्मिता और सतीत्व की रक्षा के लिए किए गए आत्मोत्सर्ग का ऐसा उदाहरण है जिसकी दूसरी मिसाल विश्व इतिहास में नहीं मिलती। इसी जौहर की स्मृति में किले में एक स्मारक बनाया गया है और प्रतिवर्ष इन वीरांगनाओं को श्रद्धांजलि देने आयोजन होते हैं। यह स्मारक इस बात का संदेश देता है कि भारतीयों ने बिना झुके अपना बलिदान देकर भी देश, धर्म, संस्कृति और स्वाभिमान को बचाए रखा। ऐसे ही अनगिनत बलिदानों की बुनियाद पर आज भारतीय समाज सुखी और स्वतंत्र जीवन जी रहा है। चंदेरी का यह जौहर वास्तव में देश के स्वाभिमान के लिए प्रेरणा है। ▪

(लेखक भारतीय जनता पार्टी मध्यप्रदेश के प्रदेश संगठन महामंत्री हैं।)

भारत को एकसूत्र में बांधने वाला है जनजातीय समाजः विष्णुदत्त शर्मा

भगवान बिरसा मुंडा जी की 150 वीं जयंती के कार्यक्रमों के दौरान हमें जन-जन तक पहुंचना है, छात्रावासों में जाकर युवाओं से मिलना है।

भगवान बिरसा मुंडा ने सिर्फ जनजातीय क्षेत्र में ही नहीं, बल्कि संपूर्ण भारत में क्रांति का इतिहास लिखा। उनके संघर्षों और बलिदानों के बल पर समाज ने उन्हें भगवान की मान्यता दी। राजा शंकर शाह और रघुनाथ शाह ने तोप के मुंह से बांधकर उड़ा देने का विकल्प चुना, लेकिन अंग्रेजों के सामने सिर नहीं झुकाया। जिस जनजातीय समाज में ऐसे-ऐसे क्रांतिवीर और योद्धा हुए हैं, उन्हें प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष 'बेजुबान' कहते हैं। जनजातीय समाज बेजुबान नहीं है, बल्कि देश की सबसे बड़ी ताकत है। इनके प्रयासों से ही देश एक सूत्र में बंधा है। भगवान बिरसा मुंडा जी की 150 वीं जयंती पर होने वाले कार्यक्रमों के माध्यम से हमें देश और समाज में जनजातीय क्रांतिवीरों के योगदान तथा जनजातीय समाज के प्रति कांग्रेस की सोच को जन-जन तक पहुंचाना है।

प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी भारत माता के माथे पर लगे हर कलंक को मिटा रहे हैं। झारखंड में भगवान बिरसा मुंडा का स्मारक जिस दुरावस्था में था। मोदी जी की सरकार ने स्मारक को भव्यता प्रदान की है। उन्होंने भगवान बिरसा मुंडा ही नहीं, बल्कि संपूर्ण जनजातीय समाज को सम्मान दिया। संविधान निर्माता डॉ. बाबा साहब अंबेडकर को अपमानित करने काम कांग्रेस और उसकी सरकारों ने किया, लेकिन मोदी जी की सरकार उन्हें वह सम्मान दे रही है, जिसके वो हकदार थे। धारा 370 जो कहती थी कि सफाईकर्मी का बेटा योग्य होने के बावजूद सफाईकर्मी ही रहेगा, उसे प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी की सरकार ने हटा दिया है। हमारी संसद अंग्रेजों के बनाए भवन में लगती थी, लेकिन मोदी जी ने नया संसद भवन बनवाया। देश विरोधी, धर्म विरोधी और विकास विरोधी लोग समाज को तोड़ने के प्रयासों में लगे हैं, विकास की धारा को बाधित करने का प्रयास कर रहे हैं। हमें ऐसे लोगों को जवाब देना है। भगवान बिरसा मुंडा जी की 150 वीं जयंती के कार्यक्रमों के दौरान हमें जन-जन तक पहुंचना है, छात्रावासों में जाकर युवाओं से मिलना है। कार्यक्रमों, खेल प्रतियोगिताओं के माध्यम से युवाओं को जोड़ना है और उनका विश्वास जीतना है। साथ ही उन्हें यह बताना है कि भाजपा की सरकारें जनजातीय समाज की खुशहाली, विकास और सम्मान के लिए कैसे-कैसे प्रयास कर रही है। ▪

सप्तसिन्धु से हिन्दू

पूज्य मा. स. गोलवलकर

अनादि काल से एक महान एवं सुसंस्कृत समाज, जिसे 'हिंदू' कहते हैं, यहाँ उसी भूमि के पुत्र के रूप में निवास कर रहा है। किन्तु कुछ लोग हैं, जो हिन्दू नाम पर आपत्ति करते हैं और कहते हैं कि तुलनात्मक दृष्टि से इसका मूल तो सांप्रदायिक है तथा यह नाम हमें विदेशियों द्वारा दिया गया है। वे हिन्दू के स्थान पर आर्य अथवा भारतीय नाम का सुझाव देते हैं। निस्संदेह आर्य एक स्वाभिमानपूर्ण प्राचीन नाम है, किन्तु इसका प्रयोग विशेषतया गत सहस्त्र वर्ष से अप्रचलित हो गया है। गत शताब्दी में ऐतिहासिक शोध के नाम पर अंग्रेजों द्वारा किए हुए अपप्रचार ने हमारे मस्तिष्क में धूर्ततापूर्वक बनाए गए आर्य द्रविड़ विवाद के विषैली जड़ें गहराई तक पैठा दी हैं। अतः आर्य नाम का प्रयोग हमारे उद्देश्य की सिद्धि में स्वतः निष्फलता का कारण बनेगा, क्योंकि हमारा उद्देश्य तो अपने उस संपूर्ण समाज का साक्षात करना है, जो अतीत और वर्तमान की समस्त संज्ञाओं से निरपेक्ष हिमालय से कन्याकुमारी तक फैला हुआ है।

भारतीय भी प्राचीन नाम है, जो अति प्राचीनकाल से हमसे संबंधित है। भारत नाम वेदों तक में मिलता है। हमारे पुराणों ने भी हमारी मातृभूमि को भारत कहा है और यहाँ के निवासियों को भारती। वास्तव में भारती संबोधन हिन्दू का पर्यायवाची है, किन्तु आज भारतीय शब्द के संबंध में भी भ्रांत धारणा उत्पन्न हो गई है। सामान्यतया यह इंडियन शब्द के अनुवाद के रूप में प्रयुक्त होने लगा है, जिसमें इस देश में रहने वाली मुसलमान, ईसाई तथा पारसी आदि सभी जातियों का समावेश होता है। इस प्रकार भारतीय शब्दप्रयोग, जब हम इस विशिष्ट समाज को लक्ष्य कर करना चाहते हैं, हमें भ्रमित कर सकता है। केवल हिन्दू शब्द ही इस भाव के पूर्ण एवं शुद्ध रीति से व्यक्त करता है, जिसे हम व्यक्त करना चाहते हैं। यह कल्पना भी ऐतिहासिक दृष्टि से ठीक नहीं है कि हिन्दू नाम नूतन है अथवा विदेशियों द्वारा हमें दिया गया है। विश्व के प्राचीनतम अभिलेख 'ऋग्वेद' में हमें 'सप्त सिंधु' नाम मिलता है जो हमारे देश एवं हमारे जन के लिए उपाधि के रूप में प्रयुक्त हुआ है। यह भी भली प्रकार से ज्ञात है कि संस्कृत का 'स' वर्ण कभी कभी हमारी कुछ प्राकृत भाषाओं में तथा कुछ यूरोपीय भाषाओं में 'ह' में परिवर्तित हो जाता है। इस प्रकार प्रथम 'हप्त हिन्दू' तत्पश्चात् हिन्दू नाम प्रचलित हो गया। इसलिए हिन्दू हमारा अपना गौरवशाली नाम है, जिसके द्वारा बाद में अन्य लोग भी हमें पुकारने लगे।

हिन्दू और हिन्दुस्थान

बृहस्पति आगम के अनुसार 'हिन्दू' शब्द का 'हि' 'हिमालय' से तथा 'न्दु', 'इन्द' 'इन्दु सरोवर' (दक्षिणी सागर) से लिया गया है। इस प्रकार यह (शब्द) हमारी मातृभूमि के संपूर्ण विस्तार को संप्रेषित करता है।

बृहस्पति आगम का कथन है

हिमालयं समारभ्य यावदिन्दु सरोवरम्।
तं देव निर्मितं देशं हिंदुस्थानं प्रचक्ष्यते।।

(देवताओं द्वारा निर्मित वह देश जो हिमालय से प्रारंभ होकर इंदु सरोवर (अर्थात् दक्षिणी सागर) तक फैला हुआ है, हिंदुस्थान कहलाता है।)

'हिन्दू' शब्द का इतिहास

'हिंदू' शब्द हमारे इतिहास के गत एक सहस्त्र वर्षों के संकटपूर्ण काल से जुड़ा रहा है। पृथ्वीराज के दिनों से लेकर हमारे समस्त राष्ट्र निर्माताओं, राज्यवेत्ताओं, कवियों और इतिहासकारों ने 'हिंदू' शब्द का प्रयोग हमारे जनसमाज और धर्म को अभिहित करने के लिए किया है। गुरु गोविंदसिंह, विद्यारण्य और शिवाजी जैसे समस्त पराक्रमी स्वतंत्रता सेनानियों का स्वप्न 'हिंदूस्वराज्य' की स्थापना करना ही था। 'हिंदू' शब्द अपने साथ उन समस्त महान् जीवनों, उनके कार्यों और आकांक्षाओं की मधुर गंध समेटे हुए है। इस प्रकार यह एक ऐसा शब्द बन जाता है, जो संघरूप से हमारी एकात्मता, औदात्य और विशेष रूप से हमारे जनसमाज को व्यंजित करता है।

विकास के लक्षण

अब हम अपने हिंदू जीवन पर एक दृष्टिपात करें। जब लोग, विशेष रूप से बाहरी लोग, हमारे विश्वासों, संप्रदायों, जातियों, भाषाओं, रीतिरिवाजों एवं स्वभावगत विविधताओं के बाहुल्य को देखते हैं तो वे भ्रम में पड़ जाते हैं और कह उठते हैं कि 'इन सब भाँति भाँति के तत्वों तथा असंगत स्वरों से युक्त समूह को किस प्रकार एक समाज कहा जा सकता है? कहाँ है एक जीवन पद्धति जिसे तुम 'हिंदू' कहते हो।'

एकम् सत् विप्रा: बहुधा वदन्ति

हमारे लचीले धर्म के स्वरूप की जो प्रथम नैसर्गिक विशेषता बाहरी व्यक्ति की दृष्टि में आती है, वह है पंथ एवं उपपंथों की आश्चर्यजनक विविधता। यथा शैव, वैष्णव, शाक्त, वैदिक, बौद्ध, जैन, सिख, लिंगायत, आर्यसमाज आदि। इन सभी उपासनाओं के महान आचार्यों एवं प्रवर्तकों ने उपासना के विचित्र रूपों की स्थापना हमारे लोक मस्तिष्क की विविध योग्यताओं की अनुकूलता का ध्यान रखकर ही की है। किन्तु अंतिम निष्कर्ष के रूप में सभी ने इस एक चरम सत्य को लक्ष्य के रूप में प्राप्त करने के लिए कहा है, जिसे ब्रह्म, आत्मा, शिव, विष्णु, ईश्वर अथवा शून्य या महाशून्य तक के विविध नामों से पुकारा जाता है। देखिए, यह श्लोक किस सुंदरता से हिंदूदर्शन के विविध पंथों में स्वरैक्य एवं एकत्व का समावेश करता है।

यं शैवा: समुपासते शिव इति ब्रह्मेति वेदान्तिनो
बौद्धा बुद्ध इति प्रमाणपटव: कर्तेति नैयायिका:।
अर्हन्नित्यथ जैनशासनरता: कर्मेति मीमांसका:
सोऽयं वो विदधातु वांछतफलं त्रैलोक्यनाथो हरि:।
(रामभक्त हनुमान, हनुमन्नाटकम् अंक 1:3)

(वह, जिसकी उपासना शैव 'शिव' मानकर करते हैं; वेदांती, जिसे 'ब्रह्म' मानकर उपासते हैं, बौद्ध, जिसे 'बुद्ध' और तर्कपटु नैयायिक 'कृष्ण' मानकर आराधना करते हैं एवं जैन लोग, जिसे 'अर्हत्' मानकर तथा मीमांसक, जिसे कर्म बताकर उपासना करते हैं, वहीं 'त्रिलोकीनाथ हरि' हमारी इच्छाओं को पूरा करें।) ▪ **(विचार नवनीत से)**

वासुदेव बलवंत फड़के
जिनके नाम से अंग्रेज काँपते थे

ब्रिटिश शासन की प्रताड़ना, अत्याचार तथा भारत माता को स्वतंत्र कराने की स्वराज की स्थापना की जोत देश में सुलग रही थी। स्वतंत्रता प्राप्त करने के महायज्ञ में असंख्य देशभक्तों ने प्राणों को हंसते-हंसते न्योछावर कर दिया। कई समाज,कई संस्कृति अपनी जमीन को छोड़ कर के दर-दर भटकने को मजबूर हो गई तथा अपने-अपने प्रकार से देश को स्वतंत्रता दिलाने की जिद ठान ली। कई वीर ऐसे भी हैं, जिनका योगदान अद्वितीय है, पर वह इतिहासकारों की पुस्तकों में या स्वतंत्रता के आंदोलन की चर्चाओं में कम ही याद किए जाते हैं।

वीर सावरकर ने लिखा है ''जिन लोगों में कुछ और करने का साहस अथवा सामर्थ्य नहीं था,पर अपने इष्ट देवता की पूजा करते समय इतनी प्रार्थना भर की हो कि मेरी मातृभूमि स्वतंत्र कर दो'' उनका भी स्वतंत्रता प्राप्ति में स्थान है।

ए सर्वे ऑफ इंडियन हिस्ट्री में सरदार पणिकर ने लिखा है ''सब का एक ही और समान उद्देश्य था- ब्रिटिशों को देश से बाहर निकाल कर राष्ट्रीय स्वतंत्रता प्राप्त करना। इस दृष्टि से उसे विद्रोह नहीं कह सकेंगे। वह एक महान राष्ट्रीय उत्थान था।'' ऐसे ही एक महान वीर,महान क्रांतिकारी भारत माता के सपूत वासुदेव बलवंत फड़के थे जिन्होंने कहा ''हे हिंदुस्तान वासियों- मैं भी दधीचि के समान मृत्यु को स्वीकार क्यों ना करूं? अपने आत्मसमर्पण से आपको गुलामी व दुख से मुक्त करने का प्रयास क्यों ना करूं? आप सब को अंतिम प्रणाम करता हूं।'' नवंबर 1879 में प्रकाशित अमृत बाजार पत्रिका ने लिखा था- वासुदेव बलवंत फड़के में वह सब महान विभूतियां थीं जो संसार में महत्वपूर्ण कार्य सिद्धि के लिए भेजी जाती हैं। वे देवदूत थे। उनके व्यक्तित्व की ऊंचाई सामान्य मानव के मुकाबले सतपुड़ा व हिमालय से तुलना जैसी अनुभव होगी।

4 नवंबर 1845 को महाराष्ट्र के रायगढ़ जिले के शिरढोणे गांव में जन्मे वासुदेव बलवंत फड़के भारत के स्वतंत्रता संग्राम के क्रांतिकारी थे, जिन्हें आदि क्रांतिकारी कहा जाता है। उन्होंने गुलामी से मुक्ति के लिए, स्वतंत्रता प्राप्ति के लिए सशस्त्र मार्ग का चयन किया था। अंग्रेजों के विरुद्ध विद्रोह करने के लिए लोगों में क्रांति का संचार किया। महाराष्ट्र की कोली, भील तथा धांगड़ जातियों को अपने साथ लेकर ''रामोशी'' नाम से संगठन बनाया जिसका उद्देश्य क्रांति था। स्वतंत्रता संग्राम के लिए आवश्यक धन की व्यवस्था के लिए अंग्रेज साहूकारों को लूटने से कोई परहेज नहीं की। क्रांति के माध्यम से सफलता तो इस तरह हासिल की कि अंग्रेजों से पुणे नगर को कुछ समय के लिए अपने नियंत्रण में भी लिया था। भारतीय जनमानस में संघर्ष की चिंगारी फैलाने में सफलता हासिल करी।

श्री फड़के की प्रारंभिक शिक्षा कल्याण और पुणे में हुई। प्रारंभ से ही श्री फड़के तेजस्वी और बहादुर थे। श्री फड़के जी के पिताजी चाहते थे कि वासुदेव व्यापारी की दुकान पर नौकरी करें। लेकिन श्री फड़के के दिल में तो कुछ और ही था। पिता से असहमत होकर वे मुंबई आ गए, फिर उन्होंने 15 वर्ष तक पुणे के मिलिट्री एकाउंट्स डिपार्टमेंट में नौकरी की, यहां उनका संपर्क अन्य स्वतंत्रता संग्राम सेनानियों से हुआ। श्री महादेव गोविंद रानाडे जी का उन पर खास प्रभाव पड़ा। जंगलों को हथियार चलाने का अभ्यास स्थल बनाया, ज्योतिबा फुले और लोकमान्य तिलक उनके साथी थे। 1871 में एक शाम को एक तार से संदेश मिला जिसमें लिखा था 'वासु तुम शीघ्र ही घर आ जाओ,नहीं तो मां के दर्शन भी शायद ना हो सकेंगे'। तार के समाचार से परेशान व विचलित होकर वासुदेव अंग्रेज अधिकारी के पास अवकाश मांगने गए पर अंग्रेज अधिकारी ने उन्हें अपमानित कर अवकाश की स्वीकृति नहीं दी। प्रार्थना पत्र अस्वीकार होने के बावजूद भी श्री फड़के जी अपने गांव चले आए,पर तब तक देर हो चुकी थी, मां स्वर्ग सिधार चुकी थी। इस घटना ने वासुदेव बलवंत फड़के जी के मन को भीतर तक झकझोर के रख दिया, उन्होंने अंग्रेजों की नौकरी से अपना नाता तोड़ दिया। स्वतंत्रता संग्राम सेनानियों के साथ मिलकर अंग्रेजी हुकूमत के खिलाफ विद्रोह की तैयारी शुरू कर दी और सहयोग ना मिलने पर शिवाजी को अपना पथ प्रदर्शक मानकर आदिवासियों के साथ सेना का गठन करना प्रारंभ किया। 1879 मे अंग्रेजी शासन के विरुद्ध विद्रोह की घोषणा कर दी, महाराष्ट्र के कई जिलों में फड़के जी की सेना का प्रभाव फैल गया। क्रांतिकारी गतिविधियों से अंग्रेज भयभीत हुए। श्री फड़के के नाम से अंग्रेज थर-थर कांपते थे। 13 मई 1879 को अंग्रेज एक विश्रामगृह में इकट्ठे हुए तथा श्री फड़के के डर के कारण बैठक कर रहे थे, इसी समय अर्धरात्रि में श्री फड़के जी भी वहां आ गए, उन्होंने अंग्रेज अफसरों को खूब मारा फिर भवन में आग लगा दी। इस घटना से अंग्रेज सरकार डर गई और उसने श्री फड़के को जिंदा या मुर्दा पकड़ने पर 50000 रूपये के इनाम की घोषणा करी। श्री फड़के जी ने भी अंग्रेज सरकार को जवाब देने में देरी नहीं करी और अगले ही दिन स्वयं के हस्ताक्षर के साथ मुंबई में एक इश्तेहार लगा दिया कि जो कोई भी अंग्रेज अफसर 'रिचर्ड' का सिर लाएगा उसे 75000 रूपये का ईनाम दिया जाएगा। इससे अंग्रेज तिलमिला उठे। अंग्रेज सेना बार-बार प्रयास करती पर श्री फड़के की सेना से प्रत्युत्तर पीछे हटने को मजबूर कर देता था। 20 जुलाई 1879 को बीमार श्री फड़के मंदिर में विश्राम कर रहे थे, इसकी खबर ब्रिटिश अफसर को मिल गई उसने श्री फड़के को गिरफ्तार कर उनके खिलाफ राष्ट्रद्रोह का मुकदमा चलाया और फांसी की सजा सुनाई।

उस वक्त के प्रसिद्ध व योग्य वकील श्री महादेव आप्टे ने उनकी पैरवी करी और फांसी की सजा को काला पानी की सजा में बदलवाने में सफलता हासिल करी। कालापानी की सजा के लिए श्री फड़के को अंडमान जेल भेज दिया गया। 17 फरवरी 1883 कालापानी की सजा काटते हुए भारत माता का वीर सपूत शहीद हो गया। भारत सरकार ने श्री फड़के जी के सम्मान में डाक टिकट जारी किया। दक्षिण मुंबई में श्री फड़के जी की स्थापित मूर्ति इस अमर शहीद की प्रेरणा को आज भी दिल और दिमाग में ताजा कर देती है। महान क्रांतिकारी सपूत को कोटि-कोटि नमन्, ऐसे वीर सपूत चर्चा में भले ही कम आते हों पर उनका स्वतंत्रता संग्राम में योगदान अद्वितीय, अविस्मरणीय है तथा इनका नाम सदैव सम्मान के साथ लिया जाता रहेगा। इतिहास में ऐसी प्रेरणादायक विभूतियां भारतीयों का सम्मान गर्व से ऊंचा करती हैं। ▪

राष्ट्र जीवन की समस्याएँ

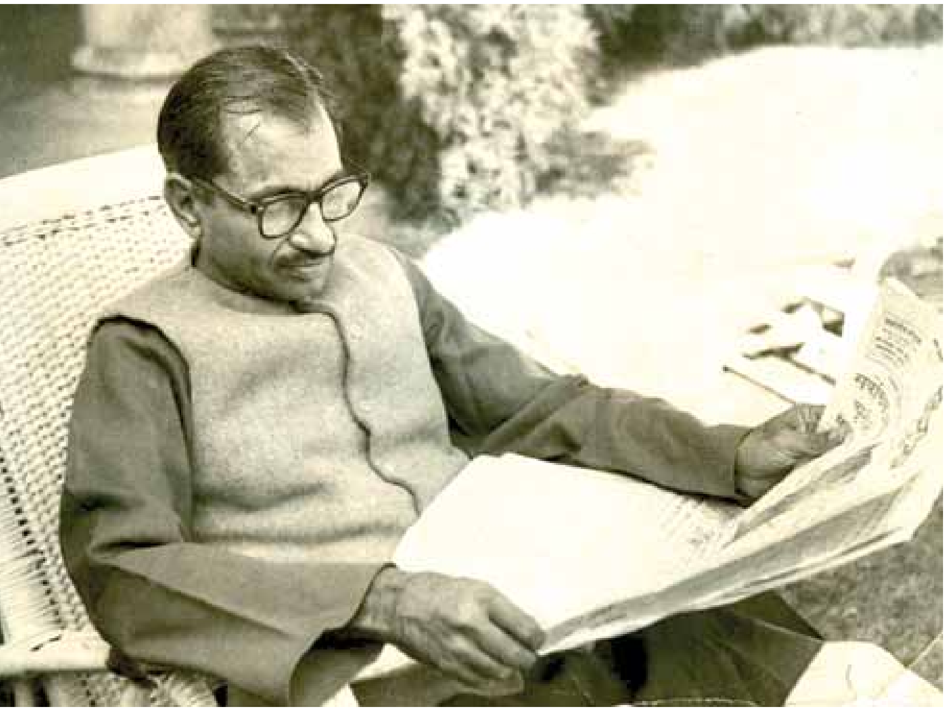

अर्थवादी यदि एकदम उद्योगों का राष्ट्रीयकरण अथवा बिना मुआवजा दिए जमींदारी उन्मूलन चाहता है तो राजनीतिवादी अपने राजनीतिक कारणों से ऐसा करने में असमर्थ है। उसके लिए इस प्रकार संस्कृति एवं मजहब का भी मूल्य अपनी राजनीति के लिए ही है, अन्यथा नहीं।

पं. दीनदयाल उपाध्याय

भारत में एक ही संस्कृति है; एक से अधिक संस्कृतियों का नारा देश के टुकड़े-टुकड़े करके हमारे जीवन का विनाश कर देगा। अतः आज लीग का द्विसंस्कृतिवाद, कांग्रेस का प्रच्छन्न द्विसंस्कृतिवाद तथा साम्यवादियों का बहुसंस्कृतिवाद नहीं चल सकता। आज तक एक संस्कृतिवाद को संप्रदायवाद कहकर ठुकराया गया किंतु अब कांग्रेस के विद्वान भी अपनी गलती समझकर इस एक संस्कृतिवाद को अपना रहे हैं। इसी भावना और विचार से भारत की एकता तथा अखंडता बनी रह सकती है तथा तभी हम अपनी संपूर्ण समस्याओं को सुलझा सकते हैं। मनुष्य की अनेक जन्मजात प्रवृत्तियों के समान वह देशभक्ति की भावना को भी स्वभाव से ही प्राप्त करता है। परिस्थितियाँ एवं वातावरण के दबाव से किसी व्यक्ति में यह प्रवृत्ति सुप्त होकर विलीन प्राय हो जाती है। इस प्रकार विकसित देशप्रेम के व्यक्ति अपने कार्यकलापों की प्रेरणा अस्पष्ट एवं क्षीण भावना से न पाकर अपने स्वप्नों के अनुसार अपने देश का निर्माण करने की प्रबल ध्येय वादिता से पाते हैं। भारत में भी प्रत्येक देशभक्त के सम्मुख इस प्रकार का एक ध्येयपथ है तथा वह समझता है कि अपने पथ पर चलाकर ही वह देश को उन्नत बना सकेगा। आज यह ध्येय पथ यदि एक ही होता तथा सब देशभक्तों के आदर्श भारत का स्वरूप भी एक ही होता तब तो किसी भी प्रकार के विवाद का संघर्ष का प्रश्न नहीं था। किंतु वस्तुस्थिति यह है कि आज भिन्न-भिन्न मार्गों से लोग देश को आगे ले जाना चाहते हैं तथा प्रत्येक का विश्वास है कि उसी का मार्ग सही मार्ग है। अतः हमको इन मार्गों का विश्लेषण करना होगा और उसी समय हम प्रत्येक की वास्तविकता को भी समझ सकेंगे।

चार प्रमुख मार्ग

इन मार्गों को देखते हुए हमें चार प्रधान वर्ग दिखाई देते हैं अर्थवादी, राजनीतिवादी, मतवादी तथा संस्कृतिवादी।

अर्थवादी

पहला वर्ग, अर्थवादी संपत्ति को ही सर्वस्व समझता है तथा उसके स्वामित्व एवं वितरण में ही सब प्रकार की दुरवस्था की जड़ मानकर उसमें सुधार करना ही अपना एकमेव कर्तव्य समझता है। उसका एकमेव लक्ष्य अर्थ है। साम्यवादी एवं समाजवादी इस वर्ग के लोग हैं। इनके अनुसार भारत की राजनीति का निर्धारण अर्थनीति के आधार पर होना चाहिए तथा संस्कृति एवं मत को वे गौण समझकर अधिक महत्व देने को तैयार नहीं हैं।

राजनीतिवादी

दूसरा वर्ग है। यह जीवन का संपूर्ण महत्व राजनीतिक प्रमुख प्राप्त करने में ही समझता है तथा राजनीतिक दृष्टि से ही संस्कृति, मजहब तथा अर्थनीति की व्याख्या करता है। अर्थवादी यदि एकदम उद्योगों का राष्ट्रीयकरण अथवा बिना मुआवजा दिए जमींदारी उन्मूलन चाहता है तो राजनीतिवादी अपने राजनीतिक कारणों से ऐसा करने में असमर्थ है। उसके लिए इस प्रकार संस्कृति एवं मजहब का भी मूल्य अपनी राजनीति के लिए ही है, अन्यथा नहीं। इस वर्ग के अधिकांश लोग कांग्रेस में हैं जो आज भारत की राजनीतिक बागडोर सँभाले हुए हैं।

मतवादी

तीसरा वर्ग, मजहब परस्त या मतवादी है। इसे धर्मनिष्ठ कहना ठीक नहीं होगा, क्योंकि

धर्म मजहब या मत से बड़ा तथा विशाल है। यह वर्ग अपने-अपने मजहब के सिद्धांतों के अनुसार ही देश की राजनीति अथवा अर्थनीति को चलाना चाहता है। इस प्रकार का वर्ग मुल्ला मौलवियों अथवा रूढ़िवादी कट्टरपंथियों के रूप में अब भी थोड़ा बहुत विद्यमान है, यद्यपि आजकल उसका बहुत प्रभाव नहीं रह गया है।

संस्कृतिवादी

चौथा वर्ग है। इसका विश्वास है कि भारत की आत्मा का स्वरूप प्रमुखतया संस्कृति ही है। अतः अपनी संस्कृति की रक्षा एवं विकास ही हमारा कर्तव्य होना चाहिए। यदि हमारा सांस्कृतिक ह्रास हो गया तथा हमने पश्चिम के अर्थ प्रधान अथवा भोग प्रधान जीवन को अपना लिया तो हम निश्चित ही समाप्त हो जाएँगे। यह वर्ग भारत में बहुत बड़ा है। इसके लोग राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ में तथा कुछ अंशों में कांग्रेस में भी हैं। कांग्रेस के ऐसे लोग राजनीति को केवल संस्कृति का पोषक मात्र ही मानते हैं, संस्कृति का निर्णायक नहीं। हिंदीवादी सब लोग इसी वर्ग के हैं।

मार्गों की प्राचीनता

उपर्युक्त चार वर्गों की विवेचना में यद्यपि हमने आधुनिक शब्दों का प्रयोग किया है। किंतु प्राचीन काल में भी ये चार प्रवृत्तियाँ उपस्थित थीं तथा इनमें से एक प्रवृत्ति को ही अपनाकर हमने अपने जीवन के आदर्श का मानदंड बनाया है। धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष ही ये चार प्रवृत्तियाँ हैं। धर्म संस्कृति का, अर्थ नैतिक वैभव का, काम राजनीतिक आकांक्षाओं का तथा मोक्ष पारलौकिक उन्नति का द्योतक था। इनमें से हमने धर्म को ही अपने जीवन का अंग बनाया है क्योंकि उसके द्वारा ही हमने शेष सबको सधते हुए देखा है। इसीलिए जब महाभारत काल में धर्म की अवहेलना होनी प्रारंभ हुई, तब महर्षि व्यास ने कहा

ऊर्ध्वबाहुर्विरोयेष न च कश्चिच्छणोति मे। धर्मादर्थश्च कामश्च स धर्मः किं न सेव्यते।।

अर्थ और काम की ही नहीं, मोक्ष की भी प्राप्ति धर्म से होती है, इसलिए धर्म की व्याख्या करते हुए कहा है कि यतोऽयुदयनिः श्रेयस सिद्धिः स धर्मः। जिससे ऐहिक संतान एक है और उसको इस एकता का अनुभव करते हुए रहना चाहिए। अनेक अंगों को इकट्ठा करके शरीर की सृष्टि नहीं होती किंतु शरीर के अनेक अंग होते हैं और इसलिए प्रत्येक अवयव अपने स्वतंत्र अस्तित्व के लिए नहीं अपितु शरीर के अस्तित्व के लिए प्रयत्न करता है। इसी प्रकार राष्ट्र के सभी अंगों को अपनी रूपरेखा राष्ट्रीय स्वरूप और हितों के अनुकूल बनानी चाहिए न कि राष्ट्र को ही इन अंगों के अनुसार काटा छाँटा जाए। संप्रदायों, प्रांतों, भाषाओं और वर्गों का तभी तक मूल्य है जब तक वे राष्ट्र हितों के अनुकूल हैं अन्यथा उनका बलिदान करके भी राष्ट्र की एकता की रक्षा करनी होगी। प्रथम दृष्टिकोण में अनेक को सत्य मानकर एक की कल्पना का प्रयत्न है तो दूसरे में एक को सत्य मानकर अनेक उसके रूपमात्र हैं जैसे नदी के जल में आवर्त्त-विवतरंग आदि अनेक रूप होते हैं किंतु उनका अस्तित्व नदी के जल से भिन्न और स्वतंत्र नहीं और न उनके समुच्चय का ही नाम नदी है। दुःख का विषय है कि आज भी देश की बागडोर जिनके हाथ में हैं वे प्रथम दृष्टिकोण से ही समस्त समस्याओं को देखते हैं। जब तक राजनीति की इस मौलिक भूल का परिमार्जन नहीं होगा तब तक राजनीतिक भारत का निर्माण सुदृढ़ नींव पर नहीं हो सकता।

धर्म प्रधान भारतीय जीवन

भारतीय जीवन को धर्म प्रधान बनाने का प्रमुख कारण यह था कि इसी में जीवन के विकास की सबसे अधिक संभावना है। आर्थिक दृष्टिकोण वाले लोग यद्यपि आर्थिक समानता के पक्षपाती हैं, किंतु वे व्यक्ति की राजनीति एवं आत्मिक सत्ता को पूर्णतः समाप्त कर देते हैं। राजनीतिवादी प्रत्येक व्यक्ति को मतदान का अधिकार देकर उसके राजनीतिक व्यक्तित्व की रक्षा तो अवश्य करते हैं किंतु आर्थिक एवं आत्मिक दृष्टि से वे भी अधिक विचार नहीं करते। अर्थवादी यदि जीवन को भोग प्रधान बनाते हैं तो राजनीतिवादी उसको अधिकार प्रधान बना देते हैं। मतवादी बहुत कुछ अव्यावहारिक, गतिहीन एवं संकुचित हो जाते हैं। किसी-किसी व्यक्ति विशेष अथवा पुस्तक विशेष के विचारों के वे इतने गुलाम हो जाते हैं कि समय के साथ वे अपने आपको नहीं रख पाते तथा इस प्रकार पूर्णतः नष्ट हो जाते हैं। इन सबके विपरीत संस्कृति प्रधान जीवन की यह विशेषता है कि इसमें जीवन के केवल मौलिक तत्वों पर तो जोर दिया जाता है पर शेष बाह्य बातों के संबंध में प्रत्येक को स्वतंत्रता रहती है। इसके अनुसार व्यक्ति की स्वतंत्रता का प्रत्येक क्षेत्र में विकास होता है। संस्कृति किसी काल विशेष अथवा व्यक्ति विशेष के बंधन से जकड़ी हुई नहीं है, अपितु यह तो स्वतंत्र एवं विकासशील जीवन की मौलिक प्रवृत्ति है। इस संस्कृति को ही हमने धर्म कहा है। अतः जब कहा जाता है कि भारतवर्ष धर्म प्रधान देश है तो इसका अर्थ मजहब, मत या रिलीजन नहीं, किंतु यह संस्कृति ही होता है।

भारत की विश्व को देन

हमने देखा है कि भारत की आत्मा को समझना है तो उसे राजनीति अथवा अर्थ नीति के चश्मे से न देखकर सांस्कृतिक दृष्टिकोण से ही देखना होगा। भारतीयता की अभिव्यक्ति राजनीति के द्वारा न होकर उसकी संस्कृति के द्वारा ही होगी। विश्व को भी यदि हम कुछ सिखा सकते हैं तो उसे अपनी सांस्कृतिक सहिष्णुता एवं कर्तव्य प्रधान जीवन की भावना की ही शिक्षा दे सकते हैं, राजनीति अथवा अर्थ नीति की नहीं। उसमें

तो शायद हमको उनसे ही उलटे भीख माँगनी पड़े। अर्थ, काम और मोक्ष के विपरीत धर्म की प्रमुख भावना ने भोग के स्थान पर त्याग, अधिकार के स्थान पर कर्तव्य तथा संकुचित असहिष्णुता के स्थान पर विशाल सहिष्णुता प्रकट की है। इनके साथ ही हम विश्व में गौरव के साथ खड़े हो सकते हैं।

संघर्ष का आधार

भारतीय जीवन का प्रमुख तत्व उसकी संस्कृति अथवा धर्म होने के कारण उसके इतिहास में भी जो संघर्ष हुए हैं, वे अपनी संस्कृति की सुरक्षा के लिए ही हुए हैं। तथा इसी के द्वारा हमने विश्व में ख्याति भी प्राप्त की है। हमने बड़े-बड़े साम्राज्यों के निर्माण को महत्व न देकर अपने सांस्कृतिक जीवन को पराभूत नहीं होने दिया। यदि हम अपने मध्ययुग का इतिहास देखें तो हमारा वास्तविक युद्ध अपनी संस्कृति के रक्षार्थ ही हुआ है। उसका राजनीतिक स्वरूप यदि कभी प्रकट भी हुआ तो उस संस्कृति की रक्षा के निमित्त ही। राणाप्रताप तथा राजपूतों का युद्ध केवल राजनीतिक स्वतंत्रता के लिए नहीं था किंतु धार्मिक स्वतंत्रता के लिए ही था। छत्रपति शिवाजी ने अपने स्वतंत्र राज्य की स्थापना गो ब्राह्मण प्रतिपालन के लिए ही की। सिख गुरुओं ने अपने युद्ध धर्म की रक्षा के लिए ही किए। इन सबका अर्थ यह नहीं समझना चाहिए कि राजनीति का कोई महत्व नहीं था तथा राजनीतिक गुलामी हमने सहर्ष स्वीकार कर ली थी, किंतु तात्पर्य यह है कि राजनीति को हमने जीवन का केवल सुख का कारण मात्र माना है, जबकि संस्कृति संपूर्ण जीवन ही है।

संस्कृतियों का संघर्ष

आज भी भारत में प्रमुख समस्या सांस्कृतिक ही है। वह भी आज दो प्रकार से उपस्थित है, प्रथम तो संस्कृति को ही भारतीय जीवन का प्रथम तत्व मानना तथा दूसरे यदि इसे मान लें तो उस संस्कृति का रूप कौन सा हो? विचार के लिए यद्यपि यह समस्या दो प्रकार की मालूम होती है, किंतु वास्तव में है एक ही। क्योंकि एक बार संस्कृति का जीवन को प्रमुख एवं आवश्यक तत्व मान लेने पर उसके स्वरूप के संबंध में झगड़ा नहीं रहता, न उसके संबंध में किसी प्रकार का मतभेद ही उत्पन्न होता है। यह मतभेद तो तब उत्पन्न होता है जब अन्य तत्वों को प्रधानता देकर संस्कृति को उसके अनुरूप उन ढाँचों में ढकने का प्रयत्न किया जाता है। इस दृष्टि से देखें तो आज भारत में एक-संस्कृतिवाद, द्वि-संस्कृतिवाद तथा बहु - संस्कृतिवाद के नाम से तीन वर्ग दिखाई देते हैं। एक-संस्कृतिवाद के पुरस्कर्ता भारत में केवल एक ही भारतीय संस्कृति का अस्तित्व मानते हैं तथा अन्य संस्कृतियों का या तो अस्तित्व ही मानने को तैयार नहीं हैं या उसके लिए आवश्यक समझते हैं कि वह भारतीय संस्कृति में विलीन हो जाए। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ तथा कांग्रेस में श्री पुरुषोत्तमदास टंडन जैसे व्यक्ति इसी एक संस्कृतिवाद के पोषक हैं।

द्वि संस्कृतिवादी

द्वि-संस्कृतिवादी दो प्रकार के हैं। एक तो स्पष्ट तथा दूसरे प्रच्छन्न। एक वर्ग भारत में स्पष्टतया दो संस्कृतियों का अस्तित्व मानता है तथा उनको बनाए रखने की माँग करता है। मुस्लिम लीग इसी मत के हैं।

ये हिंदू और मुस्लिम दो संस्कृतियों को मानते हैं तथा उनका आग्रह है कि मुसलमान अपनी संस्कृति की रक्षा अवश्य करेगा। दो संस्कृतियों के आधार पर ही उन्होंने दो राष्ट्रों का सिद्धांत सामने रखा, जिसके परिणाम को हम पिछले वर्षों में भलीभाँति अनुभव कर चुके हैं। प्रच्छन्न द्वि-संस्कृतिवादी वे लोग हैं जो स्पष्टतया तो दो संस्कृतियों का अस्तित्व नहीं मानते, भूल से एक संस्कृति एवं एक राष्ट्र का ही राग अलापते हैं, किंतु व्यवहार में दो संस्कृतियों को मानकर उनका समन्वय करने का असफल प्रयत्न करते हैं। वे ये तो मान लेते हैं कि हिंदू और मुसलमान दो संस्कृतियाँ हैं, किंतु उनको मिलाकर एक नवीन हिंदुस्तानी संस्कृति बनाना चाहते हैं। अतः हिंदी, उर्दू का प्रश्न वे हिंदुस्तानी बनाकर हल करना चाहते हैं तथा अकबर को राष्ट्र पुरुष मानकर अपने राष्ट्र के महापुरुषों के प्रश्न को हल करना चाहते हैं।

नमस्ते और सलाम मालेकुम का काम ये आदाब अर्ज से चला लेना चाहते हैं। यह वर्ग कांग्रेस में बहुमत में है। दो संस्कृतियों के मिलाने के अब तक असफल प्रयत्न हुए हैं किंतु परिणाम विघातक ही रहा है। मुख्य कारण यह है कि जिसको मुस्लिम संस्कृति के नाम से पुकारा जाता है वह किसी मजहब की संस्कृति न होकर अनेक अभारतीय संस्कृतियों का समुच्चय मात्र है। फलतः उसमें विदेशीपन है, जिसका मेल भारतीयत्व से बैठना कठिन ही नहीं, असंभव भी है। इसलिए यदि भारत में एक संस्कृति एवं एक राष्ट्र को मानना है तो वह भारतीय संस्कृति एवं भारतीय हिंदू राष्ट्र जिसके अंतर्गत मुसलमान भी आ जाते हैं, के अतिरिक्त और कोई नहीं हो सकता।

बहु संस्कृतिवादी

बहुसंस्कृतिवादी वे लोग हैं जो प्रांत की निजी संस्कृति मानते हैं तथा उस प्रांत को उस आधार पर आत्मनिर्णय का अधिकार देकर बहुत कुछ अंशों में स्वतंत्र ही मान लेते हैं। साम्यवादी एवं भाषानुसार प्रांतवादी लोग इस वर्ग के हैं। वे भारत में सभी प्रांतों में भारतीय संस्कृति की अखंड धारा का दर्शन नहीं कर पाते। ▪

(संदर्भ : राष्ट्र धर्म, शरद पूर्णिमा, वि.सं. 2006, अंक 1)

▪ मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने राष्ट्रपिता महात्मा गांधी को पुष्पांजलि अर्पित कर नमन किया।

▪ भाजपा अध्यक्ष श्री विष्णुदत्त शर्मा जी ने नेताजी सुभाषचंद्र बोस जी की जंयती पर पुष्पांजलि अर्पित कर नमन किया।

▪ मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव एवं प्रदेश अध्यक्ष श्री विष्णुदत्त शर्मा जी ने जनकल्याण अभियान के अंतर्गत कार्यक्रम में भाग लिया।

▪ मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने महू में डॉ. अंबेडकर जी की प्रतिमा पर माल्यार्पण किया।

▪ श्री विष्णुदत्त शर्मा जी, श्री कैलाश विजयवर्गीय जी एवं श्री हितानंद जी ने इंदौर में कार्यकर्ता बैठक को संबोधित किया।

▪ प्रदेश अध्यक्ष श्री विष्णुदत्त शर्मा एवं प्रदेश संगठन महामंत्री श्री हितानंद जी ने स्वामी विवेकानंद जी की प्रतिमा पर माल्यार्पण कर नमन किया।

▪ प्रदेश अध्यक्ष श्री विष्णुदत्त शर्मा जी ने गणतंत्र दिवस पर प्रदेश कार्यालय में संविधान की प्रति को नमन किया।

▪ प्रदेश संगठन महामंत्री श्री हितानंद जी ने गणतंत्र दिवस पर प्रदेश कार्यालय में संविधान की प्रति को नमन किया।

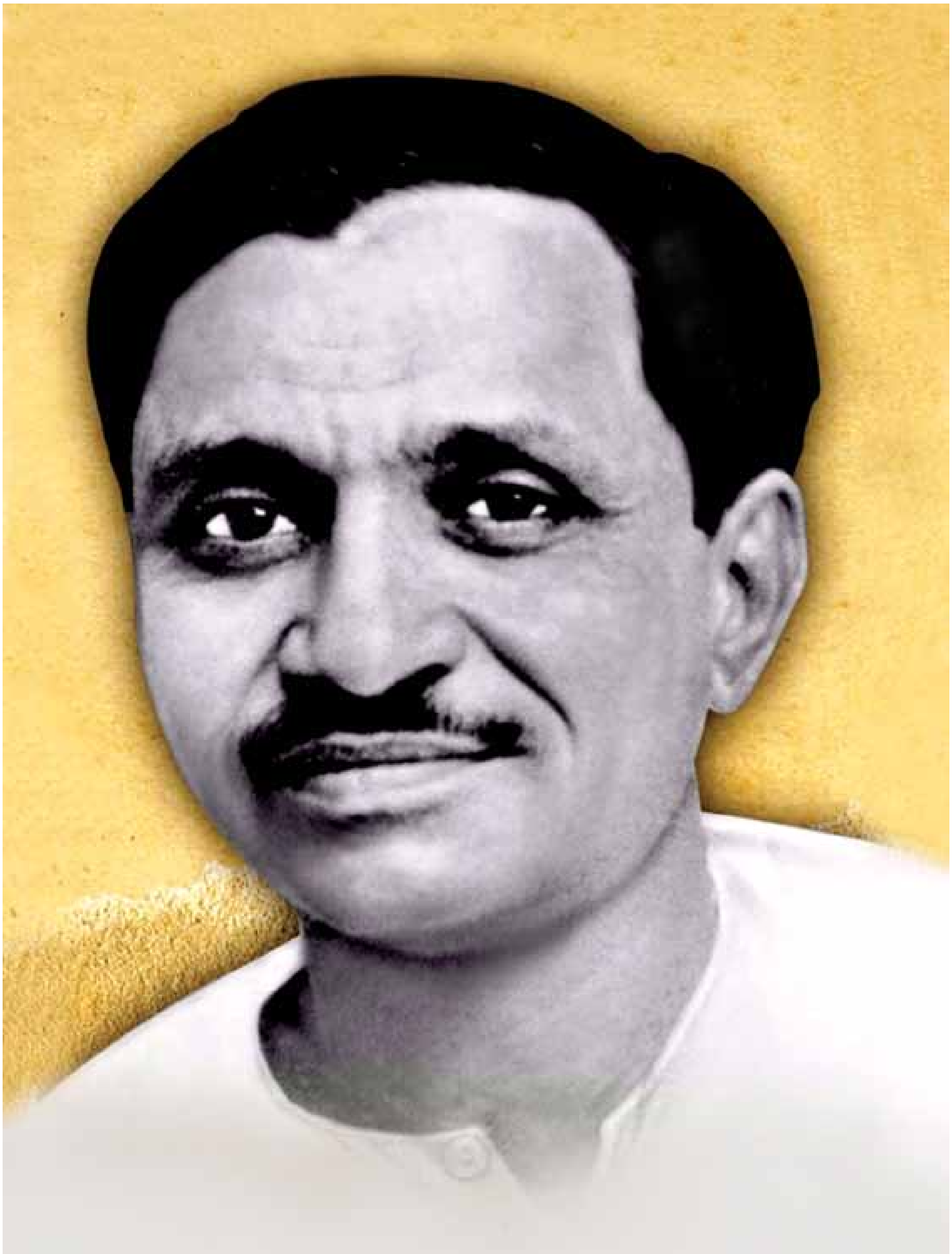

नैतिकता के सिद्धांत किसी के द्वारा बनाए नही
जाते, बल्कि खोजे जाते हैं।

प. दीनदयाल उपाध्याय